* ॐ *

अमेरिका की स्वाधीनता

का

इतिहास

लेखक—

प्रो० देवकीनंदन विभव एम्० ए० (शिकागो)

[भूतपूर्व संपादक दैनिक नवयुग, प्रेम आदि]

प्रकाशक—

उमाशंकर मेहता,

[संपादक—दंपति]

काशी

सजिल्द २॥)] सं० १९८७ [सादी २)

प्रकाशक—
उमाशंकर मेहता
संपादक-दंपति,
काशी

मुद्रक—
बाबूनन्दन प्रसाद,
सत्यनाम प्रेस, काशी

भूमिका

कोई दो घटनाएँ बिलकुल एक-सी नहीं होतीं। सब नदियों का प्रवाह एकसा होनेपर भी गतिमें भेद हुआ ही करता है। कोई पश्चिम की ओर जाती है, तो कोई पूर्वकी ओर। कोई ऊँची-नीची पार्वत्य भूमिसे महाशब्दके साथ नाचती-कूदती जाती है, तो कोई समतल मृदु भूमिमें होकर धीर गम्भीर गतिके साथ अपने लक्ष्यकी ओर अग्रसर होती है। लक्ष्य सबका एकही होता है—महासागर। देश कालके अनुसार गतिमें नाना विध परिवर्तन होते रहते हैं, नाना विध वैचित्र्य दिखाई देते हैं। सलिल-वाहिनी नदियों की जो बात है वही बात मानव प्रकृति की नदी की भी। इस नदीका लक्ष्य स्वातंत्र्य है, जो भिन्न-भिन्न देशोंमें भिन्न-भिन्न नामोंसे पुकारा जाता है और उसका स्वरूप भी भिन्न-भिन्न प्रकारसे दीख पड़ता है। पर है वस्तुतः एक ही स्वरूप-स्वतंत्रता; संसार से स्वतंत्रता अथवा संसारमें स्वतंत्रता, सांसारिक बन्धनोंसे छुटकारा अथवा संसारमें ही पर-कीय बन्धनोंसे छुटकारा। इसी स्वतंत्रतामें अत्यन्त सुखकी प्राप्ति और दुःखकी निवृत्ति का समावेश होता है। इस स्वातंत्र्य महासागरकी ओर मानव प्रकृतिकी नदियाँ भिन्न-भिन्न देशोंमें भिन्न-भिन्न गतियोंसे सतत बह रही हैं। मूलतः एक होने पर भी इनकी भी गतियोंमें वैचित्र्य दिखाई देते हैं। इसीसे कहते हैं, कोई दो घटनाएँ एक-सी नहीं होतीं।

घटनाएँ एक-सी नहीं होतीं, पर कार्य-कारण एक ही होते हैं। पार्थिव नदीमें जल है और उसका नीचे-समुद्रकी ओर जाने का स्वभाव है। घटनामयी नदीमें मन है और उसका ऊपर उठने का अर्थात् स्वातंत्र्य प्राप्त कर लेनेका स्वभाव है। संसार भरके स्वातंत्र्य युद्धों के इतिहासों का आलोचन कर देखिये तो कारण और कार्य एक ही मिलेंगे, पर घटनाओं में—गति में देशकाल-भेदके अनुसार अनेक प्रकारके भेद दिखाई देंगे। यह आलोचन जैसा मनोरंजक, वैसा ही शिक्षाप्रद है। आज इस देशमें इसकी बड़ी आवश्यकता भी है। हमारे देश में मानवस्वभाव की नदी अबतक अन्तःसलिला थी, अब उसमें बाढ़ आ गयी है। वह स्वातंत्र्य-सागर की ओर प्रबल वेग से जा रही है। ईसवी १८ वीं शताब्दी के अंतमें अमरीकामें भी यह नदी उमड़ चली थी और अंतमें महासागर का आलिंगन करके ही शांत हुई। हमारे मार्गमें ब्रिटिश साम्राज्यवाद बाधक हो रहा है, उसके मार्ग में भी वही बाधा थी। वह उस बाधाको अपने मार्गसे हटा सकी, हम भी दृढ़ता से उद्योग करते रहे, तो हटा सकेंगे। अतएव 'अमेरिका की स्वाधीनता का इतिहास' हमारे लिये इस समय शिक्षाप्रद है।

इसका आलोचन करते समय एक बात में सावधानताकी आवश्यकता है। कोई दो घटनाएँ एक सी नहीं होतीं—किन्हीं दो नदियोंकी गति एक-सी नहीं होती, इस बातका सदा स्मरण रखना चाहिये। अन्यथा भ्रम हो जानेका भय है। दोनोंके उत्पादक कारण एक हैं और उत्तेजक कारण भी एक-से ही हैं।

पर दोनों की गतियों में महदंतर है। वह हिंसा की पार्वत्य भूमिमें भयावना रूप धारण करके महाशब्द और प्रखर गतिसे विघ्न-बाधाओं को तोड़ती—चूर करती जा रही थी; यह अहिंसाकी समतल भूमिमें धीर गम्भीर गतिसे विघ्न-बाधाओं को आत्मत्याग-सलिल में डुबाती हुई लक्ष्याभिमुख जा रही है। भूमिकाके इस भेदके कारण साधनोंका भेद भी उपस्थित हो गया है, और इस भेदकी रक्षा करते हुए ही आगे बढ़ने में हमारा कल्याण है। प्रस्तुत पुस्तकके लेखकने बड़ी कुशलताके साथ दोनोंका स्वरूप साम्य स्थान-स्थान पर दिखा दिया है, पर विषयान्तर होने के कारण गतिभेद—मार्गभेद—साधनभेद दिखानेका उपयुक्त अवसर वहाँ न मिल सका, इसीसे इस जगह उसे विशेष रूपसे स्पष्ट कर दिया है। दोनों इतिहास—घटनाओंके इस प्रकृति-साम्य और गति-भेदको समझ कर जो सज्जन अमरीकाकी स्वाधीनताकी घटनाओंका अध्ययन करेंगे वे निःसन्देह बहुत लाभ उठा सकेंगे। इस पुस्तककी इस समय बड़ी आवश्यकता थी। इसे पूर्ण करनेके लिये हम लेखक और प्रकाशक को धन्यवाद देकर भूमिका भेद दिखानेवाली इस भूमिकाको समाप्त करते हैं।

काशी,
सौर ५ मार्गशीर्ष, १९८७ वै० } बाबूराव विष्णु पराड़कर

लेखक का वक्तव्य

इतिहास साहित्य का मुख्य अङ्ग है। हमें एक राष्ट्र के इतिहास से उसकी गत घटनाओं का क्रम ही मालूम नहीं होता, वरन् उससे हम उस राष्ट्र की योग्यता-अयोग्यता, सफलता-असफलता के कारणों को खोज सकते हैं और समझ सकते हैं। इतिहास एक क्रियात्मक राजनीति है, जिसकी दृढ़ शिला गत शताब्दियों के भिन्न-भिन्न अनुभवों पर स्थापित की गई है और राष्ट्र के भावी सफल विकास के लिये हम इन-कार्य और कारणों-बहुमूल्य अनुभवों की किसी तरह अवहेलना नहीं कर सकते।

इतिहास में भी उस अङ्ग का विशेष स्थान होता है, जब देश में राज्य-क्रान्ति अथवा कोई विशेष उथल-पुथल होती है, क्योंकि उस समय शताब्दियों से इकट्ठे हुए कारण एक दम ऊपरी सतह में आकर प्रत्यक्ष दीखने लगते हैं, राष्ट्र की सारी शक्तियाँ केन्द्रित हो जाती हैं और उसके अनेक अङ्ग, जिनका अध्ययन शान्ति के समय में नहीं हो सकता, अब स्पष्ट हो जाते हैं। इसी समय हमें राष्ट्र की मूलाधार शक्ति और गुण-अवगुणों का ज्ञान हो सकता है। क्या महायुद्ध की घटनाओं ने योरप की शक्ति और सभ्यता की अनेक गुप्त बातों को हमारे सामने खोलकर नहीं रख दिया?

एक राज्य-क्रान्ति का मूल्य इसलिये भी अधिक है, क्योंकि वह उस राष्ट्र के आगामी इतिहास का निर्माण करती है और दूसरे राष्ट्रों के घटना-क्रम को भी प्रभान्वित करती है। क्या फ्रांस की राज्य-क्रान्ति ने

योरप के इतिहास को ही नहीं बदल दिया? फ्रांस में राज–तन्त्र वाद का अंतिम दाह-कर्म हो रहा था, पर उसकी चिनगारियाँ उड़कर सारे योरप बादशाहों और स्वेच्छाचारी शासकों के सिराने नई-नई धूनियाँ सुलगा रहीं थीं। फ्रांस की राज्य-क्रान्ति से उत्पन्न नवीन विचारों ने ही इटली की क्रान्ति और स्वाधीनता–संग्राम को गति दी थी। यदि योरप के इतिहास में फ्रांस की राज्यक्रांति की घटना न होती, तो किसे मालूम है, आज वहाँ प्रजातन्त्र की जगह राजतंत्र का बाहुल्य न होता और वहाँ का घटना-क्रम एक भिन्न ही दिशा की ओर न बढ़ रहा होता, परन्तु फ्रांस की राज्य–क्रांति को भी गति देने वाली अमरीका की राज्य–क्रांति थी। अमरीका के क्रांति-कारियों के सहयोग के लिये फ्रांस के चौदहवें लुई ने जो फ्रांसीसी सेनाएँ भेजी थीं, वे वहाँ सफलता प्राप्त करने के बाद नवीन विचारों को लेकर घर लौटीं। रूसो और अन्य क्रांतिकारी फ्रांसीसी लेखकों के विचारों को कार्यरूप में लाने में यही अमरीका से लौटे हुए सैनिक सबसे अग्रसर थे। इसलिये अमरीका की राज्य–क्रांति संसार की घटनाओं में–से एक अत्यंत मुख्य घटना है।

संसार के वक्षस्थल पर एक और नवीन क्रान्ति का ताण्डव-नृत्य हो रहा है, वह है भारतवर्ष की अहिंसात्मक क्रान्ति। हम जब उसके कार्य और कारणों को देखते हैं और उन्हें अमरीका के घटनाक्रम से मिलाते हैं, तो हमें पग-पग पर उसकी समता को देखकर आश्चर्य होता है और सबसे अधिक आश्चर्य तो हमें उन पार्लियामेंट के सदस्य अंगरेज राजनीति-विशारदों की बुद्धि पर, जिनके हाथ में वहाँ के शासन की बागडोर है, होता है कि वे इतिहास की इन घटनाओं क

इतनी शीघ्र भूलकर उनकी, जिनके कारण उनके हाथ से अमरीका जैसा देश निकल चुका है, पुनरावृति फिर भारतवर्ष में किस तरह कर सकते हैं। अमरीका में जिस नीति के कारण वाशिंगटन जैसा राज-भक्त मनुष्य विद्रोह करने के लिये विवश हो गया, उसी ने हिन्दुस्तान में महात्मा गांधी और मोतीलाल नेहरू-जैसे अंगरेज-प्रिय मनुष्यों को भारत-सरकार की दाद देने के स्थान में उसके ही विरुद्ध क्राँति की पताका उठाने को विवश कर दिया।

अमरीका और भारतवर्ष की क्राँतियों की जड़ में मूल कारण एक है, भारतवर्ष की तरह अमरीका भी इंगलैंड की व्यवसायिक 'लूटमार' नीति और स्वेच्छाचारी शासन के विरुद्ध विद्रोह करने के लिये धीरे-धीरे विवश कर दिया गया था। इस विद्रोह के प्रारम्भिक और अंतिम रूप का यदि हम मिलान करें, तो हमको यह अनुभव हुए बगैर न रहेगा कि इंगलैंड के अदूरदर्शी राजनीतिज्ञों ने अपनी 'शान और झूठी प्रतिष्ठा' के लिये राज-भक्त और शांति-प्रिय प्रजा को किस तरह विद्रोही और इंगलैंड का दुश्मन बना दिया और किस तरह उनकी छोटी-छोटी माँगों ने ठुकराए जाने पर पूर्ण स्वतंत्रता का रूप धारण कर लिया। अमरीका ने जब पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा की, तो उस समय जान एडम्स ने लिखा है-"मैं जब सन् १७६१ की ओर देखता हूँ और जब मुझे न्यायालय में रिट्स आफ़ एसिस्टेंस संबंधी बहस याद आती है और उसके बाद के सभी राजनीतिक घटनाक्रमों-कारणों और परिणाम की शृंखला-पर विचार करता हूँ, तो मुझे इस क्राँति की आस्मिकता और महानता पर आश्चर्य

होता है। ग्रेटब्रिटेन की नीति मूर्खता-पूर्ण और अमरीका की बुद्धिमता पूर्ण है।'

भारतीय कांग्रेस और अन्य संस्थाओं के प्रार्थनापत्रों की तरह जार्ज-तृतीय और उसका मंत्रि-मंडल अमरीका के भी प्रार्थना-पत्र रद्दी की टोकरी में डाल देते थे। राष्ट्रीय माँगों का उत्तर लार्ड इर्विन के आर्डिनेंसों की तरह नये-नये दमनकारी क़ानून पास करके दिया जाता था। पिट और बर्क जैसे दो चार न्याय-पसंद अंग्रेजों की चेतावनियाँ ठुकरा दी जाती थी और 'शांति और व्यवस्था' के नाम पर अन्याय पर अन्याय होते थे।

अंगरेज व्यवसायियों ने अमरीका में एक जाल-सा पूर दिया था और इंगलैंड ने उनके हित के लिये अमरीका में ऐसे-ऐसे क़ानून बना दिए थे, जिससे वहाँ किसी तरह के उद्योग-धंधों का जन्म ही न हो सके। अमरीका में ढेरों ऊन तैयार होता था, पर उसका वे अपने ही देश में कपड़ा नहीं बना सकते थे, यही हाल लोहा और दूसरी चीज़ों का भी था। ब्रिटिश पार्लियामेंट को बिना अमरीकनों से पूछे ही क़ानून बनाने का अधिकार था और वह अंगरेज व्यापार की रक्षा के लिये ऐसे-ऐसे क़ानून और टैक्स निश्चित कर देती थी कि अमरीकावासी अच्छी तरह समझ गए कि जब तक ऐसे क़ानून बनाने की शक्ति पर अमरीका की लोकसत्ता का अंकुश न होगा, तब तक उनका उद्धार असंभव है और इस बात का आंदोलन करने लगे कि अपने लिये क़ानून बनाने का अधिकार उनके हाथ में होना चाहिए, न कि हजारों कोस दूर बैठी हुई ब्रिटिश पार्लियामेंट के हाथ में।

अमरीका की राजनीतिक माँगों का उत्तर उसी तरह दिया गया, जिस तरह भारतवर्ष में दिया जा रहा है। अमरीकन कांग्रेस ग़ैरक़ानूनी संस्था क़रार दे दी गई, सभाएँ और जलूस निकालना मना कर दिया गया और कई जगह जनता पर गोलियों की वर्षा हुई, पर भयंकर दमन से भी अंगरेजों के व्यापार की रक्षा न हो सकी। अमरीकनों ने क्षुब्ध होकर भीषण बहिष्कार-आंदोलन प्रारंभ कर दिया, इंगलैंड की हर-एक बनी हुई चीज़ का बहिष्कार कर दिया गया, स्त्रियों ने चर्खा कात-कात कर देश की कपड़े की आवश्यकता पूरी की और लोगों ने महीन और बढ़िया कपड़े का मोह छोड़कर हाथ के कते और हाथ के बिने कपड़े का व्यवहार किया। चाय, खाने के पदार्थ, फैंसी चीज़ें-जो अंगरेज व्यवसायी अमरीका में पहुँचाते थे, उनको लेनेवाला कोई नसीब न हुआ। इस बहिष्कार का ऐसा प्रभाव पड़ा कि थोड़े ही समय में इंगलैंड को तीस लाख पौंड की हानि हुई और इंगलैंड के बहुत-से व्यापारियों और कारख़ानों के यहाँ ताले पड़ गये।

भारतवर्ष की तरह अमरीका ने अहिंसा का व्रत नहीं लिया था, इसलिये धीरे-धीरे ब्रिटिश पार्लियामेंट के स्वेच्छाचार और अन्यायों के कारण जो आंदोलन पहले केवल बहिष्कार, सभाओं और जलूसों तक ही परिमित था, धीरे-धीरे रक्तपात और नर-संहार में परिणित हो गया। जलियान वाला बाग़-हत्याकांड की तरह लेक्सिंगटन-हत्याकांड से अमरीकावासियों का ख़ून उबल पड़ा और उन थोड़े से व्यक्तियों के रक्त ने आगे चलकर इतिहास के वे पृष्ट लिखे, जो इंगलैंड और अमरीका के इतिहास का सबसे कड़ुवा अङ्ग है। भारतवर्ष

आध्यात्मिक देश है और महात्मा गांधी ईसा की तरह अहिंसा और प्रेम का सबसे बड़ा पुजारी है, आज भारतवर्ष उसकी आत्मा से ही प्रभान्वित होकर जलियान वाला बाग़ का उत्तर जिस प्रकार दूसरों का ख़ून नहीं अपना रक्त बहाकर-दे रहा है, वह भारतवासियों के लिये गौरवपूर्ण है।

भारतवर्ष की तरह अमरीकनों के सामने भी कठिनाइयाँ और मत-भेद थे और अंग्रेज उनका ख़ूब बढ़ा चढ़ा कर ख़ाका बाँधते थे। अमरीका में भी अनेक जातियाँ, अनेक मत और अनेक रियासतें थीं, जो एक-दूसरे से भिन्न और विभक्त थी। अंग्रेज़ और टोरी समाचार-पत्र कहते कि जिस दिन अँग्रेज सेनाएँ अमरीका से चली जावेंगी उसी दिन अमरीका सदा के लिये रक्तपात में डूब जायगा, एक रियासत दूसरी रियासत पर टूट पड़ेगी और धार्मिक मत-भेद का घोर वितंडावाद खड़ा हो जायगा। अंग्रेज और टोरी समाचार-पत्र और राजनीति पंडित तो ऐसा कहते ही थे, अनेक देशभक्तों के हृदय में भी ऐसी ही कुछ गुप-चुप पीड़ा हुआ करती थी, पर इतिहास साक्षी है कि स्वतंत्रता मिलने के बाद न तो वहाँ उन मतभेदों को लेकर रक्तपात ही हुआ और न 'शांति और व्यवस्था' ही को कोई धक्का पहुँचा।

हम अमरीका और भारतीय आंदोलन की समानता को कहाँ तक लिखेंगे, पाठकों को स्वयं प्रत्येक पृष्ट पर इसका अनुभव होगा।

इतिहास-लेखक की स्थिति से जहाँ तक संभव हो सका है, हमने

इस पुस्तक में पक्षपात-शून्य दृष्टि से काम लेनी की कोशिश की है। एक भी ऐसी बात नहीं लिखी, जिसे हम बड़े-से-बड़े अंगरेज और अमरीकन इतिहास-लेखक से समर्थन न करा सकें। यदि पुस्तक पढ़ने से इंगलैंड की नीति की निन्दा मालूम हो, तो उसका श्रेय उसी प्रवृत्ति को प्राप्त हैं, जिसके कारण इंगलैंड को अमरीका से हाथ धोना पड़ा और संभवतः भारतवर्ष से भी धोना पड़ेगा। इसमें लेखक का दोष नहीं है। हमने अनेक जगह अमरीकनों की कमज़ोरियों और बुराइयों को भी दिखाने की कोशिश की है, परंतु उनके पढ़ने के साथ ही पाठकों को यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि एक राष्ट्र तो दूर रहा, एक मनुष्य भी जब तक वह हाड़ और मांस का बना है, पूर्णता को प्राप्त नहीं हो सकता।

फ्रांसीसी क्रांतिकारी लेफायटे जब अमरीकनो की सहायता के लिये अमरीका आया, तो उसने वाशिंगटन को लिखा-"मैं जब फ्रांस में था, तब अमरीका के स्वातंत्र्य-आंदोलन और उच्च भावों की बहुत प्रशंसा सुनता था, परंतु यहाँ आकर जब मैंने यह देखा कि ब्रिटिशवाद का भी खुल्लम-खुल्ला इसी तरह समर्थन होता है, जिस तरह अमरीकन राष्ट्रवाद का, तो मुझे अत्यन्त आश्चर्य और निराशा हुई।"

वाशिंगटन ने उत्तर दिया "आपको इतने बड़े कार्य में सबही जगह आदर्श मिलने की आशा नहीं करनी चाहिये।"

हमारा विश्वस है कि रक्तपात के अङ्ग को छोड़कर अन्य पूरा भाग भारतवासियों के बड़े उपयोग का है और उससे हमें अपना मार्ग निश्चय करने में बहुत सहायता मिल सकती है।

पुस्तक अनेक अङ्गरेज़ और अमरीकन इतिहास-लेखकों की पुस्तकों, सरकारी पत्रों और डिस्पैच के आधार पर लिखी गई है, जिसमें-से कृतज्ञता प्रकाशनार्थ कुछ की सूची दे दी गई है। पर हम उनमें-से भी प्रथम चार पुस्तक लेखकों के बड़े आभारी हैं, क्योंकि उन्हीं की पुस्तकों के ढाँचे पर हमने भी अपना ढाँचा तैयार किया है।

हम समयाभाव के कारण प्रूफ़ नहीं देख सके, उससे अनेक स्थानों पर भद्दी-भद्दी अशुद्धियाँ रह गई हैं, आशा है पाठक उन्हें सुधार कर पढ़ने की कृपा करेंगे। दंपति-संपादक श्री उमाशंकर जी मेहता ने वर्तमान परिस्थिति में इस पुस्तक को प्रकाशित करने में जो उत्साह दिखाया है, उसके लिये हमें और पाठकों को उनका कृतज्ञ होना चाहिए।

भवदीय,

आगरा—ता० २० नवम्बर १९३०

देवकीनंदन विभव

विषय-सूची

AUTHORITIES.

1. The making of a Republic. Kevin R. 'Oshiels
2. The American Revolution. Sir Gerge Trevelyean. Vols. I + II.
3. The War of Independence. John Fiske.
4. The Life of George Washington. Irving Washington. Vols. I to IV
5. The Life of Dr. Benjamin Franklin.
6. The Writings of George Washington.
7. The Writings of John Adams.
8. History of America. Justin Winser Vols. I to IV
9. History of the United States. Charles Mackay Vols. I—II
10. History of England. Charles Knight Vols I to VIII
11. History of France.
12. Grenv. papers.
13. Report Historical manuscript Commission.
14. Tyler's Literary History.
15. The History of modern Liberty. Vol II

Vorious Periodicals, Govt. papers and despatches.

अमेरिका की स्वाधीनता

का

इतिहास

---

(१)

क्रांति के पहले

उस दिन सन् सत्रह सौ तिरसठ का नवंबर मास था, अमरीका में चारों ओर खुशियाँ मनाई जा रहीं थीं, बोस्टन, न्यूयार्क और फिलाडेलफ़िया घंटे-घड़ियालों की मधुर संगीत से गूँज रहे थे। भोज दिए गए, व्याख्यान झाड़े गए और शांति का संदेश भी पढ़ा गया। यह सब इस उपलक्ष में था कि अमरीका के आधिपत्य के लिये फ्रांस और इंगलैंड में जो सप्तवर्षीय युद्ध चल रहा था, उसका निपटारा हो गया। कनाडा और मिसीसिपाई के सारे प्रदेश अंग्रेज़ों के हाथ में आ गए। आज से प्रतिभाशाली फ्रांस का प्रभाव इन प्रदेशों से कूच कर गया। जिस तरह महासमर के बाद जर्मनी के पराजित होने पर भारतवासी इस आशा को लेकर खुशी मना रहे थे कि अब

उनकी राष्ट्रीय आकाक्षाएँ पूरी होंगी, उसी तरह अमरीकाबासी भी नई शांति और व्यवस्था के स्वप्न देख रहे थे। परंतु जिस तरह रौटल-ऐक्ट से भारतवासियों का यह भ्रम दूर हो गया, उसी तरह नए-नए स्वेच्छाचारी कानूनों ने अमरीकनों की इस आशा-लता को भी कुचल दिया था।

इससे पहले अमरीका के ब्रिटिश-साम्राज्य में तेरह छोटे-छोटे प्रदेश थे, जिनकी रीति-रस्म, क़ानून, व्यवस्था और व्यवहार आपस में बहुत ही भिन्न थे। इनमें-से मुख्य मसासुसेट्स, कनेक्टीकट, न्यूहेम्फ़शायर और रोहड द्वीप थे। यह प्रदेश प्रायः उन्हीं लोगों से बसे हुए थे, जो भूख की ज्वाला से पीड़ित होकर अथवा ईसा के मत के प्रचार के लिये अपनी मातृभूमि से अपने टाट-कमंडल को लेकर अमरीका में आ बसे थे। इनमें योरप के प्रायः सभी प्रदेशों के लोग सम्मिलित थे, परंतु इंगलैंड, स्कॉटलैंड और आयरलैंड के लोगों की संख्या अधिक थी।

इस समय की योरप की प्रधान शक्तियों में इंगलैंड, फ़्रांस स्पेन, डच आदि का स्थान सबसे ऊँचा था। एशिया, अमरीका, मिश्र और अफ़रीका को इन्होंने अपना क्रीड़ा-स्थल बना लिया था। जहाँ इनके जहाज़ माल ढोने के लिये जाते थे, वहीं धर्म-प्रचार के लिये मिशनरी और इनके व्यवसाय की रक्षा के लिये सेनाएँ पहुँच जाती थीं।

इन लोगों के व्यवसाय-संबंधी विचार भी विचित्र ही होते थे। वे यह बात नहीं समझते थे कि दो आदमी जब

आपस में स्वतंत्रता से व्यवसाय करते हैं, तो दोनों को ही लाभ होना चाहिए, अन्यथा दूसरा इस व्यवसाय से पृथक हो जायगा। वे तो यह समझते थे कि जिस तरह जूए में एक की हानि और दूसरे का लाभ होता है, उसी तरह व्यवसाय में भी एक मनुष्य के लाभ होने के लिये दूसरे को अवश्य ही हानि पहुँचनी चाहिए। इसलिये जहाँ पहुँचते, लोगों को येन केन प्रकारेण चूसने की चेष्टा ही किया करते थे। इसे आज के शब्दों में तो 'लूट-मार' ही कहा जायगा और ऐसी नीति की रक्षा बिना सैनिकों के हो ही नहीं सकती। जब ये किसी प्रदेश को निर्बल पाते थे, तब किसी-न-किसी बहाने पर इन्हें अपनी सेनाओं के व्यवहार का अवसर मिल ही जाता था। अनेक जगह वे सफल होते थे और अपना झंडा गाड़ ही देते थे।

कोलंबस ने जब-से नई दुनियाँ का पता लगाया था, तब-से हजारों लोग योरप से वहाँ आ बसे थे और आदि-निवासी इंडियनों को भीतरी प्रदेशों में भगाकर अपने उपनिवेश भी स्थापित कर लिए थे। प्रारंभ में एक उपनिवेश को स्थापित करने का यही उद्देश्य था कि, वे इन प्रदेशों के साधनों से अपनी मातृभूमि की शक्ति और धन को बढ़ावें। यह उपनिवेश भी उनकी संतानों की कभी मातृभूमि होगी—यह विचार तो उनमें तब तक आया ही नहीं था। *

* 'The great object in founding a colony besides increasing ones general importance in the world and the area of one's deminions on the map, was to create a

भारतवर्ष की तरह अमरीका में भी इंगलैंड, फ्राँस, स्पेन हालैंड सभी अपना-अपना आधिपत्य जमाना चाहते थे। यह प्रतिद्वंद्वता बहुत दिनों तक चलती रही, परंतु बाद को स्पेन, हालैंड स्वीडन वग़ैरह तो अपनी आकांक्षाओं का बलिदान करके पीछे-हट गए। इसलिये अब दो ही शक्तियाँ-फ्राँस और इंगलैंड क्षेत्र में रह गईं थीं। दोनों शक्तियों को शस्त्र उठाए भी सात वर्ष हो गए थे, उपनिवेशों की भूमि रक्त से रँग चुकी थी, दोनों ओर की सेनाओं की लूट-मार और अग्निकांड में उपनिवेश-निवासी पिसे जारहे थे। उपनिवेशों को इस युद्ध के लिये धन की अतुल राशि देनी पड़ रही थी और उनके तीस हजार आदमी भी रणक्षेत्र में वीर-गति को प्राप्त हो चुके थे।

यह सब ब्रिटिश साम्राज्यवाद के लिये हो रहा था। लेकिन व्यय का अधिक भाग उपनिवेश-वासियों के मत्थे ही मढ़ा जाता था। इन उपनिवेशों के स्त्री-पुरुष उकता गए थे और प्रतिक्षण ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि किसी तरह यह लोमहर्षण कांड समाप्त हो। जब इंगलैंड की विजय और संधि के समाचार आए, तब इन मुर्दा प्रदेशों में जीवनी-शक्ति आ गई और उन्हें आशा हुई कि ऊजड़ और नष्ट-भ्रष्ट प्रदेश शांति के झोंके से फिर चमक उठेंगे।

गत युद्ध ने उनकी आर्थिक शांति नष्ट कर दी थी, भयंकर रोग, ग़रीबी, अकाल और युद्ध ने उन्हें निचोड़ डाला था, लेकिन

---

dependent Community for the purpose of trading with it."

—John Fiske 'In the war of independence.

अमरीका की भूमि अत्यंत उपजाऊ थी और बहुमूल्य चीज़ों से भरी पड़ी थी। अतः उनकी आर्थिक स्थिति शनैः-शनैः सुधरने लगी। इस समय हजारों आदमी जर्मनी, स्कॉटलैंड और आयरलैंड से भी आए और प्राचीन निवासियों में हिलमिल गए। इन नवागंतुकों के रक्त में स्वातंत्र्य के विचार और नवीन सिद्धांतों की लहरें जोर मार रही थीं, जिसने पुराने उपनिवेश-वासियों के हृदय में भी नवीन भावों को जन्म दे दिया।

यह लोग खेती, व्यवसाय और दूसरे कामों में लग गए, इन्होंने जंगलों को काटकर नए खेत बनाए, बड़े-बड़े नगर बसाए और समुद्र के किनारे पर बड़े-बड़े बंदरगाह भी तैयार किए। थोड़े ही समय में इन अमरीका के उपनिवेशों में और इंगलैंड में भारी व्यवसाय स्थापित हो गया।

इन उपनिवेशों में इंगलैंड, आयरलैंड और स्कॉटलैंड से आए हुए मनुष्यों की संख्या अधिक थी। वे ग्रेटब्रिटेन को अपनी मातृभूमि समझते थे। यद्यपि ब्रिटिश-साम्राज्य के लिये वे पिस चुके थे, तो भी ग्रेटब्रिटेन और उसकी सत्ता के लिये उनमें कम प्रेम न था। वे समझते थे कि ग्रेटब्रिटेन के झंडे के नीचे ही वे पूर्ण सुख और शांति को प्राप्त कर सकेंगे। स्वतंत्रता का मूल्य तो उन्हें अभी आगे जाकर मालूम होना था।

(२)

असंतोष का जन्म

यह शांति-स्वप्न अधिक दिन तक न रहा। क्योंकि अब इंगलैंड अपनी 'लूटमार' की नीति बरतने के लिये स्वतंत्र हो गया था। उपनिवेशों का अस्तित्व ही अंगरेजों की दृष्टि में इसलिये था कि उनको लूट कर इंगलैंड का ख़जाना भरा जाय। ब्रिटिश राजनीतिज्ञों का सदा से यह मत रहा है कि ब्रिटिश-साम्राज्य की वृद्धि और विस्तार का ध्येय ही यह है कि इंगलैंड सुख-संपन्न और संपत्तिशाली हो।

इन उपनिवेशों का व्यवसाय इंगलैंड के हाथ में था और यह व्यवसाय क्या था? खाली लूट-मार थी। इंगलैंड के व्यवसायी समझते थे कि इस व्यवसाय में उपनिवेशों को जितना ही वे चूस सकें, उतना ही उनका लाभ है। अंगरेज़ स्वतंत्र-व्यवसाय तो केवल अपने ही देश में जानते हैं। उनको यह मालूम नहीं था कि उपनिवेशों का बाज़ार नष्ट करने से उनका भी व्यवसाय चौपट हो जायगा।

उन्होंने उपनिवेशों की अतुल राशि पर एक मात्र इंगलैंड का ही आधिपत्य जमाने के लिये ऐसे-ऐसे क़ानून पास किए थे, जिसके अनुसार उपनिवेश ब्रिटिश-साम्राज्य को छोड़कर अन्य किसी भी देश से व्यवसाय नहीं कर सकते थे। कोई भी उपनिवेश फ़्रांस, हालैंड या अन्य किसी देश को कच्चा माल

नहीं भेज सकता था और बना हुआ माल इंगलैंड या ब्रिटिश-साम्राज्य के अतिरिक्त अन्य कहीं से मँगाना उनके लिये जेल का आह्वान करना था। उसने ऐसे जहाज़ी क़ानून बनाए, जिससे अमरीका के बंदरगाहों पर दूसरे प्रदेशों के जहाज़ों का आना ही बंद हो गया। यह सब व्यवसाय अँगरेजी जहाज़ों द्वारा ही हो सकता था। उपनिवेशों और ब्रिटिश-साम्राज्य में जो भी व्यवसाय होता था, उसपर टैक्स देना पड़ता था। +

अँगरेजी माल को प्रतियोगिता से बचाने के लिये यह आवश्यक समझा गया कि उपनिवेश कोई माल तैयार न करें. वे ऊन पैदा करें, लेकिन कपड़ा बुनने के लिये इंगलैंड भेजा करें। वे लोहा खानों से निकालें, पर उसके हल और दूसरे यंत्र बनाने के लिये उसे इंगलैंड रवाना करना चाहिए। इसी तरह अनाज और दूसरे कच्चे माल के लिये भी ऐसा ही कानून बनाया गया कि वे इंगलैंड और ब्रिटिश साम्राज्य से बाहर कहीं भी न भेजे जावें। इंगलैंड के किसानों की रक्षा करने के लिये और उन्हें अमरीकन कच्चे माल की प्रतिद्वंद्वता

+ 'When the European nations began to plant their colonies in America, it was founded on the theory that it existed only for the purpose of enriching the country, which had founded.

—The war of independence.

से बचाने के लिये अमरीकन कच्चे माल पर ब्रिटिश बंदरगाह पर टैक्स भी देना आवश्यक बना दिया गया था। ×

इस तरह के उनतीस से अधिक कानून चार्ल्स प्रथम के समय से सन् १७५० तक बन चुके थे, लेकिन उन्हें पूरी तरह व्यवहार में नहीं लाया गया था। जब फाँस का डर न रहा और इगलैंड की शक्ति स्थापित हो गई, तब इन कानूनों को व्यवहार में लाने का प्रयत्न कड़ाई के साथ किया जाने लगा।

इन नियमों को पालन करने का जो क्रम था, उससे अमरीकन लोगों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर सीधे प्रहार होने लगा। इंगलैंड को छोड़कर किसी भी देश से उपनिवेश-वासी कोई चीज़ ख़रीद नहीं सकते थे, इसलिये महँगा होने पर भी

× Her navigation laws had shut their ports against foriegn vessels; obliged them to export their productions only to Countries belonging to British-Crown; to import European goods Solely from England, and in English ships; and had Subjected the trade between the colonies to duties.'

—Irving washington in life of 'George Washington pp 23

Next in order to protect British Manufacturers from Competetion, it was thaught necessary to prohibit the Colonists from Manufacturing. They might grow wool, but it must be carried to England to be woven into cloth, they might smelt iron, but it must be carried to England to be made into plough sware.

—Jornfiske 'In-the way of Indepen dence.

उन्हें माल अंगरेजी व्यापारियों से ही लेना पड़ता था। कोई-कोई आदमी चोरी-छिपे अन्य देशों से माल मँगा लिया करता था। इसको रोकने के लिये कर-कर्मचारी को पूरे-पूरे अधिकार दे दिए गए थे। उन्हें एक आम आज्ञा मिल गई थी कि जिस व्यापारी के मकान में चाहें ज़बरदस्ती घुस जायँ और जो माल चाहें ज़ब्त कर लें। इसप्रकार अधिकारियों के हाथ में व्यक्तिगत द्वेष निकालने और रुपया ऐंठने का एक अच्छा अस्त्र आ गया। इससे अमरीकन व्यवसायियों में घोर असंतोष की नींव जम गई। उन्होंने इन अत्याचारों का संगठित विरोध करना प्रारंभ कर दिया। जेम्स ओटिस उस समय एडवोकेट-जनरल था। उसने अपने उच्चपद से इस्तीफ़ा दे दिया और वह अमरीकन व्यवसायियों की शिकायतें दूर कराने में लग गया। जस्टिस हचिनसन के सामने मामला पेश हुआ, सरकार की तरफ़ से उस समय के प्रसिद्ध वकील जर्मी ग्रेडले ने सरकार का दृष्टि-कोण बड़ी ही योग्यता से समझाया। इसका जवाब जेम्स ओटिस पाँच घंटे तक देता रहा और उसने इस बात पर अच्छी तरह बहस की कि इंगलैंड का संबंध किन सिद्धांतों और आधार पर होना चाहिए। उसकी सारी दलीलों का तत्व यह था कि जो क़ानून अमरीकनों की सम्मति से नहीं बने हैं, उन्हें पालन करने के लिये वे मजबूर नहीं किए जा सकते। आगे चलकर तो यह सिद्धांत 'मताधिकार नहीं तो कर नहीं' क्रांति का मूल कारण बन गया।

इस समय जॉन एडमस, एक नवयुवक वकील-अदालत में मौजूद था, जो ओटिस का भाषण बड़े ध्यान से सुन रहा था। उसने आगे चलकर ओटिस के भाषण के संबंध में घोषणा की थी कि उसी दिन ब्रिटिश के स्वनिश्चित अधिकारों पर पहली बार आघात किया गया था और उसी दिन स्वतंत्रता के शिशु का जन्म भी हुआ।

जस्टिस हचिन्सन ओटिस के भाषण से प्रभावित तो हुआ, किंतु पार्लियामेंट द्वारा बनाए हुए क़ानूनों के विरुद्ध जाने को उसे अधिकार ही न था, इसलिये उसने गृह-सरकार को लिखा, लेकिन उसको जवाब मिला कि क़ानूनों को पूरी तरह अमल में लाया जाय। अब तो व्यवसायियों और दूकानदारों के मकानों पर धड़ाधड़ तलाशियाँ होने लगीं, हजारों पौंड का माल व्यापारियों से छीन लिया गया। बंदरगाहों पर इतनी कड़ाई होने लगी कि न केवल दोषी ही बल्कि निरपराध लोग पिसने लगे और कई व्यवसाय चौपट भी हो गए। ओटिस के भाषण ने व्यवसायियों में जान फूंक दी थी, वे कर-कर्मचारी के आने पर अस्त्र-सहित दरवाजों और खिड़कियों को रोक-कर खड़े हो जाते थे और वह अपना-सा मुँह लेकर वापिस लौट जाता था।

इन उपनिवेशों में इंगलैंड का बिशप ईसाई-धर्म प्रचार के लिये पादरी नियत करके भेजता था, जिनका वेतन उपनिवेश-सरकार को ही देना पड़ता था, लड़ाई के कारण उपनिवेश पर

क़र्ज़ होगया था, जिससे वे दबे जाते थे; इसलिये वर्जीनिया की धारा-सभा ने प्रस्ताव पास करके इनका वेतन बंद कर दिया। बिशप की प्रार्थना पर बादशाह जार्ज तृतीय ने इस प्रस्ताव को वीटो करके पादरियों का वेतन नियत रक्खा। इस संबंध में अदालत में पेटरिक हेनरी ने अपना पहला भाषण दिया। उसने इस बात पर जोर दिया कि संसार की 'कोई भी शक्ति वर्जीनिया के लिये क़ानून बनाने के उनके अधिकार को छीन नहीं सकती और यदि बादशाह एक न्याययुक्त क़ानून को अपने पिट्ठुओं के कहने पर उठाकर ताक में रख देता है, तो वह अपनी प्रजा के पिता होने के स्थान में अत्याचारी बन जाता है और आज्ञा-पालन कराने का उसका अधिकार ज़ब्त हो जाता है'

सन् १७६४ में जार्ज ग्रेन विल्हे इंगलैंड-सरकार के महा-मंत्री हुए। उनके विषय में मेकाले * का मत है-'इसके विचार में राष्ट्रीय हित केवल वही था, जो पौंड, शिलिंग और पेंस में प्रदर्शित किया जा सकता है।' मार्च के शुरू में ही पार्लियामेंट में इस विषय पर वादाविवाद हुआ कि 'उन्हें अमरीका पर कर लगाने का अधिकार है या नहीं।' इसका निश्चय उन्होंने ख़ुद ही कर लिया कि 'हाँ है।' इस निश्चय का मूल कारण यह था, क्योंकि वे समझते थे कि जिन टैक्सों को वे लगाना चाहते हैं, उपनिवेशों की धारा-सभाएँ उनका समर्थन कभी न करेंगी।

---

* Macauly says about Grenville that 'he knew no national interest except those which are expressd by Pounds, Shillings and pence'.

इसलिये उन्होंने सोचा कि यह बाधा ही मार्ग से क्यों न हटा दी जाय और कर लगाने का काम सीधा पार्लियामेंट के हाथ में ही क्यों न दे दिया जाय ? इसके बाद ग्रेन विल्हे की सरकार नए-नए कर लगाने बैठी। शक्कर और मछली पर कुछ कर बढ़ाए, बाहर के आनेवाले माल पर कूछ नए कर बैठाए और कुछ उपनिवेशों में स्टाँप-ड्यूटी लगा दी गई। इन करों के लगाने का उद्देश्य यह बताया गया कि, इनसे जो आय होगी, उससे एक बड़ी स्थायी सेना रक्खी जायगी-जो सरहदों के आदि-निवासी इंडियनों से रक्षा कर सके और देश में शांति और व्यवस्था को बनाए रक्खे; परंतु वास्तव में यह केवल बहाना-मात्र था। असली मंतव्य तो उपनिवेशों के व्यय पर उपनिवेशों के मत्थे अंगरेज़ी सेना मढ़ना था, जिससे प्रदेशों में शाही गवर्नरों की शक्ति बढ़े और इंगलैंड की व्यवसाय-संबंधी नीति की रक्षा हो।

इस समय अमरीका के कुछ उपनिवेशों में स्वाधीनता के मूल सिद्धांतों की जड़ अच्छी तरह जम गई थी, उसका कारण यह था कि इन प्रदेशों में अधिकांश स्वतंत्र प्रकृति के लोग बसे हुए थे, जो चार्ल्स प्रथम के स्वेच्छाचार से उकता कर इंगलैंड छोड़कर चले आए थे और अमरीका में बस गए थे। इनमें न्यू इंगलैंड प्रधान था। पार्लियामेंट का निश्चय जब उन्हें मालूम हुआ, तब उन्होंने इसे अपने मूल अधिकारों में हस्तक्षेप समझा। उनका विचार था कि उनकी रक्षा और व्यवस्था के लिये कर लगाने का अधिकार केवल उनके प्रति-

निधियों को ही है *, हजारों मील बैठी पार्लियामेंट उनकी बिना सम्मति के उनपर मनमाने कर नहीं लाद सकती।

नई स्टाँप-ड्यूटी के अनुसार यह कानून बन गया कि तमाम दस्तावेज ब्रिटिश स्टाँप-पेपर पर लिए जाँय, जो ब्रिटिश एजेंट से ख़रीदे जाने चाहिए। यही नहीं, इस क़ानून को तोड़नेवाला किसी भी उपनिवेश में किसी भी शाही या जलयानाध्यक्ष (Admiral) के न्यायालय में फ़ैसले के लिये पेश किया जा सकता था। फिर वह न्याया-लय उस स्थान से, जहाँ जुर्म हुआ हो, कितनी ही दूर पर क्यों न हो। इस तरह यह क़ानून अमरीकनों की जूरी द्वारा न्याय प्राप्त करने के अधिकार पर कुठाराघात करता था।

उन्होंने सम्राट्, लार्ड्स और कामन्स सभा के सदस्यों को सुंदर शब्दों में राजभक्ति-पूर्ण प्रार्थना-पत्र भेजे। कुछ ही दिनों में लंदन-आफ़िस में इन प्रार्थना-पत्रों का ढेर लग गया। डॉक्टर बेंजमिन फ्रेंकलिन पेनसिलवेनिया, कनेक्टीकट और दक्षिणी कारोलना के प्रतिनिधियों सहित इस क़ानून का विरोध करने

---

* 'No power in the earth could take away from Verginia the right to make laws for herself and that in anulling a whole-some law at the request of a favoured class in the Commuunity, a king from being the father of his people, degenerates inte a tyrant and forfiets its all rights to obedience'-Patric Henry.

के लिये लंदन पहुँचा। कुछ अंगरेज राजनीतिज्ञों ने भी इस नीति को भयावह बतलाया और कहा कि इससे उपनिवेशों में घोर आन्दोलन का जन्म हो जायगा। लेकिन लोभ ने ग्रेनविल्हे की सरकार की आँखें बंद कर रक्खी थीं और इंगलैंड का सार्वजनिक मत, जो केवल अपना ही हित देखता है, उसके पक्ष में था।

मि० ग्रेनविल्हे ने ऐसे प्रार्थना-पत्रों पर कुछ ध्यान तक नहीं दिया, उल्टे ऐसा नियम बना दिया—जिससे कोई ऐसा प्रार्थना-पत्र अंगरेज़ी सरकार को न भेज सके। सन् १७६५ के मार्च मास में पार्लियामेंट ने स्टाँप बिल को स्वीकार करके क़ानून का रूप दे ही दिया। इसी समय विप्लव ऐक्ट (Mutiny) में एक धारा बढ़ा दी गई, जिसके अनुसार महामंत्री को मनमानी फ़ौजें अमरीका में भेजने का अधिकार मिल गया और क्वार्टरिंग ऐक्ट (Quartering) पास कर दिया कि जहाँ जिस उपनिवेश में यह फ़ौजें अड्डा जमाएँ, वह उपनिवेश उनके रहने का मकान, बिस्तर, लकड़ी, शराब, साबुन और मोमबत्तियों का प्रबंध करे।

यह समाचार जब अमरीका में पहुँचा, तब तो वहाँ असंतोष और घृणा की ज्वाला जल उठी। वर्जीनिया की धारा-सभा में इसपर २९ मई को विचार हुआ। पेटरिक हेनरी ने अपना प्रस्ताव पेश करते हुए कहा कि वर्जीनिया की धारा-सभा को ही वर्जीनिया के लोगों पर कर लगाने का एक मात्र अधिकार है, अन्य किसी को नहीं और जो भी हमारे इस अधिकार पर प्रहार करते हैं, वे उपनिवेशों के दुश्मन हैं।

उसने इंगलैंड के मंत्रि-मंडल और सम्राट् के स्वेच्छाचार का विरोध करते हुए कहा–

'कैसर के लिये ब्रूटस पैदा हो गया, चार्लस के लिये क्रामवेल और जार्ज तृतीय को...'

राजभक्त सदस्य काँप गए, वे चिल्ला उठे 'विद्रोह ! विद्रोह !! 'हेनरी इस प्रदर्शन से नहीं डरा, उसने अपने वाक्य को पूरा कर ही डाला। '...इससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।' जो लोग विद्रोह ! विद्रोह ! की आवाज़ें लगा रहे थे, उनकी ओर मुड़कर उसने कहा 'महोदय ! यदि यह विद्रोह है, तो इसका अधिकाधिक प्रचार करना चाहिए'। *

प्रस्ताव कुछ संशोधन के बाद पास होगया। प्रांतिक लेफ्टनेंट गवर्नर नवीन विचारों की बाढ़ से चौंक उठा और उसने वर्जीनिया की धारा-सभा को भंग कर दिया। इधर मेसूसेट्स की धारा-सभा भी चुप नहीं थी, उसने सब उपनिवेशों को आमंत्रित किया कि वे अपने प्रतिनिधि अक्टूबर में होनेवाली सभा में भेजें, जहाँ वे मिलकर इन करों का विरोध करने के साधन का निश्चय कर सकें। चारों तरफ़ यह विचार प्रदर्शित

'Caesar had his Brutes, Charles his Cromwell and George the third......(Treason !!! Treason resounded from the neighourhood of the chair) may benifit by their examples. Sir if this is treason, make the must of it.—

किए जाने लगे कि इंगलैंड की पार्लियामेंट को उपनिवेशों के निवासियों पर कर लगाने के निश्चय करने का कुछ भी अधिकार नहीं है। इस विषय पर धड़ाधड़ साहित्य छपने लगे और समाचार-पत्रों में उत्तेजना-पूर्ण लेख भी लिखे जाने लगे।

इस समय अमरीकन लोगों के जीवन में कुछ ऐसे सिद्धांत गुथे जा रहे थे, जो आगे चलकर संयुक्त-राज-अमरीका के संगठन के आधार ही बन गए। इन सिद्धांतवादियों में सेमुऐल एडम्स का नाम मुख्य है। उसने लोगों को समझाना शुरू किया कि 'देश पर शासन क़ानून और नियमों का होना चाहिए, व्यक्तियों का नहीं।' यह विचार सम्राट, लार्ड्स और हाउस आफ़ कामन्स के सरासर विरुद्ध था। अब तक तो यह होता था कि जहाँ इन तीनों की सम्मति एक हुई कि वे किसी संगठन या नियमों को उठाकर ताक में रख देते थे। एडम्स और दूसरे सिद्धांतवादी पूर्णतया प्राकृतिक नियमों पर शासन चाहते थे। उन्होंने इस बात का भी प्रचार किया कि सब मनुष्य जन्म से बराबर ही पैदा होते हैं और उनके कुछ ऐसे अधिकार होते हैं, जिन्हें उनसे कभी छीना नहीं जा सकता। इसलिये प्रत्येक शासक का यह कर्त्तव्य है कि वह मनुष्य के इन जन्म-सिद्ध अधिकारों की रक्षा करे। इसके लिये यह आवश्यक है कि शासक अपनी शक्ति शासितों की इच्छा से प्राप्त करे अर्थात् शासकों पर प्रजा का अंकुश रहना चाहिए। अमरीका की क्रांति के आधार-भूत यही सिद्धांत थे।

यह असंतोष धारा-सभाओं तक ही नहीं रहा। बल्कि, सभी श्रेणी के लोगों के दिल हिल गए और वे ऐसे अत्याचारों का सामना करने के लिये तैयार हो गए। उन्होंने निश्चय करलिया कि वे स्वेच्छा से तो अपने सिद्धांतों का हनन इस तरह न होने देंगे।

न्यूयार्क के व्यापारियों ने अपने अँगरेजी एजेंटों को लिख दिया कि जब तक उपनिवेशों की शिकायतें दूर न हो जाँय, तब तक वे उनके लिये कोई माल रवाना न करें, क्योंकि व्यापारियों ने यह निश्चित कर लिया था कि जब तक इंगलैंड उपनिवेशों के अधिकारों में हस्तक्षेप करना बंद न करे, तब तक जहाँ तक संभव हो इंगलैंड से व्यापार का संबंध तोड़ दिया जाय। वहाँ भेड़ मारना रोक दिया गया, ताकि कपड़े के लिये काफ़ी ऊन मिल जाय। वहाँ अब तक ब्रिटेन का कपड़ा पहिनना एक फ़ैशन समझा जाता था, परंतु अब स्वदेशी चरखों के कते और बुने हुए के अतिरिक्त दूसरे कपड़े जो पहिनता था, उसे नीची दृष्टि से देखा जाता था। यह निश्चित हो गया कि कोई अमरीकन वकील किसी अँगरेज लेनदार की तरफ़ से नालिश न करे और न कोई भी अमरीकन इंगलैंड को अपने कर्ज़ की अदायगी में कुछ भेजे। हाईकोर्ट के जज से लगाकर नीचे अहलकारों तक और कस्टम ड्यूटी के अफ़सरों ने यह तय कर लिया कि उनके यहाँ मुक़द्दमों के लिये या माल बाहर भेजने के लिये ब्रिटिश स्टाँप वाले कागज़ों की जरूरत नहीं है।

अमरीका इस तरह का निष्क्रिय प्रतिरोध कर रहा था, परंतु वहाँ के युवक इससे भी अधिक उग्र नीति हाथ में लेना चाहते थे।

बोस्टन के 'स्वाधीनता के वृक्ष' से बड़े-बड़े शासकों की नकली मूर्तियाँ बनाकर उन्हें फाँसी में लटकाया जाता और फिर उन्हें गलियों में घुमाकर जला दिया जाता था। सेक्रेटरी, गवर्नर और एडमिरेलटी रजिस्ट्रार के घरों पर आक्रमण करके आग भी लगा दी गई। शासकों ने इनके मुखियाओं को पकड़ने के लिये इनाम निकाले, परंतु सार्वजनिक मत इन आंदोलनकारियों के इतने पक्ष में था कि कोई गिरफ़्तारी तक न हुई।

अंत में पहली नवंबर का दिन आया, इसी दिन से स्टाँपवाला क़ानून कार्यरूप में आने को था। आज ही आंदोलन ने भी अधिक उग्र रूप धारण कर लिया। चारों तरफ़ घंटे बजाए जा रहे थे और नकली मूर्तियाँ बना-बनाकर जलाई जा रही थीं। बाज़ार बंद थे, जलूस निकाले जा रहे थे और मीटिंगें हो रही थीं। गलियों में उत्तेजित भीड़ देशभक्ति के गीत गाती और स्टाँप-ऐक्ट के विरुद्ध नाराज़गी प्रगट करती हुई फिर रही थी। यह भीड़ कर-विभाग के कर्मचारी ऑलीवर को 'स्वाधीनता के वृक्ष' तक खींच ले गई और वहाँ उसे इस्तीफ़ा देने की प्रतिज्ञा करने के लिये विवश किया। जगह-जगह नोटिसें चिपकीं, जिनमें स्टाँप व्यवहार करनेवालों को धमकी भी दी गई। फ़िलाडेल्फ़िया में जहाज़ों के झंडे झुका दिए गए।

न्यूयार्क में छपे हुए ऐक्ट की एक प्रति को एक बाँस में बाँधकर, जिसके ऊपर एक मुर्दे की खोपड़ी भी रक्खी हुई थी, बाज़ारों में निकाला गया, उसके नीचे लिखा हुआ था 'इंगलैंड, की मूर्खता और अमरीका का सर्वनाश' जहाज़ों में जो स्टाँप-पेपर आए हुए थे, उनके बक्स समुद्र में फेंक दिए गए अथवा उन्हें जला दिया गया। इस भीड़ को आते हुए जब लेफ्टीनेंट गवर्नर काल्डेन ने देखा, तो वह कुछ काग़ज़ों को लेकर क़िले में जा घुसा और उसकी रक्षा करने के लिये नाविक शक्ति को नियत कर दिया। भीड़ ने उनके अस्तबल को तोड़कर, उनकी घोड़ा-गाड़ी निकाल ली और उसमें काल्डेन की मूर्ति रक्खी। फिर बाज़ार में घुमाकर उसे फाँसी दे दी। इसके बाद क़िले की तोपों के सामने ही रथ और सब सामान को जलाकर भस्म कर दिया।

इसी तरह के प्रदर्शन सारे उपनिवेशों में हुए। इसके बाद किसी को हिम्मत ही न पड़ती थी कि स्टाँप-ऐक्ट को व्यवहार में लावे। वास्तव में कोई स्टाँप-पेपर दिखलाई ही न पड़ता था; क्योंकि कुछ जला डाले गए थे, कुछ छिपा दिए गए थे, कुछ न्यायालय में बंद कर दिए गए थे और कहीं तो बिना स्टाँप के ही कार्य हो रहा था। न्यूयार्क, बोस्टन, फ़िलाडेलफ़िया और दूसरे उपनिवेशों के व्यापारियों ने निश्चय किया कि जब तक स्टाँप ऐक्ट टूट न जायगा, वे कोई माल इंगलैंड से नहीं मँगाएँगे।

कुछ दिनों बाद इस तरह के झगड़े तो शाँत हो गए, परंतु ब्रिटिश माल का बहिष्कार उसी तरह ज़ोरों से चलता रहा। इससे इंगलैंड के व्यवसायियों में बड़ी बेचैनी पैदा हो गई। क्योंकि उपनिवेशों का उनका सारा व्यवसाय ही चौपट हो गया। इसलिये वे लंदन के मंत्रि-मंडल का दरवाजा बार-बार खटखटाने लगे और उनका सोना हराम कर दिया। इस आंदोलन का परिणाम यह हुआ कि ग्रेन विल्हे के मंत्रि-मंडल को इस्तीफ़ा देना पड़ा और जब नया मंत्रि-मंडल क़ायम हुआ, तब उसने हाउस आफ़ कामन्स के सामने उपनिवेशों के एजेंट डॉक्टर फ्रैंकलिन को उपनिवेशों की तरफ़ से बोलने का अधिकार दिया।

उनसे पूछा गया-"सन् १७६३ से पहले अमरीका का ग्रेट ब्रिटेन की ओर क्या भाव था?

फ्रैंकलिन-'संसार में जितना अच्छा हो सकता है ऐसा। वे सम्राट् की सरकार की आज्ञा ख़ुशी से पालन करते थे और सब न्यायालयों में ब्रिटिश पार्लियामेंट के क़ानूनों का मान किया जाता था। बहुत-से पुराने उपनिवेशों में जन-संख्या बहुत अच्छी थी, परंतु उन्हें क़ाबू में रखने के लिये आपको क़िले, गैरीजन और सेनाओं के रखने में कुछ भी व्यय नहीं करना पड़ता था। आपका देश उनपर क़लम, कुछ दावात और कागज़ की सहायता से ही राज्य करता आया है। वे धागे

Greny. papers, Vol. IV. p. 389.

के सहारे से चलते थे। न केवल वे ग्रेटब्रिटेन का सम्मान ही करते थे, वरन् उसके क़ानून, उसकी रीति-रिवाज, उसके व्यावहारिक व्यवस्था पर उन्हें अत्यंत प्रेम था। वे इंगलैंड के फ़ैशनों तक को अंगीकार करने में अपना गौरव समझते थे, जिससे ब्रिटेन का व्यवसाय बहुत बढ़ गया था। ग्रेट ब्रिटेन के लोगों के लिये हमारी दृष्टि में एक विशेष प्रतिष्ठा थी। एकमात्र इंगलैंड में जन्म लेने के कारण ही वे हमारे श्रद्धा भाजन थे और हममें एक विशेष पद प्राप्त करने के अधिकारी थे।"

"लेकिन अब अमरीकावासियों की प्रवृत्ति कैसी है?"

"ओह! बिलकुल ही विपरीत।"

"यदि यह स्टाँप-ऐक्ट वापिस न लिया जाय, तो क्या होगा?"

"अमरीकावासियों की दृष्टि में इस देश के लिये जो सम्मान और प्रतिष्ठा बच रही है, वह भी सर्वथा नष्ट हो जायगी और आपका सारा व्यवसाय, जो अमरीकनों के स्नेह और उदारता पर निर्भर है, बिलकुल चौपट हो जायगा।"

"क्या तुम्हें आशा है कि यदि स्टाँप-ड्यूटी कम कर दी जाय, तो लोग उसे देना स्वीकार कर लेंगे?"

"नहीं! कदापि नहीं! जब तक कि आपकी पाशविक शक्ति से विवश न हो जायँगे।"

कुछ विचारशील अँगरेजी क़ानूनों को वापिस लेकर उपनिवेशों में शांति स्थापित करना चाहते थे, परंतु पदच्युत

मि० ग्रिनविल्हे अमरीका के इन कृतघ्नों को पार्लियामेंट की शक्ति के विरुद्ध खुली बग़ावत करने के लिये पीस डालने का प्रचार कर रहे थे। ग्रिनविल्हे के इस अमरीका-विरोधी प्रोपेगेंडा का सामना करने के लिये पार्लियामेंट के सदस्य उदार-हृदय मि० पिट रोग-शैय्या से उठ खड़े हुए। उन्होंने ग्रिनविल्हे को मुँहतोड़ जवाब देते हुए कहा—"महोदय! मुझे खुशी है कि अमरीका ने बग़ावत कर दी है। यदि अमरीका के तीस लाख मनुष्य बिना प्रतिरोध के इस गुलामी को स्वीकार कर लेते तो हमें भी गुलामी में खींच ले जाने में समर्थ होते।"

पार्लियामेंट की एक कमेटी तीन सप्ताह तक इस प्रश्न पर विचार करती रही, अंत में उसे उपनिवेशों की दृढ़ता के सामने सर झुकाना ही पड़ा। अमरीका के दृढ़ निश्चय की विजय हुई। स्टाँप-ऐक्ट तोड़ दिया गया, दर्शकों की गैलरियाँ हर्ष-ध्वनि से गूँज उठीं। अमरीका में इस समाचार से खुशी छा गई। सारे शहरों में प्रसन्नतासूचक घंटे बजाए गए, ब्रिटिश माल का बहिष्कार उठा दिया गया, बादशाह और पिट की मूर्तियाँ खड़ी की गईं। इस तरह पहली लड़ाई समाप्त हुई।

(३)

आँदोलन की लहर

यह शांति अधिक दिन तक न रह सकी। हार-पर-हार खाते हुए भी अपनी शान बनाए रखने का बहुत ख़्याल रहता है। यद्यपि स्टाँप-ऐक्ट उठा दिया गया, परंतु साथ ही इस निश्चय को क़ायम रक्खा गया कि सम्राट् को यह अधिकार है कि वह पार्लियामेंट की सम्मति से अमरीका के उपनिवेशों के निवासियों के लिये क़ानून और धाराएँ बना सके। इस निश्चय से स्टाँप-ऐक्ट उठने की ख़ुशी खट्टी पड़ गई; क्योंकि उपनिवेश-निवासी सिद्धांत के लिये जितना लड़ते थे, आर्थिक हानि के लिये उतना नहीं। आंदोलन का मूल कारण तो अब भी उसी तरह मौजूद था।

यह ख़ुशी अधिक दिन तक न रही। जार्ज-तृतीय के हृदय में प्रतिहिंसा की ज्वाला जल रही थी। वह स्टाँप-ऐक्ट का वापिस लेना अपनी पराजय समझ बैठा था और मौक़ा पाते ही उपनिवेश-वासियों को पहली बग़ावत का मज़ा चखाना चाहता था। उधर पराजित ग्रेन विल्हे दाँत पीस रहा था और अमरीका-विरोधी प्रचार करने का कोई अवसर न छोड़ता था। अंत में उसने नए मंत्रिमंडल को भड़का कर ही छोड़ा। उसने घृणा के साथ कहा—'कायरो !' तुम अमरीका

पर ऐक्ट लगाने का साहस नहीं कर सकते।' ग्रेनविल्हे की यह चुटकी काम कर गई। इससे नए महामंत्री टाउनसेंड ने उस नीति में प्रवेश किया, जो आगे चलकर इंगलैंड के लिये अत्यंत घातक हुई।

इसने एक बिल पेश किया, जिसका आशय उपनिवेशों में आने या जानेवाली कुछ चीज़ों–जैसे कागज़, रंग, सीसा, चाय और काँच पर कर लगाना था। यही नहीं, न्यूयार्क की धारा-सभा जिस क्वार्टरिंग बिल का (अँगरेज़ी फ़ौज को रसद वग़ैरह देने के क़ानून) घोर विरोध कर चुकी थी, वह पास हो गया और क़ानून बना दिया गया। न्यूयार्क की धारा-सभा और गवर्नर ने स्थायी सेना के लिये यह मानने से इनकार कर दिया, क्योंकि उनका कहना यह था कि यह क़ानून केवल उन सेनाओं के लिये है, जो धावे पर हों। इसपर पार्लियामेंट ने एक प्रस्ताव पास करके गवर्नर और धारा-सभा की शक्ति को तब तक के लिये स्थगित कर दिया, जब तक वह क़ानून को पूरी तरह स्वीकृत न करलें।

इससे उपनिवेश–वासियों को फिर झटका लगा। वे तो यह समझकर कि अब यह शांति चिरकाल तक रहेगी अपने सिद्धांत की विजय समझते थे और ख़ुशी से अपने २ काम में लग गए थे। स्टाँप–ऐक्ट के आंदोलन में जितना प्रश्न आर्थिक हानि का नहीं था, उतना सिद्धांत का था। इंगलैंड की पार्लियामेंट को उपनिवेशों में विना वहाँ के निवासियों की

इच्छा के क़ानून बनाने का अधिकार नहीं है, इसका वे निपटारा चाहते थे। इंगलैंड ने स्टाँप-ऐक्ट को हटाकर यह स्पष्ट ही स्वीकार कर लिया था कि टैक्स लगाने का अधिकार अमरीका-निवासियों को ही है; परंतु बारह महीने ही बाद इंगलैंड इस बात को भूल गया। इसने नए कर लगाकर फिर इस बात की घोषणा की कि सम्राट् केवल पार्लियामेंट की सम्मति से उपनिवेशों पर कर लगा सकता है।

मसासुलेटस की धारा-सभा केवल सम्राट् के पास अनुरोध-पत्र भेजकर ही चुप नहीं रह गई, उसने अन्य उपनिवेशों को आमंत्रित किया कि वे नए क़ानून के उठाने में उससे सहयोग करने के लिये तैयार हो जाँय। इस मसासुलेटस की धारा-सभा से कहा गया कि तुमने जिस प्रस्ताव के आधार पर दूसरे उपनिवेशों को सरकूलर भेजे हैं; उसे वापिस लो, अन्यथा धारा-सभा भंग कर दी जायगी। भला मसासुलेटस के प्रतिनिधि इस बात को कैसे स्वीकार कर सकते थे? प्रस्ताव और सरकूलर वापिस नहीं लिए गए। इसलिये धारा-सभा भंग कर दी गई। अन्य उपनिवेशों से भी कहा गया कि वे इस बात का विश्वास दिलावें कि मसासुलेटस की धारा-सभा के पत्र पर कुछ ध्यान न देकर उसे रद्दी की टोकरी में डाल दिया जायगा। उन धारा-सभाओं ने भी यह स्वीकार नहीं किया, इसलिये उन्हें भी

भंग कर दिया गया। इससे आंदोलन की ज्वाला और भी तीव्र हो गई।

अबसे उपनिवेशों की स्थिति को वे भलीप्रकार समझ गए। उन्हें विश्वास हो गया कि बड़े-बड़े अँगरेज राजनीतिज्ञ इन करों की आड़ में उन्हें गुलामी की जंजीर में जकड़ने के लिये अच्छी तरह तुले बैठे हैं * और उन्होंने इन क़ानूनों के बनाने के पहले हर पहलू पर बिचार कर लिया है। वे जानते थे कि ब्रिटिश-सत्ता की पाशविक शक्ति मौका ढूंढ़ रही है कि जहाँ उपनिवेश-निवासी अब की सर उठावें कि उन्हें कुचल दिया जाय। इसलिये उपनिवेशों के नेताओं ने बड़ी ही गंभीरता और बुद्धि से काम लिया। उन्होंने पूर्ण शांति से काम करने की चेष्टा की और गत वर्ष की तरह उपद्रवों को भी रोका। मसासुलेटस की धारा-सभा के सदस्य गंभीरता से अपनी शिकायतों की आवाज़ पार्लियामेंट तक पहुँचाने की चेष्टा करने लगे। सदस्यों ने अपनी सब शिकायतें एक चिट्ठी में लिखकर अपने लंदन स्थित एजेंट के पास भेजी कि वह उसे ब्रिटिश कैबिनेट के सामने रक्खे। इसे सेमुंडे एडमस ने बड़ी ही धार्मिक भाषा में लिखा था, जैसे एक दुखी पुत्र

---

* The Capital of Mussasuletus in the eyes of the sovereign was nothing better than a centre of Vulgar redition, bristling broken glasses; where his enemies went about clothed in hand, his friends in tar and feathers. —The American Revolntion. pp. 11

अपने पिता को लिखता है। इसमें उपनिवेश के स्थापित होने से अब तक जो-जो सेवाएँ उन्होंने इंगलैंड की की थीं, उसका विषद वर्णन भी था और साथ ही उनके साथ, जो अत्याचार हो रहा था, वह भी अति नम्र-भाषा में रोया गया था। एडमस ने इस पत्र को सात बार इसलिये पढ़ा कि वह इस बात को खोजे कि कहीं कोई कड़े या अनुचित शब्द का प्रयोग तो नहीं हो गया है।

उनका यह अनुरोध-पत्र रद्दी की टोकरी में फेंक दिया गया, उसी तरह जैसे उत्पाती लड़कों की बेहूदा माँग हो। स्वातंत्र्यप्रिय अमरीका-निवासियों ने इस चुनौती को स्वीकार कर लिया। न्यूयार्क से चार्लसटन तक फिर वही भाषा सुनाई पड़ने लगी, जो स्टॉंप-ऐक्ट के ज़माने में अंगरेजी शासकों के प्रति की जाती थी। अब 'स्वतंत्रता के पुत्रों' ने फिर विलायती कपड़ों की होली कर डाली और उनकी बहिनों ने अपना चरखा ठीक-ठाक करके सँभाला। यह सब होते हुए भी अभी आंदोलनवादी हिंसा पर उतारू नहीं हुए थे। परंतु शासक तो उन्हें कोंच-कोंच कर उठाने के लिये तैयार ही बैठे थे। ब्रिटिश जहाज़ आने-जाने वाले अमरीकन मल्लाहों से छेड़-छाड़ करते थे और उन्होंने एक प्रसिद्ध देशभक्त का एक छोटा जलयान, जिसका नाम लिबर्टी था, पकड़ लिया। इससे आपस में कुछ झगड़ा हो गया।

लंदन में बैठे हुए सम्राट् और उनके समर्थकों को तो हर

बात में बग़ावत का भूत ही दिखाई देता था। अमरीका की नौकरशाही ने इस छोटे-से झगड़े को बड़ा तूल दे दिया और मसाले लगा-लगाकर यह ख़बरें लंदन में सुनाई गईं। सम्राट् बोस्टन पर पहले ही से खार खाए बैठे थे, उसे तो बदमाशों और विद्रोहियों का अड्डा समझते थे। उसका ध्यान आते ही, उसे स्वतंत्रता के लहलहाते हुए वृक्ष, टूटे हुए काँच, बिखरे हुए पत्थर तथा खादी पहने हुए राजविद्रोही दिखलाई देने लगते थे।

सम्राट् को इस बात का फिर मौक़ा मिल गया कि वह मंत्रि-मंडल को अमरीका के कुचलने के लिये सेना भेजने के लिये विवश करे। पार्लियामेंट के कुछ खुशामदी सदस्य भी सम्राट् की आग में घी छोड़ रहे थे। वे उन्हें समझाते कि उनके अधिकार का अपमान काफी हो चुका, अब इसकी समाप्ति होनी चाहिए। वे उन्हें विश्वास दिलाते थे कि पाँच-छ जहाज़ और एक मज़बूत ब्रिगेड मसासुलेटस की तो क्या, सारे अमरीका के होश-हवास दुरुस्त कर देगा। लार्ड शेलवार्न ने इसका पूर्ण विरोध किया कि यह नीति इंगलैंड के सर्वनाश का कारण होगी। इसलिये वह किसी तरह भी इसका समर्थन नहीं कर सकते। उपनिवेशों की तरफ़ से डॉक्टर फ्रेंकलिम ने हाउस आफ़ कामन्स को समझाया कि सैनिकों की एक टुकड़ी किसी भी तरह एक आदमी को उसकी इच्छा के विरुद्ध स्टाँप ख़रीदने के लिये

विवश नहीं कर सकती। उसने उनको चेतावनी दी कि इन सैनिकों को इस समय अमरीका में कोई विद्रोह नहीं मिलेगा, लेकिन वे वहाँ जाकर विद्रोह पैदा जरूर कर देंगे।

अधिकांश ब्रिटिश अधिकारी अमरीका की स्थिति से बहुत कम परिचित थे। उपनिवेशों के गवर्नर उन्हें जो कुछ लिख देते थे, वे वही मान लेते थे। अमरीकन उपनिवेशवासी जब अधिकार के लिये लड़ते थे, तब यह गवर्नर उनके आंदोलन का उल्टा ही मतलब निकालते थे। वे तो सार्वजनिक अधिकार और सिद्धांत के लिये लड़ते थे, लेकिन यह गवर्नर समझते थे कि यह आंदोलन उनकी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और शान में बट्टा लगाता है। वे उसे अपनी व्यक्तिगत लड़ाई बना लेते थे। यह लोग जब ब्रिटिश अधिकारियों को पत्र लिखते, तब उनमें उपनिवेश-वासियों को जी भर कर कोसा जाता था, उन्हें उपद्रवी और बाग़ी बतलाया जाता और साथ ही दमन का आमंत्रण करने के लिये कहा जाता कि यह लोग डरपोक, कायर और विभक्त हैं। मसासुलेटस का गवर्नर बर्नार्ड पार्लियामेंट को बार-बार लिखता था कि उपनिवेशों के सब अधिकार छीन लिए जाँय। उसने एक पत्र में जनवरी सन् १७६६ में लिखा—"यहाँ के लोग ग्रेट ब्रिटेन का प्रतिरोध करने की बड़ी डींग हाँकते हैं। लेकिन यह सिर्फ़ बात-ही-बात है। एक जहाज़ी बेड़े के सामने न्यूयार्क और बोस्टन दोनों ही घुटने टेक देंगे।"

जब दुबारा आँदोलन प्रारंभ हुआ, तब बरनार्ड ने ब्रिटिश राजनीतिज्ञों को लिखा कि इस बार अमरीकनों को कुचलने का कोई साधन बाकी न छोड़ना चाहिए। उसने उन राज-भक्त लोगों की एक बड़ी सूची भेजी, जो इस कार्य में शासकों के साथ सहयोग करने को तैयार थे और जिन्हें विरोधी सदस्यों की जगह धारा-सभा का सदस्य बनाया जाना चाहिए। साथ ही उसने एक लंबी लीस्ट देशभक्तों की भेजी और सलाह दी कि उन्हें देश-निकाला देकर इनपर इंगलैंड में अभियोग चलाया जावे। जब धारा-सभा के अनुचित कर उठाने का प्रस्ताव भेजा, तब दिखाने के लिये ऊपर से तो उसने इन करों के हटाने की सिफ़ारिश की। पर भीतर-ही-भीतर लिखा था कि यह कर कभी किसी हालत में न हटाए जाँय। उपनिवेश के अन्न पर पलनेवाले यह लोग उपनिवेशवासियों का ही गला काटते थे, जिसका उपनिवेशवासियों को पता भी न चलता था।

ब्रिटिश-जाति प्रार्थनापत्रों और तर्क से पीछे हटना नहीं जानती। फ्रेंकलिन की बात ठुकरा दी गई और अक्टोबर सन् १७६८ में ८ लड़ाई के जहाज़ सैनिकों से भरे हुए बोस्टन के बंदरगाह में जा धमके। जलयानाध्यक्ष कोमोडर हुड ने लिखा-"यह सेनाएँ यदि बोस्टन में ६ महीने पहले आ जातीं, तो मुझे निश्चय है कि दूसरे उपनिवेशों से न तो कोई प्रार्थना-पत्र ही भेजा जाता और न कोई आँदोलन ही होता और सारे

अमरीका में इस समय पर्याप्त शांति और व्यवस्था हो जाती।"
उसने एक जगह लिखा कि 'मुझे पूर्ण विश्वास है कि अब जो
दबंग नीति का व्यवहार प्रारंभ हुआ है, उसका प्रभाव अमरीका
में शीघ्र ही दिखलाई देगा।'

इस दबंग नीति का प्रभाव उलटा ही पड़ा, जिस आग को
बुझाने के लिये रेजीमेंट भेजी गई थीं, वह और भी अधिक
भड़क गई। अब तक सैनिक बोस्टन में उतरे भी न थे कि
मसासुलेटस प्रांत के प्रतिनिधियों की एक सभा हुई, जिसमें
बोस्टन में शांति क़ायम रखने के साधनों पर विचार हुआ।
वहाँ ब्रिटेन की नई नीति का विरोध किया गया और कहा
गया कि उन्हें नगर की रक्षा के लिये ब्रिटिश सैनिकों की
आवश्यकता नहीं है। अभी परिषद् हो ही रही थी कि जनरल
गेज के नेतृत्व में सैनिकों की टुकड़ियाँ आ पहुँची। इसपर
नगर की एक सभा में निश्चित हुआ कि सम्राट् को विना
उनकी धारा-सभा की सम्मति के फ़ौजें भेजने का कोई
अधिकार नहीं था, इस कार्य से ब्रिटेन ने उपनिवेशों से नाता
तोड़ लिया है और इसलिये यहाँ सम्राट् के कर्मचारियों का
कोई प्रयोजन नहीं है।

जनरल गेज को यहाँ आते ही मालूम हो गया कि यहाँ
रहना सहज नहीं है। जनता तो पूर्ण असहयोग की तैयारी
किए बैठी हुई थी। क्वारटरिंग ऐक्ट के अनुसार न तो किसी ने
उन्हें ठहरने के लिये जगह ही दी, न लकड़ी, साबुन, मोमबत्ती

या दूसरी चीज़ें ही। यही नहीं बोस्टन-निवासियों ने यह पूर्ण निश्चय कर लिया कि उन्हें न तो कोई चीज़ देंगे और न उनसे कोई संबंध ही रक्खेंगे। जिस दिन सेनाओं ने नगर में प्रवेश किया, उस दिन हड़ताल मनाई गई और उपवास और प्रार्थनाओं में ही दिन बीता।

जिन सैनिकों के पास तंबू थे, वे उनमें ठहर गए और कुछ सैनिक स्टेट-हाउस में ठहराए गए। कर्नलों ने कौंसिल से कहा कि सैनिकों के लिये ठहरने और भोजन का प्रबंध करो। परंतु उन्हें जवाब मिला कि जब तक सब बैरेकें भर न जावें, तब तक नियमानुसार सैनिकों के ठहरने का प्रबंध करने के लिये वे मज़बूर नहीं कर सकते। यह बैरेकें एक द्वीप पर नगर से बहुत दूर बनी हुई थीं। सेनाएँ तो इसलिये भेजी गईं थीं कि वे नगर पर कब्ज़ा करें और जनता के हृदय में भय का संचार कर सकें। बाहर रहने से यह प्रजोजन सिद्ध नहीं होता था। वे इसलिये हार कर ब्रिटिश सरकार के ख़र्चे से ही सेनाओं की आवश्यकताएँ पूरी की गईं। अब ठीक शहर के बीच में ब्रिटिश पाशविक शक्ति का प्रदर्शन होने लगा। सैनिकों को कुछ काम था ही नहीं, अतः दिन-भर अपने अस्त्र-शस्त्र साफ़ करते रहते, घोड़ों पर चढ़कर बाज़ारों में घूमते और छेड़-छाड़ करके नागरिकों से झगड़ा मोल लेने की चेष्टा करते थे। यह सैनिक बोस्टन-वासियों को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखते थे और उनके दिल में भरा हुआ था कि अगर यह ज़रा भी सर उठावें, तो उन्हें वे

कुत्ते-बिल्ली की तरह काट डाले। सैनिकों की उजड्डशाही बोलचाल, उनका रूखा व्यवहार बोस्टन-निवासियों के हृदय पर चोट पहुँचाने लगा। जब से बोस्टन में ब्रिटिश सेना ने अड्डा जमाया था, तब से उनके जीवन की शांति ही चली गई थी। नगर में ब्रिटिश तोपें लगी हुई थीं और सैनिकों की संगीनें चमकती थीं। इससे उनके हृदय में यह विचार सदा खटखटाने लगा कि वे परतंत्र हैं और उन्हें स्वेच्छाचार की वेदी पर बलिदान किया जा रहा है *।

उनके दिल पर यह बात शूल की तरह खटकती थी कि उपनिवेश जिन क़ानूनों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता के विरुद्ध समझते हैं, उन्हीं से उनको संगीनों की नोक द्वारा मनवाया जायगा।

इधर ८ नवंबर को सम्राट् ने पार्लियामेंट खोलते हुए उपनिवेशों के संबंध में बड़ी गरम-गरम बातें कहीं और घोषणा की कि उपनिवेशों के इस विद्रोहात्मक वायुमंडल में शांति स्थापित करने के लिये पूरी शक्ति से दमन किया जायगा। बोस्टन में सैनिक भेजने का एक ख़ास मंतव्य यह भी था कि

बर्थ ने लिखा है कि जब फ्रैंकलिन पार्लियामेंट के सामने इसलिये पेश हुआ कि अमरीका की सच्ची स्थिति पर उससे प्रश्न पूछे जाँय, तब वे ऐसे ही मालूम होते थे, जैसे लड़कों का एक झुंड एक मास्टर से प्रश्न कर रहा हो।

* Grenville paper Vol. IV. p. 392.

आँदोलनकारियों के नेताओं को गिरफ्तार करके इंगलैंड भेजा जाय और वहाँ अभियोग चलाया जाय। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये १५ दिसंबर को ड्यूक आफ़ वेडफ़ार्ड ने पार्लियामेंट में प्रस्ताव पेश किया कि अब से जितने राजनैतिक विद्रोहात्मक कार्य्य हों, उनकी इंगलैंड में जाँच हो और जो इन कार्य्यों के लिये जिम्मेदार हों, उनपर इंगलैंड में ही अभियोग चलाया जाय। यह न्याय की पराकाष्ठा थी!

व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर यही सीधा हमला था। ब्रिटिश मति इतनी उग्र और उच्छृंखल होती जाती थी कि बड़े-बड़े राज-भक्तों के हृदय भी हिल गए थे। शांति-प्रिय वाशिंगटन * अभी तक इस आँदोलन से अलग था और ब्रिटिश झंडे में पूर्ण विश्वास रखता था। लेकिन इस नीति ने उसका हृदय भी ब्रिटिश शासकों की तरफ़ से फेर दिया। उसने अपने एक मित्र को लिखा—'जबसे ब्रिटेन के हमारे राजसी स्वामी हमारी स्वतंत्रता ही अपहरण करने पर तुले हुए हैं, उस समय से यह अत्यंत आवश्यक मालूम होता है कि हम पूर्वजों से प्राप्त ऐसी पवित्र चीज़ की रक्षा के लिये अवश्य कुछ-न-कुछ करें। अब हमारे सामने यह प्रश्न है कि यह किस तरह किया जाय, जिससे पूरी तरह प्रतिकार हो सके। यह तो मेरी सम्मति है कि इस पवित्र वस्तु की रक्षा के लिये किसी को आगा-पीछा या सोच-विचार नहीं करना चाहिए। लेकिन

* Life of Gerge wastigton P. 247

मेरी सम्मति में अस्त्र उठाना हमारा अंतिम उपाय होना चाहिए। हमने पार्लियामेंट के सामने अपने दुःख-दर्द की गाथा काफ़ी पहुँचा दी है और हमें अनुभव हो गया है कि इस मार्ग में कुछ तथ्य नहीं है। अब हमको यह देखना है कि हम ब्रिटिश जाति को उसके व्यापार और उद्योग-धंधों में धक्का पहुँचा कर उनका ध्यान अपने अधिकारों और हितों की ओर आकर्षित कर सकते हैं या नहीं।

"यह मालूम होता है कि उत्तरीय उपनिवेश इस कार्य-क्रम को कार्य में लाने की चेष्टा कर रहे हैं। मेरे विचार में यह निश्चय बहुत अच्छा है और यदि हम इसे पूरी तरह काम में ला सकें, तो यह साधन अवश्य प्रभावशाली साबित होगा...

यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि इसमें हर जगह बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, परस्पर विरोधी हितों, और स्वार्थी आकाक्षावाले लोगों की दृष्टि अपने ही आर्थिक लाभ की ओर रहेगी। लेकिन मुझे विश्वास है कि यदि भिन्न-भिन्न उपनिवेशों में लोगों को यह समझाने की चेष्टा की जायगी और इस बात के लिये प्रेरित किया जायगा कि वे कुछ समय के बाद अमुक-अमुक चीज़ें बाहर से न मंगावें, न ख़रीदें, तो बहुत सफलता मिल जायगी......मैं जानता हूँ कि जो लोग अपनी बड़ी जायदाद के बल पर शान-शौक़त से रहते हैं, वे इस कार्यक्रम को स्वीकार न करेंगे।"

वाशिंगटन के मित्र ने जवाब दिया—"अब तो हमारा सब-

कुछ ही जाने का भय है। अब तो हमें स्वतंत्रता के सामने छोटे-छोटे आरामों और चीज़ों को विचार ही से नहीं, वरन् ख़ुशी से छोड़ देना चाहिए।... इस तरह की एक आयोजना की हमें आवश्यकता है, जो हमारी स्थिति के अनुकूल हो और जो पूरी तरह से काम में लाई जा सके, क्योंकि यदि ऐसा न हो, तो इधर क़दम ही न बढ़ाना चाहिए। हम ऊपर के दिखावे और फ़ैशन की चीज़ों का तो तुरंत ही त्याग कर सकते हैं, हमें ऊनी कपड़ा भी एक नियमित संख्या से ज़्यादा नहीं मंगाना चाहिए। यदि इस नीति का सभी उपनिवेशों में व्यवहार किया जा सके, तो अमरीका के बाहर से आनेवाले माल की बहुत ही कमी हो जायगी और ब्रिटेन के कितने ही व्यवसायों और उद्योग-धंधों को चौपट कर देगी। इससे उनके होश-हवास दुरुस्त हो जायँगे। हम जिन अत्याचारों, में फिर रहे हैं, तब उन्हें वे दिखाई देने लगेंगे, उनका अनुभव करेंगे, और वे उन्हें दूर करने की चेष्टा करेंगे। यह जब हो जाय, तब हमें इस वहिष्कार को स्थिर रखने की जरूरत न होगी। हम केवल उन्हीं चीज़ों का बहिष्कार करेंगे, जिन पर पार्लियामेंट की आज्ञा में कर वसूल किया जायगा।

मसासुलेटस की धारा-सभा भंग हो चुकी थी। इस लिये ड्यूक आफ़ बेडफोर्ड के नए प्रस्ताव का विरोध करने का कार्य वर्जीनियाँ की धारा-सभा ने ले लिया। उसने अपनी एक बैठक में निश्चय करके पार्लियामेंट को लिखा कि विद्रोह

या कोई भी अन्य अभियोग उसी अपनिवेश के न्यायालय में चलना चाहिए, जिस उपनिवेश में वह अपराध हुआ हो। एक मनुष्य को किसी अभियोग के संदेह में महासागर के उस पार इंगलैंड में खींच ले जाना भयंकर अन्याय होगा और उसका जूरी द्वारा निर्णय का अधिकार छिन जायगा। यह निश्चय किया गया कि सम्राट् को यह अंतिम प्रार्थना-पत्र भेजा जाय और उसके सामने पेश होने के बाद उसे लंदन के पत्रों में छपा दिया जाय। गवर्नर को जब इसका पता चला, तो उसने धारा-सभा के सभापति और सदस्यों को बुलाया और कहा—सभापति महाशय और धारा-सभा के सदस्यो! मैंने तुम्हारे प्रस्तावों को सुना है और उसके नाशकारी प्रभावों का अनुभव भी कर रहा हूँ। अब आपने धारा-सभा को भंग करना मेरा कर्त्तव्य बना दिया है और इसलिये मैं उसे भंग करता हूँ।"

परंतु धारा-सभा के सदस्य इस तरह पराजित होनेवाले न थे। इसलिये वे दूसरे एक निजी मकान में चले गए और वहाँ पहलेही सभापति को फिर से सभापति चुन लिया। वाशिंगटन ने अब अपना प्रस्ताव पेश किया। उसका एक मसविदा बनाया गया और सब उपस्थित सदस्यों ने इस प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर किए कि जिन-जिन चीजों पर पार्लियामेंट उपनिवेशों में कर लगायगी, उसे न तो वे मँगाएँगे, न बेचेंगे और न व्यवहार में ही लाएँगे। यह प्रस्ताव सारे देश में घुमाया गया और हस्ताक्षर

कराए गए। हर जगह कमेटियाँ बना दी गईं कि जो इसका उल्लंघन करें, उनके नाम लिखकर प्रकाशित करें।

स्त्रियाँ कब चुप रहनेवाली थीं, वे भी इस आँदोलन में अपना सहयोग देने के लिये पूरी तरह तैयार हो गईं। पचास नवयुवतियों ने इकट्ठा होकर 'स्वाधीनता के पुत्र' संस्था के साथ सहयोग करने के लिये 'स्वाधीनता की पुत्रियाँ' नामक संस्था स्थापित कर दी। वे चर्खा कातने, कपड़ा बिनने, सीने तथा अपने भाइयों की अन्य आवश्यकताएँ पूरी करने में लग गईं। इन कामों से जो रुपया मिलता, उसमें यह 'पुत्र' और 'पुत्रियाँ' सभाएँ करतीं, राष्ट्रीय गीत गातीं और मिलकर जलपान करती थीं। इस यज्ञ में नवयुवतियों ने अपने सुख और आराम की कम आहुति नहीं दी थी और कोई भी तकलीफ़ उन्हें अपने सिद्धांत से न हटा सकी।

बोस्टन में सैनिकों को छावनी डाले हुए सत्रह मास हो चुके थे, लेकिन उनकी बुरी दुर्दशा हो रही थी, उन्हें अछूतों की तरह रहना पड़ता था और शहर के लोग उनकी कुछ भी क़द्र नहीं करते थे। सैनिक इस व्यवहार से दिल में बहुत ही जले-भुने बैठे थे। एक कप्तान ने अपने सैनिकों से यहाँ तक कह दिया था कि यदि कोई भी उनपर हाथ छोड़े, तो उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि उनकी बग़ल में अस्त्र हैं और यह अस्त्र काम में लाने के लिये हैं। इधर बोस्टन-वासियों में भी जो लोग उग्र थे, वे

भी भड़क उठते थे। इस तरह बोस्टन के बाज़ारों में चख-चख और तना-तनी रहती थी। इससे प्रतिदिन रक्तपात का भय रहता था।

एक दिन रस्सा बनानेवालों और एक सैनिक में कुछ तू-तड़ाक हो गई। यह सैनिक अपने कुछ और साथियों को ले आया, इधर कुछ और रस्से बनानेवाले भी आ गए और मार-पीट होने लगी। इस मार-पीट में सैनिक बुरी तरह पिट कर भागे, पर फिर अपनी झेंप मिटाने के लिये इकट्ठा होकर रस्सा बनानेवालों पर टूट पड़े। इससे नगर-निवासियों में बड़ी उत्तेजना फैल गई। सैकड़ों आदमी लकड़ी लेकर गलियों में सैनिकों का मुक़ाबिला करने के लिये इकट्ठा होने लगे। एक सैनिक ने आवेश में आकर कुछ गोलियाँ दाग दी, जिससे चार-पाँच नागरिक मारे गए और बहुत से घायल हुए। बस, यही युद्ध का आह्वान था और सारे नगर में ढिंढोरे की आवाज़ सुनाई पड़ने लगी कि 'सैनिकों ने लड़ाई छेड़ दी। हथियार सँभलने लगे, परंतु लेफ्टीनेंट गवर्नर हचिन्सन ने खेद प्रगट किया और इस मामले की जाँच करने की प्रतिज्ञा की, इसलिये रक्तपात होने से बच गया।

बोस्टन-निवासियों को अब इसका अच्छी तरह अनुभव हो गया कि सैनिकों का नगर में रहना अत्यंत भयावह है और उन्हें अब पहला काम जो करना था, वह यह था

कि सैनिकों को शहर से बाहर निकाला जाय। उस रात को चारों तरफ़ ढोल पिटते रहे, घंटे बजते रहे और शहर "सैनिकों को निकालो! निकालो!! निकालो!!! से गूँजता रहा। जनता नंगे पैरों, अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित बाज़ारों में क्रोध से घूम रही थी और और जब तक सेनाएँ नगर से बाहर नहीं कर दी गईं, तब तक कोई भी मनुष्य अपने घर सोने नहीं गया।

दूसरे दिन सुबह नागरिकों की सभा हुई, परंतु लोग शांत थे, न रक्तपात था और न भाषणों में क्रोध ही था। ईश्वर-प्रार्थना होने के बाद उन्होंने सार्वजनिक रक्षा के लिये एक कमेटी बनाई, जिसमें एडमस हेरोक बोरन तथा उनके सहयोगियों को चुना गया। दूसरी तरफ़ गवर्नर, उसकी कौंसिल, सेना और जहाज़ी बेड़े के अध्यक्ष दिनभर सलाह-मशविरा करते रहे। पास के शहरों से सैकड़ों आदमी चले जा रहे थे। सार्वजनिक नेताओं और अधिकारियों में बहुत विवाद हुआ और अंत में अधिकारियों को जनता की माँग के आगे सर झुकाना ही पड़ा। सैनिक नगर से हटाकर बैरेकों में भेज दिए गए।

जो कुछ भी हो, इस घटना से अमरीकन लोगों के हृदय में नए विचारों का जन्म हुआ। इस हत्याकाँड से दो राष्ट्रों के हृदय इस तरह फट गए कि फिर वे आगे चलकर कभी न मिल सके। बोस्टन के इस हत्याकाँड का ज़िक्र

बच्चे-बच्चे के मुँह पर था, कारखानों में, किताबों में, संगीत में इसी हत्याकांड का वर्णन होता था। एक दिन यह पर्चा चारों ओर चिपका हुआ मिला—"अमरीका-वासियो ! ५ मार्च सन् १७७० के किंग स्ट्रीट में होनेवाले हत्याकांड-जहां आपके पाँच देशवासी..........अमानुषिकता से कैप्टन थामसन प्रेस्टन के सैनिकों द्वारा मार डाले गए और छः बुरी तरह घायल हुए, स्मरण रक्खो।"

"स्मरण रक्खो ! इन हत्या-कारियों में-से दो जूरी द्वारा हत्याकारी साबित होने पर उनके हाथ में गरम सलाक से निशान बनाए गए हैं और सेना से भी पृथक कर दिए गए हैं, अन्य हत्याकारी साफ़ छूट गए और कैप्टन को पेन्शन मिल गई। *

"यह भी स्मरण रक्खो कि २ फरवरी १७७० को अँगरेजी शासकों के भाड़ेतू मुर्गे इबे नगर रिचार्डसन ने एक निर्दोष युवक क्रिस्टोफ़र सीडा को मार डाला, देश ने उसे अपराधी साबित किया, तब भी वह साफ़ बचा हुआ है।" तीसरे दिन सारा बाज़ार बंद हो गया और सब लोग उस शहीद को गाड़ने के लिये क़ब्रगाह में गए।

अमरीका के सभी वकील, जान एडमस या ऐसे ही दो-

---

* The American revolution vol I Pege 86

एक आदमियों को छोड़कर, या तो सरकार को साथ दे रहे थे या उदासीन थे।

इंगलैंड में मंत्रि-मंडल का परिवर्तन हो चुका था और लार्ड नार्थ महामंत्री बन चुके थे। बहिष्कार के कारण इंगलैंड के व्यवसायी फिर पेट पीटने लगे थे और इंगलैंड में एक ख़ासी हलचल उठ खड़ी हुई थी। जिस दिन बोस्टन में निर्दोष नागरिकों पर गोली चल रही थी, उसी दिन पार्लियामेंट में यह प्रस्ताव पेश हो रहा था कि चाय के अतिरिक्त अन्य चीज़ों पर से कर हटा दिया जाय। सम्राट् जार्ज-तृतीय की हाथ की कटपुतली लार्डनार्थ इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि पार्लियामेंट का उपनिवेशों पर कर लगाने के अधिकार की रक्षा के लिये यह ज़रूरी है कि चाय पर तीन पेंस फ़ी पौंड कर रहे। उसने कहा कि यदि उपनिवेशवासी उपद्रव ही करने पर उतारू नहीं हैं, तो एक पौंड चाय पर ३ पेंस कर का वह कभी विरोध न करेंगे। इस स्थान में जो उपनिवेश जाने वाली चाय पर इंगलैंड में एक शिलिंग फ़ी पौंड कर था, वह उठा दिया गया। इससे उपनिवेशवासियों को ९ पेंस फ़ी पौंड का फ़ायदा होता था, और चाय उन्हें कर लगने से पहले के मुक़ाबिले भी सस्ती मिल सकती थी।

उदार सदस्यों ने व्यर्थ ही यह समझाने की चेष्टा की कि इस कर से कोई आर्थिक आय तो होगी ही नहीं, पर उपनिवेशों में अशांति बनी ही रहेगी, क्योंकि जिस सिद्धांत के लिये वे

लड़ रहे हैं, वह ज्यों-का-त्यों बना ही रहता है। जिसे वह कभी स्वीकार न करेंगे, परंतु लार्ड नार्थ को तो सम्राट् ने ख़ूब यही पाठ पढ़ाया था। उसने कहा-"जब हमारे अधिकार को अस्वीकार किया जाता है, तब हमें भी आवश्यक हो गया है कि हम अपने कर लगाने के अधिकार की रक्षा करें। कर को बिलकुल ही हटा देना तो पराजय स्वीकार कर लेना है और यदि पितृ देश के अधिकार की रक्षा न की जावेगी, तो वह अमरीका से सदा के लिये उठ जायगा। कर को बिलकुल उठा लेने का विचार तो तब तक नहीं आ सकता, जब तक अमरीका हमारे चरणों में आकर न गिड़गिड़ाए। चाय पर ३ पैंस फ़ी पौंड कर ही कायम रहा, बाकी सभी टैक्स उठ गए।

(४)

आग लग गई

मार्च के महीने में हचिनसन मसासुलेटस का गवर्नर बना दिया गया। उसे इस पद को प्राप्त करने की बड़ी अभिलाषा थी, परंतु वह संकीर्ण विचार का आदमी था, इस कारण वहाँ की धारा-सभा के दबंग सदस्यों से उसकी पटरी खाना असंभव था। पहला झगड़ा भी उसकी तनख़ाह पर ही हुआ। इसपर उसने सभा को सूचना दी कि उसका वेतन इंगलैंड की सरकार देगी। इसलिये इस सभा का उसके वेतन से कोई संबंध नहीं है। यह सुनकर सदस्यों को और भी खेद हुआ, क्योंकि यह चाल तो केवल इसलिये थी कि धारा-सभा का गवर्नर पर कोई अंकुश ही न रह सके।

पर अभी तो एक और मज़ेदार मामला होने को था। बोस्टन से गवर्नर हचिनसन और इसका सहायक ऑलिवर लंदन के मंत्रि-मंडल को सार्वजनिक नेताओं के विरुद्ध घृणित बातें लिख रहे थे और इस बात पर ज़ोर दे रहे थे कि उग्र दमन की नीति काम में लाई जाय। इस समय लंदन में उपनिवेशों के डॉक्टर फ्रैंकलिन थे, किसी तरह यह चिट्ठियाँ उनके हाथ में पड़ गईं। उन्होंने यह चिट्ठियाँ तुरंत बोस्टन

रवाना कर दीं, जिन्हें वहाँ की धारा-सभा में पढ़ा गया और जिनको सुनकर सदस्य जल उठे। तुरंत ही पार्लियामेंट को लिखा गया कि गवर्नर हचिनसन और इसका सहायक ऑलिवर अमरीका से बुला लिए जांय।

जब यह मामला प्रिवी कौंसिल में पेश हुआ, तो उपनिवेशों की तरफ़ से डॉक्टर फ्रैंकलिन और सम्राट् की ओर से एटार्नी जनरल मि० वेडरबर्न थे। वेडरबर्न ने अमरीका के बारे में बड़ी जली-कटी बातें कहीं, डॉक्टर फ्रैंकलिन को चोर तक कह डाला और कहा इसे इस देश, योरप और मनुष्य जाति की मानरक्षा के लिये गरम सलाक से दाग देना चाहिए। ऐसे व्यवहार पर डॉक्टर फ्रैंकलिन ने सभ्यता नहीं छोड़ी और वह हँसता ही रहा; लेकिन उसके हृदय में बड़ा गहरा घाव लग चुका था। उसने प्रतिज्ञा की कि वह जब तक इस अपमान का प्रतिशोध न करा लेगा, तब तक वह अपना गाऊन न पहनेगा।

Nearly Thirty years afterwards Charles fox reminded the house of Commans, 'I remember a time (he said) " when the whole of the Privy-Council Came away, throwing up their Caps, and exulting in an extra ordinary manner at a speach made by the present Lord Rosolya, (then her werder burn ; and An examination of Dr. franklin, in which that respectable Character was most uncommanly

उपनिवेशों ने चाय का इतना पूर्ण बहिष्कार किया कि ईस्ट इंडिया कंपनी का चाय का व्यवसाय ही चौपट हो गया और उसके गोदामों में एक करोड़ सत्तर लाख पाउंड चाय पड़ी सड़ने लगी। इसपर ब्रिटिश पार्लियामेंट ने एक और ऐक्ट बनाया, जिससे ईस्ट इंडिया कंपनी को किसी भी ब्रिटिश साम्राज्य के बंदरगाह में अमरीका की चाय भेजने पर कोई कर न देना पड़े। इससे पहले ईस्ट इंडिया कंपनी की चाय इंगलैंड से जाती थी, उसे वहाँ के बंदरगाह पर एक पाउँड चाय पर एक शिलिंग कर देना पड़ता था। अब अमरीकन बंदरगाहों पर तीन पैंस फ़ी पौंड कर देने पर भी पहले के नव पैंस फ़ी पौंड का फ़ायदा था। इसके हटाने से मंत्रि-मंडल को आशा थी कि ईस्ट-इंडिया कंपनी पहले से चाय अधिक सस्ती बेच सकेगी, इसलिये अपनिवेश खरीदने पर टूट पड़ेंगे और उनका प्रण 'मताधिकार नहीं तो कर नहीं' टूट जायगा। लेकिन वे यह तो जानते ही नहीं थे कि अमरीकन लोगों को आर्थिक लाभ से कहीं अधिक अपना सिद्धांत प्रिय था।

---

badgered. But we paid very dear for that splandid specimen of eloynence, and all its attendant tropes, figurs, metaphors and by per boles; for then Came the Bill; and in the end we lost all our American Colonies, a hundred millions of money, and a hundred thuround of our brave fellow subjects.

नई व्यवस्था बन जाने पर ईस्ट इंडिया कंपनी को विश्वस हुआ कि उपनिवेशों में उसके गोदामों की अब बहुत चाय खप जायगी। इस विचार से उसने कई जहाज़ चाय से भर कर उपनिवेशों के भिन्न-भिन्न बंदरगाहों को रवाना कर दिए। इससे एक बार फिर सारे उपनिवेशों में आँदोलन की लहर फैल गई। सारा देश एक भाव, एक निश्चय में सरा-बोर हो रहा था। जो भी लोभ में पड़कर अपने सिद्धाँत से गिर जाता, उसे देश का दुश्मन समझा जाता था। फ़िलाडेलफ़िया, न्यूयार्क और चार्लूसटन में बड़ी-बड़ी सभाएँ हुईं और निश्चय हुआ कि चाय कोई न सँभाले। फ़िलाडेलफ़िया और न्युयार्क ने तो अमरीका की हद में आने से पहले ही जहाजों को वापिस कर दिया। चार्ल्सटन में चाय उतर तो गई, लेकिन कोई भी उसे संभालने या कर देने के लिये नहीं आया, इसलिये वह कोठरियों में सड़ने के लिये पटक दी गई।

बोस्टन में चाय से भरे हुए जहाज़ सैनिकों की रक्षा में आ पहुँचे, लंगर डाल दिया गया और माल मँगानेवाले को हुक्म दे दिया गया कि वे बीस दिन में चाय उतार लें अन्यथा चाय पर कब्ज़ा कर के ज़बरन उतारी जायगी। इसपर बोस्टन-निवासियों की एक बड़ी मीटिंग हुई और निश्चय हुआ कि चाय को हरगिज़ न उतरने दिया जाय। जहाज़ के मालिकों को हुक्म दिया गया कि वे चाय वापिस ले जाँय,

लेकिन एक दफ़ा पोर्ट पर आया हुआ माल विना कलेक्टर के पास के वापिस नहीं हो सकता था और कलेक्टर चाहता था कि उन्नईस तारीख़ तक जब बीस दिन ख़तम होते थे पास देने से टाल-मटूल कर दी जाय-जिससे उसके बाद चाय बोस्टन-निवासियों की छातियों पर ज़बरन लादी जा सके। १८ तारीख़ को फिर नागरिकों की एक बड़ी सभा हुई और जहाज़ के मालिक को गवर्नर के पास चाय के वापिस ले जाने के लिये लिखित आज्ञा प्राप्त करने के लिये भेजा गया। परंतु रात को वह हाथ हिलाता हुआ चला आया; गवर्नर ने उसे आज्ञा नहीं दी।

अब तो बोस्टन-निवासियों को निश्चय हो गया कि दिन निकलते ही चाय उनके मत्थे मढ़ी जायगी और कर लगाने को पार्लियामेंट का अधिकार ज़बरन् स्थापित किया जायगा। अब तो एक ही मार्ग था और वह यह था कि वे चाय के संदूक तोड़ कर चाय को समुद्र में बहा दें। रात्रि के अंधकार में अट्ठारह युवक निवासी इंडियनों के भेष में जहाज़ पर चढ़ गए और चाय के संदूक खोल-खोल कर चाय को समुद्र के समर्पण कर दिया। यह सब बड़ी ही शांति से हुआ और फिर वे युवक चुप-चाप अपने-अपने घर आ गए।

बोस्टन पहले ही सम्राट् की आँखों में बहुत खटक रहा था, लेकिन जब उसने यह समाचार सुने, तो उसकी आँखों से ख़ून बरसने लगा। तुरंत ही पार्लियामेंट में पाँच अत्यंत

भयंकर बिल पेश किए गए, जो पिट और बर्क को छोड़कर सर्वसम्मति से ही पास हो गए। बोस्टन का बंदरगाह जब तक ईस्ट इंडिया कंपनी का नुक़सान न भर दे, तब तक के लिये बंद कर दिया गया, मसाशुसेट्स के सब अधिकार छीन लिए गए और उसकी जगह सम्राट् द्वारा नियुक्त समस्यों की कौंसिल नियत कर दी गई। यही नहीं, सिविल वायसराय को बुलाकर उसकी जगह जनरल गेज फ़ौजी को वायसराय और कमांडर-इन-चीफ़ बनाकर भेजा गया। चुनाव के दिनों को छोड़कर सब मीटिंगें ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दी गईं और निश्चय किया गया कि मसाशुसेट्स में जितनी सेना की आवश्यकता हो, उतनी सेना वहाँ रखने का पूरा अधिकार पार्लियामेंट को है।

मसाशुसेट्स की धारा-सभा ने बोस्टन के बंदरगाह को बंद करने के संबंध में पार्लियामेंट की चिट्ठी को बड़ी घृणा से सुना। सभी उपस्थित सदस्य इस अंधेर से क्रोधित हो उठे। सर्व-सम्मति से प्रस्ताव पास हुआ कि २४ मई व्रत और उपासना का दिन नियत किया जाय और उस दिन गिर्जें में प्रार्थना की जाय कि ईश्वर उन्हें ऐसी शक्ति दे कि स्वतंत्रता के आगामी युद्ध में एक विचार और एक निश्चय से वे काम कर सकें।

दूसरे दिन सुबह जब सब सदस्य सौम्यभाव से तर्क में लगे हुए थे, उसी समय लार्ड डनमूर ने कौंसिल-चेंबर में

उन्हें बुलाया और उनको संबोधित करते हुए कहा- 'सभापति और धारा-सभा के सभ्यो ! मेरे हाथ में एक कागज़ है, जो आपकी सभा की आज्ञा से प्रकाशित किया गया है। यह ऐसी भाषा में लिखा गया है, जिससे सम्राट् और ब्रिटिश पार्लियामेंट पर लाँछन लगता है, इसलिये यह मेरे लिये आवश्यक हो गया है कि मैं धारा-सभा को भंग कर दूँ। अतः मैं धारा-सभा को भंग करता हूँ।'

पहले की तरह इस बार भी धारा-सभा भंग तो हो गई, पर टूटी नहीं। वह दूसरे पुराने कमरे में उठ गई और वहाँ उसने घोषणा की कि बोस्टन-पोर्ट-बिल समस्त उत्तरीय अमरीका के अधिकारों और स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करने वाला है और निश्चय हुआ कि अब वे न केवल चाय का ही बहिष्कार जारी रक्खें, पर ईस्ट इंडिया कंपनी के सभी माल का बहिष्कार करें और एक उपनिवेश का अपमान सभी उपनिवेशों का अपमान समझें। अब यह भी आवश्यकता हुई कि सब उपनिवेश मिलकर ब्रिटिश की दमन नीति का सामना करें, इसलिये एक जनरल कांग्रेस-जिसमें सभी उपनिवेशों के प्रतिनिधि योग दें सकें, संगठित करने का निश्चय किया गया।

उन्होंने एक प्रतिज्ञा-पत्र लिखा कि पहली अगस्त से जब तक पार्लियामेंट हमारे अधिकारों को वापिस न दे दे, तब तक ग्रेटब्रिटेन से कोई संबंध नहीं रक्खेंगे। और हमारे इस

निश्चय में जो सम्मिलित न होंगे, उनसे भी सब पूर्ण असहयोग करेंगे।' यह प्रतिज्ञा-पत्र सारे प्रांत में घुमाया गया और सबसे दस्तख़त कराए गए।

मई में ही जनरल गेज बोस्टन पहुँच गया था और जिस दिन वह वहाँ पहुँचा उसी दिन वहाँ फौजी शक्ति का बड़ा भारी प्रदर्शन हुआ। सरकारी नौकरों, वकीलों और मालदार व्यवसायियों ने उसका स्वागत किया और राजभक्ति की शपथ ली।

यद्यपि न्यूयार्क और बोस्टन की सभाओं में पहले भी एक जनरल कांग्रेस बनाने के विषय में सम्मति प्रगट की गई थी, परंतु एक ही धारा-सभा ने पहली बार ऐसा निश्चय किया था। इस प्रस्ताव का भी उपनिवेशों ने स्वागत किया और यह निश्चय हुआ कि यह कांग्रेस ५ सितंबर को फ़िलाडेलफ़िया में की जाय। वर्जीनियाँ में यह समाचार पहुँचते ही धारा-सभा के २५ सदस्यों ने निश्चय कर अपने दस्तख़तों से एक सरकूलर निकाला कि पहली अगस्त को सब धारा-सभाओं के प्रतिनिधि जनरल-लीग का संगठन करने के विचार के लिये इकट्ठा हों और इस बीच में अपने-अपने देशवासियों से सलाह-मशविरा भी कर लें।

इधर ब्रिटिशवादियों (जी-हुजूरों) ने जनरल को गेज उसकाया कि वह इस सरकूलर को, जिसमें ब्रिटेन से असयोग की बात कही गई थी, गैर क़ानूनी करार करें जनरल गेज, जो

अपना अधिकार जमाने के लिये उतावला हो रहा था, उसने यह सलाह मान ली और घोषणा की कि जो कोई इसपर दस्तख़त करेगा या कुछ छापेगा उसपर क़ानूनी कार्यवाई की जायगी। देश ने भी इसका अच्छा जवाब दिया। देहातों में ब्रिटिश-वादियों का पूर्ण बहिष्कार प्रारंभ हो गया, इन लोगों से न कोई माल खरीदता था, न इनके हाथ बेचता ही था, चक्कीवाले इनका आटा नहीं पीसते थे, नालबंद इनके घोड़ों के नाल नहीं लगाते थे और हज्जाम इनकी हजामत नहीं बनाते थे, इससे घबड़ाकर वे देहात छोड़-छोड़कर बोस्टन में इकट्ठे होने लगे। उन्होंने यहाँ सैनिकों के नाम चिट्ठियाँ बाँटी-'सैनिकों! तुम्हारे सम्राट् और देश के शुभचिंतक तुमसे आशा करते हैं कि जैसे ही विप्लव हो, तुम इन लोगों को (नाम की एक लिस्ट) तलवार के घाट उतार दोगे, उनके मकान ढा दोगे और माल लूट लोगे,-आदि।'

अब उपनिवेशवासियों को निश्चय हो गया था कि ब्रिटिश राजनीतिज्ञों के सामने रोना-गाना सब व्यर्थ है, उन्हें तो अब कुछ कर दिखाना चाहिए। एक मित्र ने इंगलैंड से वाशिंगटन को सलाह दी कि अब की एक बार सम्राट् का ध्यान प्रार्थना-पत्र भेजकर उपनिवेशों की शिकायतों की ओर फिर आकर्षित करना चाहिए। उसका उत्तर वाशिंगटन ने दिया—"यदि मुझे तनिक भी सफलता की आशा होती, तो मैं अवश्य सम्राट् की सेवा में एक अत्यंत

नम्र और विनीत प्रार्थना-पत्र भेजकर तुम्हारे राजनीतिक भावों से सहयोग खुशी के साथ करता। परंतु क्या हमने इसकी पूरी तरह चेष्टा करके परीक्षा नहीं करली है? और कहाँ तक? क्या यह सूर्य की रश्मियों की तरह स्पष्ट नहीं है कि हमारे ऊपर कर लादने की एक निश्चित और नियमित नीति कार्य कर रही है? ईस्ट इंडिया कंपनी के नुक़सान को भरने की माँग पेश करने के पहले ही बोस्टन के लोगों की स्वतंत्रता और संपत्ति पर आक्रमण करना क्या इसका साक्षात् और स्पष्ट प्रमाण नहीं है कि वे क्या चाहते हैं! मसाशुसेट्स के अधिकार छीनने और अपराधियों को अभियोग चलाने के लिये देश-निकाला आदि कामों से क्या हमें यह मालूम नहीं होता कि शासक अपनी किसी भी प्रतिज्ञा पर स्थिर न रहने का निश्चय कर चुके हैं? तब क्या हमको ऐसी स्थिति में अपने सभी गुणों और शक्तियों की परीक्षा न करनी चाहिए?"

वाशिंगटन के सभापतित्व में फेयर फेक्स प्रदेश के प्रतिनिधियों की एक कमेटी की बैठक हुई। उसमें 'मताधिकार नहीं तो कर नहीं' के सिद्धांत की पुष्टि की गई और पार्लियामेंट के उन सभी कामों का विरोध किया गया-जैसे कर बढ़ाना, जूरी द्वारा अभियोगों का न्याय प्राप्त करने का अधिकार छीनना, इंगलैंड में उपनिवेशवासियों पर मुकद्दमे चलने का अधिकार, पोर्ट बास्टन का बंद करना, मसाशुसेट्स

के अधिकार छीनना, आदि। जब-जब धारा-सभाओं के अधिकारों पर कुठाराघात हो, और जब वे इसका विरोध करने के लिये विचार करने बैठें, तब-तब उन्हें तोड़ देना, उसी नीति के अंग हैं, जिसने उपनिवेश-वासियों को इस असहाय अवस्था में ला पटका है। साथ ही यह भी निश्चय हुआ कि जितना भी संभव हो सके-एक उपनिवेश दूसरे उपनिवेश से कार्य और भावों में ब्रिटेन से पूर्ण असहयोग करने में सहयोग करें। जो उपनिवेश, नगर या प्रांत जनरल कांग्रेस के निश्चय में सम्मलित न हो, अन्य उपनिवेश उससे भी पूर्ण असहयोग करें। कमेटी ने यह भी निश्चय किया कि सम्राट् को एक और विनीत प्रार्थना-पत्र भेजा जाय, जिसमें उपनिवेश के अधिकारों का समर्थन किया जाय और उन्हें सूचित कर दिया जाय कि यदि इन अधिकारों की रक्षा के लिये हमें कड़े साधन काम में लाने पड़े, तो इसके लिये हमें खेद होगा। हमें सम्राट् के व्यक्तित्व, उसके घराने और शासन-मंडल से वैसा ही प्रेम है, जैसा पहले था, अब भी हम ब्रिटेन से बिलकुल पृथक हो जाना नहीं चाहते और हमें आशा है कि उपनिवेशों की इन राजभक्त प्रजा को इतना विवश और असहाय नहीं बना दिया जायगा कि हमारे स्वामियों के सामने सिर्फ़ एक ही अपील-शक्ति-प्रदर्शन की सुनाई हो सकती है।

वाशिंगटन ने ब्रिटिश माल के बायकाट पर बहुत ज़ोर दिया। उसने कहा—मुझे तो पूर्ण विश्वास हो चुका है कि

हमें केवल उनकी (ब्रिटेन की) पीड़ा से ही सांत्वना मिल सकती है और मैं विचार करता हूँ, कम-से-कम विश्वास करता हूँ कि हम लोगों में इतना सार्वजनिक आचरण का अंश बच रहा है कि हम इस ध्येय को प्राप्त करने के लिये केवल अत्यंत आवश्यक जरूरतों को छोड़कर अन्य प्रत्येक चीज़ों का त्याग कर देंगे।

अन्य कितने ही प्रदेशों में भी वहाँ के प्रतिनिधियों की बैठक हुई और इसी तरह के प्रस्ताव भी पास हुए।

५ सितंबर को जोरजिया को छोड़कर सभी उपनिवेशों के इक्यावन प्रतिनिधि फिलाडेलफिया में जनरल कांग्रेस में सम्मिलित हुए। इनमें जानडिकिंसन, पेटरिक हेनरी, वाशिंगटन, राबर्ट लिविंगसटन, जान इटलेज वगैरह भी थे।

जनरल गेज ने लिखा—" यह समझ में नहीं आता कि यह संस्था, जिसमें इतने भिन्न और विषम हितों के लोग हैं, क्या निश्चय करेगी ? परंतु मुझे विश्वास दिलाया गया है कि, सदस्यों की प्रकृति से यह मालूम पड़ता है कि वहाँ बहुत ही गरम और जोरदार प्रस्ताव पास होंगे, क्योंकि उनका सदा से कार्य-क्रम ही यह रहा है कि वे ऊँची-ऊँची बातें करें, धमकी दें, डरावें। ब्रिटिश लोग दूसरे राष्ट्रों की राष्ट्रीय आकांक्षाओं को इसी

---

१ शक्ति का प्रदर्शन

दृष्टि-बिंदु से देखते हैं, गेज इस आँदोलन को केवल कुछ आँदोलनकारी लोगों का प्रयत्न ही समझता था, परंतु समय ने धीरे-धीरे उसके इस भ्रम को बिलकुल ही दूर कर दिया ।

यह पहला ही अवसर था कि बारह उपनिवेशों के चुने हुए योग्य नेता एक जगह मिलकर बैठे थे. इनमें-से अधिकांश एक—दूसरे को केवल नाम से—जानते थे । यद्यपि वैसे वे अपरचित थे, लेकिन जिस उद्देश्य से वे वहाँ एकत्रित हुए थे, वह अत्यंत महान था । कार्य्य-शीलता और बुद्धिमता में तीस लाख व्यक्तियों का अस्तित्व ही छिपा हुआ था, इसलिये वे शीघ्र ही एक तार में गुंथ गए थे ।

भिन्न-भिन्न उपनिवेशों से, जो प्रतिनिधि आए थे, उनकी संस्था एक नहीं थी, इसलिये पहला प्रश्न तो यही उठा कि वोटिंग किस तरह हो-प्रतिनिधियों के हिसाब से या उपनिवेशों के हिसाब से । पेटरिक हेनरी ने प्रांतीयता के भेद-भाव का विरोध करते हुए कहा—"अब तो सारी अमरीका एक साथ हो, एक ही स्थिति का सामना करने के लिये विवश कर दी गई है, तब फिर आपकी उपनिवेशों की सीमा और भूमि—भेद रह ही कहाँ जाता है ? यह भेद-भाव तो नष्ट हो ही चुका । वर्जीनियाँ, पेनसिलवेनियाँ, न्यूयार्क अथवा इंगलैंड का अब भेद-

भाव नहीं रहा । मैं वरजीनियन नहीं हूँ, अमरीकन हूँ। पर अंत में निश्चय हुआ कि एक उपनिवेश का एक वोट समझा जाय और कांग्रेस की सारी कार्य्यवाही बंद कमरे में हो और प्रस्तावों के अतिरिक्त अन्य बातें बाहर न जाने पावें ।

दूसरे दिन यह निश्चय हुआ कि प्रतिदिन कार्य्यवाही शुरू होने से पहले ईश्वर-प्रार्थना हो । इसपर यह शंका उठाई गई कि चूंकि प्रतिनिधि भिन्न—भिन्न मतों के हैं, इसलिये संभव है वे सब एक प्रार्थना में सम्मलित न हो सकें । इसपर मि० सेमुऐल एडमस ने कहा—'मैं तो किसी भी सभ्य मनुष्य के साथ, जिसमें पवित्रता और सदाचार हो, प्रार्थना करने को तैयार हूँ। फिर उसके कपड़े चाहे जैसे हों । हाँ, वह देश का मित्र होना चाहिए' सब सदस्यों ने इस विषय में धार्मिक मत-भेद ताक पर रख दिया और प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया ।

उसी दिन उनके पास यह अफ़वाह पहुँची कि बोस्टन तोपों से उड़ा दिया गया, इससे उनमें बड़ी सनसनी फैल गई । दूसरे दिन सभा-भवन में प्रतिनिधि इकट्ठे हुए । पादरी डच ने बाइबिल से प्रार्थना पढ़ी-'हे प्रभु ! मेरे दुःखों को उन तक पहुँचा, जो मुझे पीड़ित करते हैं, उनसे लड़, जो मेरे विरुद्ध लड़ते हैं । 'ढाल और-(Bucklar) सँभाल और मेरी सहायता के लिये उठ खड़ा हो ।'

'भाला भी खींच ले और उनका मार्ग रोक, जो मुझे मारना चाहते हैं। मेरी आत्मा तक अपना संदेश पहुँचा कि मैं तेरा रक्षक हूँ आदि।'

प्रार्थना का प्रत्येक शब्द उपस्थित प्रतिनिधियों के हृदय के उद्गार प्रकट करता था। जॉन एडमस ने अपनी स्त्री को लिखा-'तुम्हें ध्यान होना चाहिए कि बोस्टन के उड़ाए जाने के भीषण समाचार के सुनने के बाद यह पहला ही प्रातःकाल था, मैंने उपस्थित लोगों को इससे अधिक प्रभान्वित होते हुए कभी नहीं देखा। ऐसा मालूम होता था, मानों ईश्वरीय आदेश से ही यह प्रार्थना उस दिन पढ़ी गई हो...... इससे प्रत्येक मनुष्य का हृदय विह्वल हो उठा।' वाशिंगटन का हृदय तो अपने को इतना भूल गया कि अन्य लोग तो उठ बैठे, परंतु वह बहुत देर तक घुटने ही टेके बैठा रहा।

बोस्टेन के उड़ाए जाने की ख़बर स सभी के हृदय बहुत उत्तेजित हो गए। वे भिन्न-भिन्न उपनिवेशों मत और विचारों के थे। परंतु यहाँ तो सब मतभेद हट गया था। वे एक ही राजनीतिक कुटुंब में थे, उनके भाव एकही ध्येय से प्रेरित हो रहे थे और उनमें एक-दूसरे के लिये पूरी समवेदना थी। बोस्टन के समाचार ने तो उन्हें एक ही सूत्र में और भी अधिक मज़बूती से बाँध दिया था।

कांग्रेस का अधिवेशन बराबर एकयावन दिन तक होता रहा एडमस के शब्दों में 'प्रत्येक विषय पर बड़ी सौम्यता, बारीकी

और छानबीन के साथ विचार उसी तरह किया गया जैसे महारानी पेलीज़ाबेथ की प्रीवी कौंसिल करती थी'* इसने जो भी पत्र या काग़ज़ प्रकाशित किए, वे राजनीतिक बुद्धिमता और दूरदर्शिता से भरे हुए थे। हाउस आफ़ लार्ड्स में लार्ड चटहम इस विषय पर बोलते हुए अपने भावों को न रोक सके और कहा–'जब आप उन काग़ज़ों को, जो हमें अमरीका से भेजे गए हैं–पढ़ेंगे, तब आप उनकी बुद्धिमता, शील और दृढ़ता का विचार करेंगे, तब आपके हृदय में उनके आंदोलन के लिये श्रद्धा पैदा होगी और आप उसे अपना ही आँदोलन बना लेना चाहेंगे। मेरे विचार में मैं तो घोषणा करना और निश्चय से करना चाहता हूँ, कि संसार के महान राष्ट्रों में कोई भी राष्ट्र या सीनेट नहीं है, जो ऐसी कठिन और उलझी हुई स्थिति में, इससे अच्छी तरह खड़ा हो सकता, जिस तरह कि फिलाडेलफ़िया की जनरल कांग्रेस में इकट्ठे हुए उपनिवेशों के प्रतिनिधि खड़े हो सके हैं।'*

प्रत्येक उपनिवेशों से दो प्रतिनिधियों की एक कमेटी ने प्रस्ताव बनाए, जिसे काँग्रेस ने स्वीकृत किया। इनमें उनके स्वातंत्र्य और संपत्ति के संबंध में प्राकृतिक अधिकारों तथा ब्रिटिश प्रजा के हैसियत से अपने स्वत्वों का समर्थन

---

* Correspondance and Diary of J. Adams Vols. II & IX

किया गया था। उन्होंने पार्लियामेंट के व्यवसाय-संबंधी कुछ क़ानूनों को तो मान लिया, लेकिन निश्चय किया कि उपनिवेशों पर भीतर या बाहर कर लगाने का अधिकार उपनिवेशों की धारा-सभाओं को है, पार्लियामेंट को नहीं।

जूरी द्वारा न्याय प्राप्त करने, वक्तृत्व की स्वतंत्रता और धारा-सभा की शक्ति और अधिकारों की घोषणा की गई। निश्चय किया गया कि शांति के दिनों में किसी उपनिवेश में वहाँ की धारा-सभा की बिना सम्मति के स्थिर सेना रखना क़ानून के ख़िलाफ़ है। सम्राट् की नियत की हुए कौंसिल द्वारा सदस्यों की कौंसिल का उपनिवेशों पर लादना अनियमित और असंगठनात्मक है।

इसके बाद उन सभी क़ानूनों-जैसे शक्कर का क़ानून, चाय का क़ानून, स्टाँप-ऐक्ट, सेना संबंधी दो क़ानून, बोस्टन-पोर्ट-बिल, मसाशुसेट्स के शासन-संबंधी नवीन व्यवस्था, क्युबेक ऐक्ट सभी का घोर विरोध किया गया। इन क़ानूनों के संबंध में घोषणा की गई-"इन अनुचित क़ानूनों और व्यवस्था के सामने अमरीकन माथा नहीं झुका सकते। लेकिन इस आशा में कि ग्रेटब्रिटेन के नागरिक हमें उन अधिकारों को वापिस दे देंगे, जिससे दोनों ही देशों की भलाई और उन्नति हो, हम अभी निम्न शांतिमय साधनों को व्यवहार में लाना ही निश्चय करते हैं।"

"पहला—यह प्रतिज्ञा करना कि हम न तो कोई माल

ब्रिटिश साम्राज्य से मँगाएँगे, न व्यवहार करेंगे और न उन्हें कोई माल अपने देश से रवाना करेंगे।

"दूसरा—ग्रेट ब्रिटेन के लोगों के लिये एक अपील और ब्रिटिश अमरीका के लोगों के लिये एक मेमोरियल तैयार करना।"

"सम्राट् को भी एक राज-भक्ति-पूर्ण पत्र लिखना।"

यही नहीं, साथ ही जब तक पूरे अधिकार वापिस न किए जाँय, तब तक नई सरकार के आधीन न तो कोई नौकरी करें और न किसी तरह का सहयोग ही करे। इसके विपरीत जो ब्रिटिश शासकों से सहयोग करेंगे, उन्हें बड़ी घृणा से देखा जायगा और उस स्वेच्छाचारिता का, जो अमरीका में ईश्वर, प्रकृति और शांति को नष्ट कर रहा है, सहायक समझा जायगा। सारे उपनिवेशों में कमेटियाँ क़ायम हो गईं, जो इस निश्चय के विरोधियों के नाम लिखती थी और प्रकाशित करती थी। कांग्रेस ने यह भी घोषणा की कि हम पहली दिसंबर के बाद न तो कोई ग़ुलाम बाहर से मंगाएँगे और न मँगाया हुआ ख़रीदेंगे और इसके बाद इस ग़ुलामी-प्रथा को बिलकुल ही तोड़ देंगे' गुलामी-प्रथा के तोड़ने के पक्ष में वर्जीनियाँ की धारा-सभा पहले भी कई प्रस्ताव पास कर चुकी थी, परंतु सम्राट् के रद्द करने के अधिकार से यह प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिए गए थे।

कांग्रेस समाप्त हुई। प्रतिनिधि नवीन भावों, नवीन शक्ति,

नवीन विचारों और नवीन संदेश को लेकर अपने-अपने घर लौट गए। घुड़-दौड़, खेल-तमाशे, नाच और सब तरह के जलसे एक दम बंद कर दिए गए और यह नवीन संगठित राष्ट्र आगामी क्रांति के लिये गंभीरता से तैयारी करने में जुट गया।

इधर जनरल गेज ने शासन की डोर हाथ में तो ले ली थी, परंतु उसकी यह समझ में नहीं आता था कि वह इन दृढ़-प्रतिज्ञ लोगों को किस तरह अपने कब्ज़े में करे। यदि जनता अपने मस्तिष्क पर कब्ज़ा न रख सकती और आवेश में ऊल जलूल काम करने लगती, तब तो उसका काम कुछ सहज हो जाता, पर उसके सब कार्य तो बड़े ही सोच-विचार, समझदारी और शांति से होते थे, इससे उसको कोई मौका ही न मिलता था।

शासकों के सभी दमन के अस्त्र खाली जा रहे थे। बंदरगाहों में जहाज़ों की भीड़ लग गई थी और नगरों में सैनिकों के जत्थे-के-जत्थे चारों तरफ़ दिखाई पड़ते थे। पोर्ट-बिल ने सारे व्यापार को नष्ट कर दिया था। गोदाम बंद हो गए, सड़कों पर घास ऊग आई और बाज़ारों में मुर्दनी छा गई। धनी ग़रीब हो रहे थे और ग़रीब बेकार बैठे थे, लेकिन फिर भी लोगों के दिल निर्बल नहीं हुए थे। वहाँ न हुल्लड़-बाजी थी, न मार-पीट ही। वहाँ हर काम नियम और ढंग से हो रहा था। नागरिकों की सभाएँ हो रही थीं,

जहाँ पर प्रसिद्ध प्रसिद्ध नेता सार्वजनिक अधिकार और उनके रक्षा करने के साधनों पर विचार करते थे।

इन सभाओं के कार्य से सरकार इतनी भयभीत हुई कि सरकार ने घोषणा की कि इस तरह की सभाएँ करना ग़ैर-क़ानूनी है और पहली अगस्त के बाद मीटिंग करने-वालों पर अभियोग चलाया जायगा। पर चारों तरफ़ इस क़ानून की अवज्ञा की गई और दिन-दिन भर सभाएँ होती रहीं। जनरल गेज सैनिकों की सहायता से इन सभाओं को भंग करने में डरता था। क्योंकि यह लोग जो इस समय अहिंसात्मक थे, इस तरह विवश किए जाने पर अस्त्र उठाने को भी तैयार हो सकते थे। इस तरह यह सभाएँ न रुक सकीं और इसकी उपस्थिति बढ़ती ही गई।

बोस्टन का एक ब्रिटिश अफ़सर मेकेंज़ी ने, जो पहले वाशिंगटन की मातहती में काम कर चुका था, वाशिंगटन को लिखा—"शस्त्रधारी मनुष्यों की यह अनगिनती और विद्रोह पूर्ण मीटिंगें, उनके प्रांत के सर्वश्रेष्ठ सदाचारी व्यक्तियों के प्रति अनुदार और असभ्यतापूर्ण लांछन और उन्हें अपने प्राण बचाने के लिये भागने को विवश करना, उनको बार-बार धमकियाँ, सैनिकों की अवहेलना आदि कारण इस बात के लिये पर्याप्त हैं कि जनरल गेज नगर की पूर्ण रक्षा करने के लिये तैयार हो जाय, जो हमने अपनी

पूरी शक्ति से प्रारंभ भी कर दिया है और जिसे हम शीघ्र ही पूरा कर लेंगे।"

वाशिंगटन ने इसका जवाब दिया, "तुम जब मसाशुसेट्स के लोगों के कामों की निंदा करते हो, उस समय तुम्हारा तर्क परिणाम के ही आधार पर होता है, कारणों पर नहीं, अन्यथा तुम इन लोगों पर आश्चर्य न करते। जिन्हें प्रतिदिन स्वेच्छाचार नीति के नए-नए दृष्टांत मिलते हैं, जिनके शासकों का उद्देश्य उनके देश की व्यवस्था और क़ानून को उलट देना है और मानव जाति के सबसे आवश्यक और अमूल्य अधिकारों को भंग कर देना है। तुम यह नहीं जान सकते कि यह लोग इस तरह उत्तेजित किए जाने पर भी किस कठिनाई से अपने को भयंकर उत्पात और उपद्रव के कार्यों के करने से रोकते हैं।

तुम जिस दृष्ट-बिंदु से इन बातों को देखते हो, मुझे तो उससे बिलकुल भिन्न बातें दिखाई देती हैं और यद्यपि स्वार्थी लोगों ने तुम्हारे हृदय पर यह जमा दिया है कि यह लोग बाग़ी हैं, पूर्ण स्वतंत्रता के लिये उठ खड़े हुए हैं, तुम्हें क्या-क्या नहीं समझाया गया है। पर मुझे आशा है कि तुम मुझे यह कहने की स्वीकृति दोगे कि ऐसा करके उन्होंने तुम्हारा बड़ा अपमान किया है..........मेरा विचार है कि मैं इसकी घोषणा कर सकता हूँ कि यह उस शासन-संस्था (मसाशुसेट्स की धारा-सभा) या इस देश

में किसी भी संस्था की यह इच्छा नहीं है कि वह मिलकर या अलहिदा पूर्ण स्वतंत्रता के लिये उद्योग करें, परंतु तुम साथ ह। इसपर भी पूर्ण विश्वास कर सकते हो कि उनमें-से कोई भी अपने बहुमूल्य स्वत्वों और अधिकारों को, जो प्रत्येक समृद्धशाली स्वतंत्र-राष्ट्र के लिये आवश्यक है और जिसके बिना जीवन, स्वाधीनता और संपत्ति बिलकुल ही अरक्षित हो जाती है, कभी भी छोड़ना स्वीकार न करेगा।

"महोदय! यह तो आपकी पार्लियामेंट द्वारा अमरीका और विशेषकर मसाशुसेट्स के विरुद्ध पास किए हुए कुछ क़ानूनों का ही परिणाम है। क्या यह उन मनुष्यों के लिये विचित्र बात है? वे उस प्रहार से बचना चाहते हैं। यदि वे उस प्रहार को न रोक सकें, तो उसको बढ़ने से रोकने की चेष्टा करें और आत्मरक्षा के लिये तैयार हो जायँ। निस्संदेह मैं तो इसे कोई आश्चर्य नहीं समझता और यदि मंत्रि-मंडल इन मामलों के अंत तक पहुँचाने के लिये व्यग्र है, तो मेरी सम्मति में इस अवसर पर इतना रक्तपात होगा; जितना उत्तरीय अमरीका के इतिहास में अब तक कभी नहीं हुआ और इस महान देश की शांति पर इतना गहरा घाव लग जायगा कि समय भी उसे अच्छा न कर सकेगा और उसकी स्मृति न हटा सकेगा।" *

---

* Give me leave to add, as my openion that more blood will be spilled on this occassion, if the ministry

कांग्रेस में बोस्टन को तोपों से उड़ा देने की जो अफ़वाह उड़ी थी, उसका कारण यह था कि जनरल गेज ने बोस्टन में ख़ूब सेना इकट्ठी कर ली थी। सेना के इस अतिशय प्रदर्शन-से बोस्टन-निवासियों में ब्रिटिश-शक्ति के प्रति बड़ी घृणा उत्पन्न हो गई और उनके हृदय शस्त्र उठाने के लिये विवश हो गए।

गेज पहली सितंबर को घोषणा कर चुका था कि अक्टोबर मास में धारा-सभा के लिये सलेश में नए सदस्यों का चुनाव होगा, लेकिन फिर कांग्रेस के बाद आंदोलन का उग्र रूप देखकर चुनाव के इस निश्चय को रद्द कर दिया। परंतु जनता ने इस दूसरी आज्ञा को नहीं माना और चुनाव किया। इन चुने हुए सदस्यों में नव्वे सदस्य निश्चित समय पर धारा-सभा में इकट्ठे हुए। वे दिन भर गवर्नर के आने, शपथ लेने और अधिवेशन प्रारंभ करने की बाट जोहते रहे। जब वह आया, तो उन्होंने प्रस्ताव किया कि यह चुने हुए सदस्य प्रांतीय कांग्रेस में

---

are determined to push matters to extremity, than history has ever yet furnished-instances are in the annals of North America; and such a vital wound will be given to the peace of this great Country, as time itself can not cure it or mark—cote the remembrance sparks.—Washington's writing vol. II page 899

परिश्चित हो जावें। इसके सभापतित्व के लिये जान हेनकाक को चुना गया।

यह स्वयं-संगठित हुई संस्था अपना हेड क्वार्टर कनकोर्ड में उठाकर ले गई और उसने जनरल गेज से सैनिक प्रदर्शन, युद्ध के साधन इकट्ठे करने तथा बोस्टन निवासियों की स्वतंत्रता और संपत्ति के अपहरण करने की चेष्टा करने के लिये जवाब-तलब किया। जनरल गेज ने जो उत्तर दिया, वह संतोषप्रद नहीं था। इसपर प्रांतीय कांग्रेस ने रक्षा के लिये मिलीसिया (सशस्त्र स्वयंसेवक सेना) संगठित करने का निश्चय किया और उसके लिये अफ़सरों की नियुक्ति भी की गई। एक रक्षक कमेटी बनाई गई और उसको अधिकार दिया गया कि वह मिलीसिया का संचालन करे, जहाँ जरूरत हो, उन्हें भेजे और उनके अफ़सर नियत करे। उनके लिये जरूरी सामान इकट्ठे करने और पहुँचाने के लिये एक और कमेटी बनाई गई, जिसका नाम सप्लाई कमेटी रक्खा गया।

इस तरह मिलीसिया की भरती और शिक्षा होने लगी। झुंड-के-झुंड स्वयंसेवक इकट्ठे होने लगे और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि वे सूचना मिलने पर जितनी ही शीघ्र संभव हो सकेगा अस्त्र-शस्त्र सँभाल कर ज़रूरत के वक्त इकट्ठे हो जायँगे। सप्लाई-कमेटी के अधिकार में कनकोर्ड और वेरसेस्टर में बहुत-सी रसद और लड़ाई का सामान इकट्ठा हुआ।

यह हवा और भी प्रांतों में फैलने लगी । वर्जीनियाँ में तो बहुत दिनों पहले ही से अपने ख़र्च पर कुछ संगठित· सशस्त्र रक्षक रखने का रिवाज़ था । इनका एक विशेष प्रकार का यूनीफ़ार्म भी था और यह अपने अफ़सरों को भी स्वयं ही चुन लेते थे, पर वे अब तक राज्य के मिलीसिया क़ानून को मानते चले आते थे। अब उन्होंने अपने को वाशिंगटन के हाथों में दे दिया और उसकी आज्ञा मानने लगे।

वर्जीनियाँ में जब द्वितीय परिषद् हुई, तो पेटरिक हेनरी ने मिलीसिया शक्ति को संगठित करने, उन्नति देने और उपनिवेश की रक्षा के लिये तैयार होने के लिये प्रस्ताव पेश किया। उसने कहा-"सरकार के पास अब प्रार्थना-पत्र भेजना अथवा जो प्रार्थना-पत्र भेजे गए हैं, उनके परिणाम को देखने के लिये रुकना व्यर्थ है। अब गिड़गिड़ाने का समय गया। अब तो काम करने का समय है। सभापति महोदय! अब तो हमें लड़ना चाहिए" उसने फिर जोरों से कहा, महोदय! मैं फिर दोहराता हूँ कि हमें लड़ना चाहिए। अब हमारे लिये तो केवल शस्त्रों के ईश्वर से अपील करना ही बच रहा है।"

जनरल गेज ने आज्ञा दी कि इन सार्वजनिक बारूदखानों से सब गोला-बारूद छीनकर बोस्टन में इकट्ठा किया जाय। ऐसा ही एक बारूदख़ाना चार्लसटाऊन के उत्तर-पश्चिम में मेडफोर्ड और कैंब्रिज के बीच में था। ब्रिटिश सैनिकों की

दो टुकड़ी रात में चुपचाप नावोंपर बैठ कर गई और बहुत-सा गोला-बारूद छीनकर किले में ले आई। प्रातः काल ही यह ख़बर समीप के सब देहातों में फैल गई और शास्त्र ले-ले कर हजारों देश-भक्त कैंब्रिज में इकट्ठे हो गए और बड़ी ही कठिनाई से उन्हें बोस्टन पर अपनी गोला-बारूद वापिस लाने के लिये धावा करने से रोका जा सका। इसी गड़बड़ में देहातों में ख़बर उड़ी कि ब्रिटिश सैनिक जहाज़ों पर-से बोस्टन को उड़ाने के लिये गोले छोड़ रहे हैं और नगर-निवासियों को गोलियों का शिकार बनाया जा रहा है। सारा देश अस्त्र-शस्त्र सँभाल कर तैयार हो गया। जनरल गेज ने इसपर बोस्टन की नाके-बंदी कर दी और सैनिकों के लिये खाइयाँ खोदने की आज्ञा दे दी।'

बोस्टन में ब्रिटिश सैनिकों की संख्या ४००० हो गई थी और अब जी-हुजूरों के भड़काने पर जनरल गेज देश-भक्तों पर अपनी पूर्ण शक्ति से प्रहार करना चाहता था। अब वह चाहता था कि कनकोर्ड-जो बोस्टन से १८ मील पर था और जहाँ जनता ने बहुत गोली-बारूद इकट्ठा कर रक्खी थी, यकायक धावा करे और गोली-बारूद और रसद लूट ले। इस आक्रमण की तैयारी बड़ी ही गुप्त रीति से की गई। बोस्टन से जानेवाली सड़कों पर सैनिक तैनात कर दिए गए, ताकि इस आक्रमण की ख़बर देहातों में

न पहुँच जाय। सेना ले जाने के लिये नावें तैयार कर लो गईं। रात में जनरल गेज ने हुक्म दिया कि कोई मनुष्य नगर छोड़कर न जाने पावे और करीब दस बजे कर्नल स्मिथ के आधिपत्य में कोई आठ सौ यानी सौ नावों से सैनिक कैंब्रिज जा पहुँचे, जहाँ से वे चुपचाप कनकोर्ड तक पहुँच जाना चाहते थे।

परंतु जनरल गेज ने जैसा सोचा था, यह तैयारियाँ बिलकुल गुप्त न रह सकीं। रक्षा-कमेटी के एक सदस्य डॉक्टर जोज़ेफ वारेन ने नावों और सेना की इस तैयारी को देखा और वे ब्रिटिश शासकों की मंशा को भाँप गए। उन्होंने इसकी सूचना तुरंत ही जान हेनकॉक और सेमुएल एडमस को भेजी, जो लेक्सिंगटन प्रांतीय कांग्रेस में उपस्थित होने के लिये गए हुए थे। रक्षा-कमेटी को संदेह हुआ कि यह कनकोर्ड में बारूदखाने पर धावा मारना चाहती है, इसलिये उसने आज्ञा दी कि गोलाबारूद छिपा दिया जाय और रसद हटा दी जाय।

१८ तारीख़ को रात को डॉक्टर वारेन ने दो दूतों को दो भिन्न-भिन्न मार्गों से जनता को यह सूचित करने के लिये भेजा कि सरकारी फ़ौजें आक्रमण करने के लिये चल पड़ी हैं। जनरल गेज का जिस समय हुक्म हुआ कि बोस्टन से कोई आदमी बाहर न जाने पावे, उससे कुछ ही देर पहले ये दूत वहाँ से चल दिए थे। उसी वक्त एक गिर्जेघर की ऊपरी खिड़की

में एक लालटेन बाँध दी गई, जिससे देशभक्तों को अलार्म मिल गया और उन्होंने चारों तरफ़ लोगों को सजग करने के लिये दूत भी दौड़ा दिए?

इधर कर्नल स्मिथ के सैनिक एक अनजान ऊजड़ रास्ते से चले जा रहे थे, उन्हें बीच-बीच में दल-दल और पानी को पार करना पड़ता था, इससे उन्हें आगे बढ़ने में बड़ी देर होती जाती थी। अभी यह कुछ ही मील गए होंगे कि हवा में बंदूकों के छूटने और गाँवों से घंटे बजने के कारण यह मालूम होगयाकि देहातवालों के पास उनके आक्रमण का समाचार उनके आने के पहले ही पहुँच चुका है और लोग इकट्ठे भी हो रहे हैं।तब स्मिथ ने जनरल गेज को लिखा कि वह अधिक सहायता भेजे, इसपर मेजर पिटकेरिन सैनिकों के छ दस्ते लेकर स्मिथ की सहायता को चल पड़ा और उसके मार्ग में जो भी पड़ गया उसको उसने पकड़ लिया। जब वह लेक्सिंगटन से डेढ़ मील रह गया, तो एक राष्ट्रीय घुड़सवार ने दौड़कर नगर को ख़बर दी कि लाल कोटवाले * आ रहे हैं। इसपर डुगडुगी पीटी गई और फ़ायर किए गए। गाँव में पिटकेरिन के पहुँचने के पहले ही प्रायः सत्तर या अस्सी सशस्त्र मनुष्य गिर्जे के पास इकट्ठे हो गए थे। यह उस 'रक्षक-सेना' के सैनिक थे, जिन्होंने ब्रिटिश फौजों के अत्याचार को शस्त्रों की सहायता से रोकने की शपथ ली थी। पिटकेरिन ने अपने सैनिकों को

---

* ब्रिटिश सेना की वर्दी लाल थी।

गोलियाँ भर कर तैयार रहने को कहा और स्वयं तलवार चमकाता हुआ आगे बढ़ा और विद्रोहियों को हट जाने की आज्ञा दी। 'भाग जाओ नीचो! अपने शस्त्र डाल दो और भाग जाओ!' लेकिन किसान ज़राभी विचलित न हुए। इसपर ब्रिटिश-सेना ने आग बरसाना शुरू किया और जब धूआँ साफ़ हुआ! तो आठ अमरीकन मरे पड़े मिले, बाकी तितर-बितर हो गए थे। विजय में मत्त ब्रिटिश-सैनिकों ने जयध्वनि की। हवा में तीन बाढ़ बंदूकों की छोड़ी गई और वे आगे बढ़े। यहीं स्मिथ भी अपने सैनिकों को लेकर आ गया था।

कनकोर्ड में पिछली रात को जब लोग निद्रा की गोदी में झूल रहे थे, यह ख़बर पहुँची। गिर्जे के घंटो से सारा गाँव जग उठा और सब लोग एक जगह इकट्ठा होकर विचारकरने लगे। मिलीसिया और 'मिनिट मेनों' ने शस्त्र सँभाले और परेड ग्राउँड़ की ओर दौड़ पड़े। सूर्य निकलते ही ब्रिटिश सेना की संगीनें चमकती हुई दिखलाई देने लगीं। इन सैनिकों ने गोली-बारूद पर कब्ज़ा करने की चेष्टा की, पर अधिक सफलता नहीं मिली। क्योंकि बहुत-सा गोला-बारूद और रसद हटाई जा चुकी थी।

इधर लेक्सिंगटन के समाचार देहातों में फैल रहे थे। किसान अपने खेत छोड़-छोड़कर भागे चले आते थे। जब ब्रिटिश सेना अपना काम कर चुकी, तब उसे लौटने का हुक्म हुआ। जब यह सैनिक उस सड़क पर आए, जो जंगल में

होकर जाती थी, तब इनपर दोनों तरफ़ से आग बरसने लगी। झाड़ियों और पेड़ों पर छिपे हुए सशस्त्र अमरीकन अँगरेजी सेना पर गोलियाँ दाग रहे थे। ब्रिटिश सैनिकों ने फ़ायर किए और बागियों को बाहर निकालने की कोशिश की। ज्योंहीं समय मिलता था, त्योंहीं और आक्रमणकारी आ जाते थे और फिर तो खुलेतौर पर आक्रमण होने लगा। ब्रिटिश सैनिक चोट खा-खाकर गिर जाते थे, बहुत-से सैनिक मारे गए, बहुत—से थककर गिर पड़े और बाकी इन घायल और थके हुए सैनिकों को अपनी क़िस्मत पर छोड़कर आगे बढ़ने लगे। लेक्सिंगटन के पास स्मिथ घायल हुआ और बोस्टन पहुँचना उसे असंभव मालूम होने लगा। यदि इस समय लार्ड पर्सी अपनी सेना लेकर सहायतार्थ न आ गया होता, तो पिटकेरिन का एक भी सैनिक न बच सकता। लार्ड पर्सी इस विचार से आया था कि वह विद्रोहियों को मजा चखा सकेगा, परंतु यहाँ तो ब्रिटिश सेना की ही बुरी हालत थी—सैनिक मूर्छित होकर गिरे पड़ते थे और अमरीकनों की शक्ति बढ़ती ही जाती थी। अंत में उसे इसी में संतुष्ट होना पड़ा कि वह किसी तरह जान बचाकर बोस्टन लौट जावे।

लार्ड पर्सी ने सैनिकों को आराम करने के लिये कुछ समय देकर बोस्टन की ओर लौटना आरंभ किया। जैसे ही उसके सैनिक थकने लगे, वैसे ही सेना के पीछे और दाएँ-

बाएँ से आक्रमण होने लगा। इससे ब्रिटिश सैनिक बड़े बीभत्स हो गए और उन्होंने लेक्सिंगटन के घरों और मकानों में आग लगा दी और रास्ते में जो बस्ती पड़ी, उनको लूट लिया और उनके निवासियों को तरह-तरह से तंग करने लगे। इससे अमरीकन सशस्त्र स्वयंसेवकों का क्रोध और भी बढ़ गया। वे ब्रिटिश सेना पर आक्रमण करने लगे, जिससे उसका लौटना मुश्किल हो गया। उनकी संख्या सैनिकों के मरने और घायल होने के कारण घटने लगी और लार्ड पर्सी तो गोली से मरते-मरते बचा। सूर्य डूबते डूबते ब्रिटिश सैनिक चार्लसटाऊन पहुँचे, इस समय उनके कोई ३०० सैनिक मर कर या घायल होकर पीछे छूट गए थे, लेकिन अब भी उनकी दुर्दशा का अंत नहीं हुआ था। राक्सबरी, डोरचेस्टन, मिल्टन सभी जगह से राष्ट्रीय मिलीशिया बढ़ी चली आ रही थी। ब्रिटिश सैनिकों ने तोपों के मुँह उनकी तरफ़ कर दिए, पर वे बीर डरे नहीं और पूरी शक्ति से आक्रमण करने लगे। राम-राम कहकर ब्रिटिश सेनाएँ बोस्टन में लौट सकीं और वे वहाँ पहुँचते-पहुँचते इतनी थक गईं थीं कि ज़मीन पर गिर कर कुत्तों की तरह हाँफने लगीं।

मसाशुसेट्स की इस विजय की ख़बर जब देहातों में पहुँची, तो जोश का समुद्र और भी उमड़ने लगा। अब तक जिन लोगों को यह विश्वास था कि ब्रिटिश अजय हैं, उनका यह डर जाता रहा। इसका सबसे अधिक प्रभाव उन अमरीकन

सैनिकों पर पड़ा, जो गत फ्रेंच-युद्ध में लड़ चुके थे। एक आदमी घोड़े पर बैठा हुआ डुग्गी पीट-पीट कर लेक्सिंगटन के हत्याकांड की सूचना लोगों को दे रहा था। कर्नल पुटनम इस समय अपने खेत पर अपने लड़के के साथ काम कर रहा था, उसने ज्योंहीं यह सुना, तो उसने अपने हाथ से हल डाल दिया औ उन्हीं खेत के मैले कपड़ों से घोड़े पर सवार होकर चल दिया और लड़के को घर भेज दिया कि वह इसकी सूचना घरवालों तक पहुँचा दे। इस तरह के भाव सारे देश में फैल गए थे।

वर्जीनियाँ में भी मंत्रि-मंडल की आज्ञा के अनुसार लार्डडनमूर ने प्रांत के सभी लड़ाई के सामान को छीन लिया। इसपर चारों तरफ़ यह समाचार फैल गए कि अब पाशविक शक्ति उपनिवेशों की कमर तोड़ने के लिये ब्रिटिश तैयार हो गई है। चारों तरफ़ यही आवाज़ सुनाई देती थी कि अब शस्त्र उठाने चाहिए। वाशिंगटन से सभी को आशा थी कि अब इस युद्ध में वह उनका नेतृत्व ग्रहण करेंगे। वाशिंगटन के पुराने साथी हफ़ मर्सर ने थोड़े-से ही समय में ७०० मनुष्यों को इकट्ठा कर लिया और उन्हें थोड़े ही समय में सैनिक शिक्षा से संगठित कर दिया।

वाशिंगटन को जब लेक्सिंगटन के समाचार मिले, तो उसके हृदय पर बड़ा आघात पहुँचा। इससे उसके हृदय को कितना दुःख हुआ, यह इस पत्र से प्रगट होता है, जो उसने अपने एक

मित्र विलियम फेयरोक्स को इंगलैंड में लिखा था:—

"यह स्मरण कर हृदय को कितनी पीड़ा होती है कि भाई की तलवार भाई के ही गले में भोंकने के लिये म्यान से बाहर निकल पड़ी है और अमरीका की शांतिमय और सुखपूर्ण भूमि या तो रक्त से सींची जानेवाली है अथवा ग़ुलामों से बसाई जाने वाली है......।

(५)

स्वतंत्रता की घोषणा

१० मई को फ़िलाडेलफ़िया में सर्वदेशीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। यद्यपि उस समय इंगलैंड और उपनिवेशों के बीच में पूरा मनोमालिन्य पैदा हो गया था, परंतु इस कांग्रेस की कार्यवाई से यह पूरी तरह टपकता था कि यद्यपि अमरीकन लोग अपने अधिकारों पर पूर्ण अटल थे, किंतु अपने हृदय में फिर भी वे इंगलैंड से प्रथक नहीं होना चाहते थे। वास्तव में बात यह थी कि यह लोग भी उपनिवेशों से अधिक इंगलैंड को अपनी मातृभूमि समझते थे। बोस्टन के हत्याकांड के बाद भी वाशिंगटन ने अपने एक पत्र में इंगलैंड को 'होम' अर्थात 'घर' लिखकर संबोधित किया था। मसाशुसेट्स के थाड़े-से नेता जैसे सेमुएल एडमस और उसका चचेरा भाई जान एडमस—जो पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा कर देना चाहते थे। क्योंकि उन्हें विश्वास था कि सब विकारों को दूर करने की मूल ओषधि यही है। विना पूर्ण स्वतंत्रता के उनके स्वत्वों पर किसी-न-किसी रूप में प्रहार होता ही रहेगा, परंतु कुछ लोग इन्हें केवल आग भड़कानेवाला और आंदोलनकारी ही समझते थे

अन्यलोगों को भी विश्वास था कि सम्राट् ठीक राह पर लाया जा सकेगा, उन्होंने इस बात को अभी तक नहीं समझा था कि सम्राट् के लिये यह अमरीका के अधिकारों की ही लड़ाई नहीं है, बल्कि दो सिद्धांत-एकतंत्रवाद और प्रजातंत्रवाद-की लड़ाई है और राजनीतिक दृष्टि से अमरीका का युद्ध उसके लिये भी जीवन-मरण का प्रश्न है, क्योंकि- यहाँ उसकी पराजय होते ही इंगलैंड में भी उसका अधिकार गिर जायगा। वाशिंगटन तक इंगलैंड से पृथक होना नहीं चाहता था और जेफ़रसन जिसने बारह महीने बाद स्वतंत्रता का घोषणा-पत्र तैयार किया था, वह भी इस समय पूर्ण स्वतंत्रता के पक्ष में नहीं था।

परंतु फिर भी उनके विचार प्रौढ़ हो रहे थे, इस बार जब सम्राट् को प्रार्थना-पत्र भेजने का प्रस्ताव पेश किया गया, तब उसका घोर विरोध हुआ। जान एडमस ने कहा—'अब हमारे लिये यह अत्यंत अपमानजनक है और इससे कांग्रेस के कार्य पर बड़ा धक्का पहुँचेगा, अब तो हमें कार्यक्षेत्र में कूद पड़ना चाहिए।' परंतु दूसरे लोग इसे केवल एक प्रथा की बात समझते थे, क्योंकि इसके पास हो जाने के बाद वे पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र की तरह अपनी शक्तियों के व्यवहार के लिये तैयार थे। बारह सदस्यों की एक कार्यकारिणी बनाई गई और सेना संगठित करने, उपनिवेश में भिन्न-भिन्न जगह क़िला बनाने और गोला-बारूद, रसद और दूसरे लड़ाई के सामन इकट्ठे करने का

निश्चय किया गया। इन सबके ख़र्चे के लिये ३० लाख डालर के नोट 'संयुक्त-उपनिवेशों' के नाम से निकालने का प्रस्ताव भी हुआ। *

मसाशुसेट्स की फौज़, जिसने बोस्टन की सेना के छक्के छुड़ा दिए थे, बहुत बुरी हालत में थी। उसके पास न गोली-बारूद थी, न अस्त्र थे, न कपड़े, न तनख़ाह, यथार्थ में उसे कोई प्रोत्साहन ही नहीं मिलता था। काँग्रेस की सहायता की अत्यंत आवश्यकता थी, अन्यथा उसके भंग हो जाने का डर था। यदि यह सेना भंग हो जाय, तो फिर नई कैसे इकट्ठी हो सकती है—इसपर बहुत वादाविवाद और विचार होता रहा। यह तो सर्वसम्मति से पास हुआ कि इसकी सेना क़ायम की जाय, पर अब दूसरा प्रश्न यह था कि कमांडर-इन-चीफ़ कौन हो? इस विषय पर बहुत मतभेद था। इस पद को प्राप्त करने के लिये कितने ही मनुष्य आकांक्षाशील थे और उनकी भिन्न-भिन्न पार्टियाँ उनका समर्थन भी कर रही थीं, परंतु अंत में वाशिंगटन ही बहुसम्मति से इस पद के लिये निर्वाचित हुए। वाशिंगटन ने अपने भाई को लिखा—"मैं कुछ समय के लिये हर तरह के घरू आराम और तुमसे बिदा हो रहा हूँ। मैंने अपनी जीवन-नौका एक बड़े महासागर में छोड़ दी है…जिसमें शायद कोई स्वरक्षित तट नहीं मिलेगा, जहाँ कि विश्राम मिल सके। उपनिवेशों की

* The war of Independence by John Fiske.

संयुक्त आवाज़ मुझे प्रादेशिक सेवा के अध्यक्ष पद को स्वीकार करने के लिये प्रेरित कर रही है, जिस पद को प्राप्त करने का न मैंने कभी प्रयत्न ही किया था और न आकांक्षा ही और मुझे विश्वास है कि उसके लिये, मुझसे भी अधिक योग्यता वाले और अनुभवी की आवश्यकता है।"

इधर जब कांग्रेस यह निश्चय कर रही थी, तब उधर बोस्टन के चारों ओर की स्थिति उग्र होती जा रही थी। कनकोर्ड का समाचार ज्योंहीं देहात में पहुँचा, त्योंहीं किसानों ने अपनी स्त्री, बच्चे, खेत, धन आदि सबको छोड़ दिया। उन्होंने अपने औजार सँभाले, कुछ कारतूस ली, जेब में कुछ खाने की चीज़ें भरीं, अपने कपड़े पीठ पर डाले और निकल पड़े। बोस्टन के चारों तरफ़ इस तरह १०००० किसान इकट्ठे हो गए। इन राष्ट्रीय सैनिकों ने बोस्टन में पड़ी हुई अंग्रेजी सेना को रसद पहुँचाने के सभी रास्ते बंद कर दिए। पास के देहातों ने जल-मार्ग से उनके लिये ज़रूरी चीजें पहुँचाने से इन्कार कर दिया, ताज़े खाद्य पदार्थ और तरकारियाँ मिलना असंभव हो गया और बोस्टन की हालत ऐसी हो गई, जैसे दुश्मनों द्वारा घिरे हुए एक नगर की हो जाती है।

कांग्रेस के निश्चयानुसार सम्राट् को प्रार्थना-पत्र भेजा गया। परंतु सम्राट् ने उस पत्र को लेना तक स्वीकार नहीं किया और कहा कि उपनिवेशों को उनके विद्रोह का शीघ्र

जवाब दिया जायगा। जनरल गेज के अधिकार में कोई दस हजार सेना थी, परंतु हाल की घटनाओं के कारण यह आवश्यक समझा गया कि सेना की संख्या अधिक बढ़ा दी जाय। सम्राट् ने जनरल होवे, बरगोईन और हेनरी क्लिंटन की अध्यक्षता में नई सेना भेजी। यही नहीं, उसने योरप में अपने दूत भाड़ेतू सेना को इकट्ठा करने के लिये भी भेजे, नेदरलैंड और रूस की सरकार ने तो उसकी प्रार्थना पर अधिक ध्यान न दिया, परंतु ड्यूक आफ़ हेल्त ने यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया। ३०००० भाड़ेतू सैनिक यूनीयन जैक झंडे के नीचे भरती कर लिए गए, लेकिन योरप में हेसियन के इस मनुष्य-क्रय का चारों ओर से प्रतिरोध किया गया और प्रूशिया के बादशाह महान फ्रेडरिक ने हुक्म दिया कि इनमें-से जो-भी उसके राज्य से होकर निकलें, उनपर पशु-कर लिया जाय।

इधर आदि निवासी रेड इंडियनों को भी भड़काया गया कि वे उन निवासियों से, जिन्होंने उनके खेत छीनकर उर्वरा भूमि से उन्हें बंजरभूमि में रहने को मजबूर किया था- अपना बदला निकालने के इस अवसर को हाथ से न जाने दें। ब्रिटिश सत्ता अपने स्वार्थ के लिये इन लोगों में ऐसी आग फैला रही थी, जो आगे चलकर अनेक अमानुषिक हत्याकांडों का कारण हुई।

उपनिवेशों की राष्ट्रीय आकांक्षाओं का सामना करनेवाली सबसे बड़ी शक्ति उनके अमरीकन भाई ही थे, जो ब्रिटिश

मंत्रि-मंडल की नीति का समर्थन ही नहीं करते थे, बल्कि उन्हें अधिकाधिक दमन नीति का उपयोग करने के लिये भड़का भी रहे थे। इस ब्रिटिशवादी दल को 'टोरीपार्टी' कहते थे। यह विरोध करके ही संतुष्ट नहीं हुए, बस उनमें-से ५०००० मनुष्यों ने स्वयं इस युद्ध में अपने भाइयों के गले में भोंकने के लिये तलवार भी उठाई। इस तरह कोई ५०००० नियमित ब्रिटिश सेना, ५०००० टोरी लोग, ३०००० हेसियन और बहुत-से आदि निवासियों ने इस स्वतंत्रता के युद्ध में ब्रिटिश पाशविक शक्ति का प्रदर्शन किया।

जब सेनाओं से भरे हुए जहाज़ बोस्टन बंदर पर पहुँचे और इनके कमांडर बरगोइन को मालूम हुआ कि ब्रिटिश सेनाएँ बोस्टन में किस तरह पिंजड़े में बंद पड़ी है, तो वह घृणा और आश्चर्य में डूब गया। उसने चीखकर कहा-"क्या दस हजार किसानों ने सम्राट् की पाँच हज़ार फ़ौज को इस तरह बंद कर रक्खा है! ख़ूब! हमें भीतर जाने दो और तुरंत ही हम मार्ग बना देंगे।'

नई सेनाओं के आने से जनरल गेज की हिम्मत बढ़ गई। उसने एक घोषणा-पत्र निकाला, जिसमें उन बागियों को जिन्होंने सम्राट् की सेना को घेरने की चेष्टा की थी, बहुत बुरा-भला कहा और सारे प्रदेश पर मार्शल लॉ भी जारी कर दिया। उसमें यह भी धमकी दी गई कि जो लोग सशस्त्र बग़ावत पर तुले हैं या जो उनकी

सहायता कर रहे हैं, उनका दमन पूरी शक्ति से किया जायगा, परंतु जो लोग शस्त्र डालकर ब्रिटिश झंडे की शरण में आ जायँगे, उन्हें क्षमा-प्रदान कर दिया जायगा, पर सेमुएल एडमूस और जान हेनकाक किसी भी हालत में क्षमा नहीं किए जा सकते। इस घोषणा का प्रभाव देश-भक्तों पर कुछ भी न पड़ा, उल्टे वे और भी सजग हो गए। बोस्टन के चारों तरफ़ राष्ट्रीय सैनिकों की संख्या और भी अधिक बढ़ने लगी, जो शीघ्र ही बढ़कर१५०००हजार हो गई। इस सेना का विचित्र ही हाल था। कांग्रेस के यह अभी अधीन नहीं हुई थी, इसका कोई एक धनी-धोरी न था, यह भिन्न-भिन्न उपनिवेशों की थी और इनके भिन्न-भिन्न अध्यक्ष थे। अधिकांश के पास कोई यूनीफ़ार्म तक न था। इनमें-से बहुत-से अपने खेती करने के फटे हुए खद्दर के कपड़े ही पहिने हुए थे। उन्हें कोई सैनिक शिक्षा नहीं मिली थी। बंदूक चलाने का जो कुछ भी अभ्यास था, वह चिड़िया मारने या शिकार के अभ्यास से हुआ था। उनमें—से कुछ फ्रांसीसियों और कुछ इंडियनों से छोटे-मोटे झगड़े में लड़ भी चुके थे। पर उनमें योरोपियन सेना की तरह कोई व्यवस्था न थी। यह स्वयंसेवकों की सेना थी और इनके खाने-पीने का सामान अपने-अपने गाँवों से आता था।* यह सैनिक ही राष्ट्रीय सेना थी, जो बोस्टन के चारों तरफ़ घेरा डाले पड़ी

---

* Irving washington.

थी और उन ब्रिटिश सैनिकों को पिंजड़े में बंद कर रक्खा था, जिनकी संख्या १७०००० थी और जिसमें १०००० ब्रिटिश जवान थे, जो योरप की बड़ी-बड़ी लड़ाइयों में लड़ चुके थे।

गँवार और अशिक्षित किसान अपनी भोंडी चाल के बल पर इतना 'बड़ा साहस करें', यह ब्रिटिश सैनिकों के लिये असह्य था, वे चिढ़कर उनके भिन्न-भिन्न संप्रदाय के गिर्जों और मठों को नष्ट-भ्रष्ट करने और उनके धार्मिक विचारों पर आघात करने पर तुल गए। वहाँ के पुस्तकालयों की पुस्तकें निकाल-निकाल कर अग्नि के समर्पण कर दी गईं, कई गिर्जे बेरेक बना दिए गए और उनके ऑर्जन—पाइप बाजों से गोलियाँ ढाल ली गईं।'

अब दोनों ही तरफ़ की सेनाएँ मोर्चा लेने के लिये व्यग्र थीं। ब्रिटिश सेनाओं को इस तरह बंद होना असह्य हो गया और वे विद्रोहियों को इसका मज़ा चखाना चाहते थे। राष्ट्रीय सेना भी उत्साह से पागल हो रही थी और अपनी सफलता से उन्हें अपनी कमज़ोरी का ध्यान नहीं रहा।

राष्ट्रीय सेना को मालूम हुआ कि जनरल गेज अठारह जून की रात को अपनी सेनाएँ डोरचेष्टर पहाड़ी पर, जो बोस्टन के दूसरी तरफ़ थी—पहुंचाना चाहता है।

इसलिये उसने निश्चय किया कि सोलह जून को ही इस पहाड़ी पर कब्ज़ा करके किलेबंदी कर दी जाय। इसलिये कर्नल प्रेस्काट, फ्रारो और ब्रिजेज़ की अध्यक्षता में इस कार्य के लिये सैनिकों की टुकड़ियाँ नियत हुईं।

सूर्य डूबने से कुछ देर पहले करीब १२०० सैनिक २४ घंटे के लिये रसद और अपने कंबल वगैरह लेकर आ इकट्ठे हुए। परेड ग्राउँड में प्रार्थना हुई। अनुभवी कर्नल प्रेस्काट इस महान कार्य के संयोजक बनाए गए। वे करीब नव बजे दो लालटेनों की मंद्री रोशनी के प्रकाश में अपने सैनिकों को लेकर चल दिए, उनके पीछे-पीछे गाड़ियाँ खाईं खोदने का सामान भरी हुई चलीं।

चार्लसटाऊन के समीप मेजर ब्रूक्स और जनरल पुटनम भी अपने सैनिक लेकर प्रेस्काट से आ मिले। अब वे जिस भूमि से गुज़र रहे थे, वह एक सकीर्ण स्थलडमरूमध्य थी, जोकि प्रायद्वीप को मूलदेश से जोड़ती थी और जिसके उत्तर की ओर आधी मील चौड़ी मिस्टिक नदी थी और दाएँ तरफ़ चार्ल्स नदी थी। यहाँ दस-पाँच ब्रिटिश जहाज़ प्रायद्वीप की देखभाल करने के लिये रहते थे, इसलिये अमरीकनों को बड़ी ही सावधानी से आगे बढ़ने की आवश्यकता थी। अमरीकन सेनाएँ बंकर पहाड़ी के ऊपर जा पहुँची। यह पहाड़ी समुद्र की सतह से केवल एक सौ

बारह फ़ीट ऊँची है, फिर इसका दक्षिण की तरफ ढलाव है, जहाँ पर वह एक चट्टान द्वारा ब्रीड पहाडी से मिल जाती है। अब उनके सामने ही कोई १२००० गज पर ब्रिटिश तोपें थीं और उनके जहाज़ तो उससे भी पास थे। उनके और ब्रिटिश सेनाओं के बीच में जल उत्ताल तरंगे मार रहा था।

तुरंत ही प्रेस्काट ने किलेबंदी करना शुरू कर दिया। किसानों को फ़ावड़े और कुदालियाँ दे दी गईं और केवल संतरियों को छोड़कर सैनिक और अफ़सर सभी ने तेजी से खाइयाँ खोददी और दीवारें खड़ी करना शुरू कर दिया। इधर प्रेस्काट ने कुछ दूत भेजे कि वे पहाड़ी के नीचे तट पर गश्त करें और दुश्मनों की गति का निरीक्षण करें। वह इनपर ही निर्भर न रहकर स्वयं दो दफ़े समुद्र के किनारे गया और उसे यह जानकर संतोष हुआ कि दुश्मन गहरी नींद में सोए पड़े हैं। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे और चारों ओर शांति का साम्राज्य था, निशा बोस्टनवासियों पर अपनी लंबी चादर बिछाए हुए क्रीड़ा कर रही थी। बीच-बीच में कभी-कभी 'जागते रहो', 'सब ठीक है' आदि पहरेदारों की आवाज़ें सुनाई पड़ती थीं और फिर सब-कुछ शांत हो जाता था।

सतरह तारीख़ को जैसे सूर्य भगवान की रश्मियाँ पृथ्वी पर पड़ने लगीं, वैसेही ब्रिटिश–रक्षकों को अमरीकन सैनिकों के कार्य का पता चला और उन्होंने सूचना देने के लिये खतरे

का घंटा बजाया। 'लिवर्ली' जहाज़ के कप्तान को जब यह सब मालूम हुआ, तो जनरल गेज की आज्ञा के लिये वह भी न रुका और पहाड़ी की तरफ़ दीवार को उड़ाने के लिये गोले बरसाना उसने शुरू कर दिया। अन्य जहाज़ भी उसकी मदद को आ-जुटे, लेकिन यह गोले राष्ट्रीय सैनिकों का कुछ भी न बिगाड़ सके।

प्रेस्काट दीवार पर चढ़ गया और कार्य का निरीक्षण करने और सैनिकों को उत्साहित करने के लिये उसपर घूमने लगा। थोड़ी ही देर में राष्ट्रीय सैनिक बिलकुल निर्भय हो गए और उनका तोपों का भय बिल्कुल ही जाता रहा।

गोले छूटने की आवाज़ से सारा बोस्टन जाग उठा। जनरल गेज सामने की पहाड़ी का दृश्य देखकर दंग रह गया। उसे यह विश्वास न होता था कि एक ही रात में यह सब-कुछ हो सकता है। उसने दूरबीन मँगाकर आँखों में लगाई, और उसने पूछा—"कौन है जो इन सैनिकों का संचालन करता हुआ मालूम होता है। प्रेस्काट का बहनोई, जो अंगरेजी फौज़ में था, वहीं मौजूद था। उसने प्रेस्काट को पहिचान लिया। जनरल गेज ने उतावला होकर पूछा 'क्या वह लड़ेगा? 'जी हाँ! वह एक पुराना लड़ाका है और अपने शरीर के रक्त' के अंतिम बूंद तक लड़ेगा, लेकिन मैं उसके सैनिकों की बाबत कुछ नहीं कह सकता।'

जनरल गेज ने तुरंत कौंसिल आफ़ वार की मीटिंग

की। वहाँ यह निश्चय हुआ कि संभवतः अमरीकन उस जगह से बोस्टन पर गोला-बारी करें। इसलिये जैसे भी हो, उन्हें वहाँ से हटाना चाहिए। यह किस तरह हो? क्लिंटन, ग्रांट और बहुत-से अन्य अफ़सर यह कहते थे कि ब्रिटिश सेना चार्ल्सटाउन नेक पर पहुँचकर अमरीकनों के पीछे से आक्रमण करे, जिससे वे पीछे भी न लौट सकें; परंतु जनरल गेज इसके खिलाफ़ था। वह कहता था, इस तरह करने से ब्रिटिश सेना दुश्मन की दो सेनाओं के बीच में पड़ जायगी—एक सेना जो पहाड़ी पर डटी हुई है और दूसरी जो कैंब्रिज में है। इसलिये वह सामने से ही आक्रमण करके किलेबंदी को तोड़ देना चाहता था। उसको विश्वास था कि ब्रिटिश सेना के सामने यह नौसिखुए रंगरूट क्या जम सकेंगे?

शीघ्र ही बोस्टन की गलियों में सेना मार्च करती हुई दिखलाई देने लगी। तोपें ले जानेवाली गाड़ियों के पहियों की खटर-पटर और बिगुल की आवाज़ से अमरीकनों को पता लग गया कि अब उनपर आक्रमण होनेवाला है। इस समय उनमें मुकाबिला करने की बिलकुल शक्ति नहीं थी, रात भर जागने और काम करने से वे थक गए थे। रसद की कमी के कारण भूख और प्यास सता रही थी। प्रेस्काट ने जनरल वार्ड को कई बार नई सेना भेजने के लिये संदेशा भेजा, परंतु वार्ड और अधिक सैनिक कैंब्रिज से भेजने को

हिचकिचाता था, क्योंकि उसे भय था कि ऐसा करने से उसकी शक्ति कैंब्रिज में कमज़ोर हो जायगी और यदि अंग्रेजी सेना का यहाँ आक्रमण हुआ, तो वह उस बहुत-से गोला-बारूद और रसद की, जो यहाँ पर जमा था-रक्षा न कर सकेगा। अंत में उसने दो टुकड़ियाँ भेजने का हुक्म दे ही दिया। जल्दी में गोली-बारूद बाँट दिया गया, हर-एक सैनिक को दो चकमक पत्थर, बारूद का एक थैला और १५ गोलियाँ मिलीं। नई सेना के आने पर प्रेस्काट ने कुदाली फावड़े वग़ैरह देकर पहाड़ी पर भेज दिए कि वहाँ भी रक्षा के लिये ऐसी ही दीवार खड़ी कर ली जाय।

दोपहर के समय ब्रिटिश सैनिकों से लदे हुए अट्ठाइस बेड़े बोस्टन से चले। उनका लाल यूनीफ़ार्म दिखाई पड़ रहा था और सूर्य की रश्मियों के पड़ने से उनकी संगीनें और तोपें चमक रही थीं। अमरीकनों ने इनके रोकने की चेष्टा नहीं की और यह एक बजे ब्रीड पहाड़ी के नीचे से थोड़ी दूर जा-पहुँचे। ब्रिटिश जनरल होवे को यहाँ आकर मालूम हुआ कि जैसा उसने सोचा था, उससे अमरीकनों की स्थिति कहीं अधिक दृढ़ है। इसलिये उसने जनरल गेज को कुछ और सेना भेजने के लिये दूत भेजा। जब तक सहायता आवे, तब तक उसने अपने सैनिकों को हुक्म दिया कि वे खा-पीकर तैयार हो जाँय। इस बीच में राष्ट्रीय सैनिकों को अपनी रक्षा के लिये दीवार बढ़ाने और एक तार और

लकड़ियों के ढेर को खड़ा करने का समय मिल गया। इधर बंकर पहाड़ी पर भी ज़ोर से किलेबंदी करने के लिये काम होने लगा। इसी समय डॉक्टर वारेन भी पहाड़ी पर आ पहुँचा, प्रेस्काट ने सेना का संचालन उसके हाथ में देना चाहा। लेकिन इस वीर ने कहा-'मैं तो केवल स्वयंसेवक की तरह ही सेवा करने के लिये आया हूँ और आपके जैसे अनुभव प्राप्त सैनिक की आज्ञापालन करने में मुझे प्रसन्नता होगी।"

अब ब्रिटिश सैनिक आक्रमण करने के लिये तैयार थे। उन्हें अपनी विजय का तो पूर्ण विश्वास था, परंतु वे केवल यह सोच रहे थे कि आक्रमण इस तरह किया जाय कि एक भी विद्रोही बचकर न लौट सके।

जनरल पिगट ब्रिटिश सैनिकों को लेकर पहाड़ी पर चढ़ने लगा और वह जब अमरीकनों की किलेबंदी से बहुत दूर था, तभी से उसने गोलियों की बाढ़ दागना शुरू कर दिया था. लेकिन अमरीकन अपने जनरल की आज्ञानुसार बिलकुल ही चुप बैठे रहे। जब अंग्रेज सैनिक तीस या चालीस ही क़दम रह गए, तब उन्होंने पूरी ताक़त से उनपर आग उगलना प्रारंभ किया। बहुत-से अंग्रेज़ सैनिक विशेषकर अफ़सर मारे गए और पीछे हटने लगे, लेकिन पिगट ने उन्हें फिर उत्साह दिलाया और वे अमरीकनों के बहुत ही पास पहुँच गए। एक बार फिर अमरीकनों ने पहले से भी भयंकर बौछार की। इससे ब्रिटिश सैनिक घबड़ा

कर पीछे की ओर भागे। इधर जनरल 'होवे' ने अपने ब्रिटिश सैनिकों को लेकर मिस्टिक नदी की ओर से आक्रमण कर दिया। जहाँ स्टार्क, रीड और नोल्टन के सैनिक जमे हुए थे। होवे की तोपें दलदल में फँसकर बेकार हो गईं, उसके आदमी आगे बढ़ते जाते थे और गोलियों की बाढ़ दागते जाते थे, परंतु अमरीकन सैनिक यहाँ भी चुप रहे। जब ब्रिटिश सैनिक केवल तीस क़दम के फ़ासिले पर रह गए, तब सारी अमरीकन तोपों और बंदूकों ने एक साथ उनपर आग उगलना शुरू किया। इस भयंकर मार से बहुत-से अंगरेज मारे गए और उन्हें पीछे हटना ही पड़ा।

जब तक अँगरेजी सैनिक दूसरा आक्रमण करें, तब तक राष्ट्रीय सैनिक और भी सँभल गए। पहले की तरह इस बार भी अँगरेजी सैनिक अपनी मुँह की खाकर लौटे। बरगोइन ने अपने एक पत्र में लिखा है कि, "मुझे यह निश्चय है कि जो कुछ मैंने यहाँ देखा और सुना, उससे अधिक भयंकर न कभी हुआ न हो सकता है और न होगा। तोपों का एक साथ इस भयंकरता से आग उगलना मनुष्य के कानों ने शायद कभी भी सुना हो।"

और यह सब वे स्वयंसेवक सैनिक ही कर रहे थे, जिन्हें युद्ध का कोई अनुभव तक नहीं था और न जिन्होंने कभी गोले फटने के ऐसे दृश्य ही देखे थे। इसपर भी वे डटे रहे और जब ब्रिटिश सैनिक बहुत ही पास आ जाते, तब वे इतनी वीरता,

निश्चय और तेजी से एक दम आग उगलते कि उनके शत्रुओं के पैरों का डँटना मुश्किल हो जाता। अँगरेजी अफ़सर अपने सैनिकों को पीछे हटने से रोकने की चेष्टा करते, उन्हें मारने की धमकी देते, पर यह सब व्यर्थ जाता। ब्रिटिश सैनिक भाग खड़े होते।

बोस्टन के मकानों की छतों पर खड़े हुए हजारों स्त्री, पुरुष और बच्चों की भीड़ आकुल नेत्रों से यह सब दृश्य देख रही थी। इनमें बहुत-से राष्ट्रीय सैनिक स्वयंसेवकों की माताएँ, स्त्री, बहिनें, पिता और भाई भी थे। उनके हृदय में गहरी उथल-पुथल मची हुई थी। कभी आशा से उनके नेत्र चमकने लगते और कभी उनके मुख भावी संकट का स्मरण कर मुरझा जाते थे।

ब्रिटिश सैनिकों ने तीसरे और अंतिम आक्रमण की तैयारी की। उन्हें सूचना मिली कि अमरीकन स्वयंसेवकों का गोला-बारूद करीब-करीब निबट चुका है और उनकी सेना का बायाँ भाग बहुत कमज़ोर पड़ गया है, इसलिये उस ओर ही आक्रमण करने का निश्चय किया गया और घोषणा की गई कि जो-कोई सैनिक पीछे पैर उठाएगा, उसे काट डाला जायगा। अमरीकन उसी तरह चुप रहे और जब अँगरेज सैनिक पास आ गए, तब भयंकर आग की मार उसी तरह उन्होंने उनपर छोड़ी। अंगरेजी सेना के बहुत से अफ़सर मारे गए और जनरल होवे भी घायल हो गया।

इसबार अंगरेज सैनिकों ने भी अपनी आग रिजर्व रक्खी और संगीनों को चमकाते हुए आगे बढ़े। क्लिटन और पिगट इस बाड़ेबंदी के दक्षिण और पूर्वीय हिस्सों में जा पहुँचे। अब तीन तरफ़ से आक्रमण किया गया। प्रेस्काट ने आज्ञा दी कि जिन स्वयंसेवकों के पास संगीन नहीं है, वे पीछे चले जावें और दुश्मन को, जो अपनी दीवार पर चढ़ें-गोली का निशाना बना दें। पहला अंग्रेज सैनिक ज्योंहीं दीवार पर चढ़ा, त्योंहीं एक गोली उसकी कनपटी में इस तरह लगी कि वह उछलकर पीछे जा पड़ा। इसी तरह कई सैनिक मारे गए, पर अमरीकन स्वयंसेवकों की गोलियाँ समाप्त हो चुकी थीं। इसलिये उन्होंने संगीनें निकाल लीं और भयंकर मारकाट शुरू कर दी। लेकिन जब बहुत अंगरेजी सैनिक गढ़ में आ घुसे, तब प्रेस्काट को पीछे हटने की आज्ञा अपने सैनिकों को देनी ही पड़ी। ब्रिटिश सैनिकों की दो टुकड़ियाँ, जो पीछे से आक्रमण कर रही थीं, काटकर इनको अपना रास्ता बनाना पड़ा। *

यह सैनिक स्टार्क, रीड और बोल्टन के मोर्चे में, जो

Willim Eden, a youg English politician wrote to Lord North—'We certainly are victorious ; but if we have eight more such victories, there will be nobody left to bring the news, to them,

—Historical manuscript Commission.

उन्होंने बंकर पहाड़ी पर तैयार किया था—जा मिले। पुटनम ने तलवार घुमाते हुए कहा—'ठहरो! यहाँ हमें अपने पैर जमाना चाहिए, हम अभी उनको फेंक सकते हैं। ईश्वर के नाम पर फिर तैयार हो जाओ और दुश्मनों पर फिर एक बार गोलियों की बौछार करो'। परंतु यह संभव न हो सका, उन्हें पीछे हटना ही पड़ा। इधर सैनिक इतने थके हुए थे कि वे उनका पीछा करने में असमर्थ थे।

यद्यपि इस स्वाधीनता के युद्ध में और भी अनेक इससे भयंकर और भारी-भारी मोर्चे हुए, पर इसका महत्व इसलिये अधिक है; क्योंकि ब्रिटिश सैनिकों और अमरीकन स्वयंसेवकों के आमने-सामने खुलकर लड़ने का यह पहला ही अवसर था और इस युद्ध में राष्ट्रीय सेना को पहली बार आत्म-विश्वास जमा कि' वे सफलतापूर्वक अंगरेजी सेनाओं का सामना कर सकते हैं और पहली बार अंगरेज सैनिकों को मालूम हो गया कि नौसिखुए अमरीकन स्वयंसेवकों से लड़ना उतना सहज नहीं है, जितना वे समझे बैठे थे। जनरल होवे के मत के अनुसार ही इस युद्ध में २००० में-से एक हजार चौवन अंगरेज सैनिक मारे गए, और घायल हुए। जब कि मृत और घायल हुए अमरीकनों की संख्या किसी भी हालत में चार सौ पचास से ऊपर नहीं थी।

(६)

राष्ट्रीय सैनिक शक्ति का संगठन
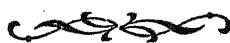
फिलाडेलफ़िया की सर्वदेशीय कांग्रेस के आग्रह से वाशिंगटन ने कमांडर-इन-चीफ़ का पद तो स्वीकार कर लिया। परंतु वर्तमान स्थिति में राष्ट्रीय सेनाओं का संगठन करना और संचालन करना कोई साधारण काम नहीं था। वास्तव में जब हम उस समय की राष्ट्रीय सेना की शक्ति और संगठन पर विचार करते हैं, तो हमें आश्चर्य होता है कि यह ब्रीड और बंकर की पहाड़ी पर जनरल होवे जैसे निपुण सेनाध्यक्ष के इन अनुभवी और संगठित अँगरेज योद्धाओं से, जो योरप में अनेक लड़ाइयाँ लड़ चुके थे-किस तरह लोहा ले सके। निश्चय ही हम तो उसे उत्साह और आत्म-विश्वास का सर्वोत्तम दृष्टांत समझते हैं। लेक्सिंगटन के हत्याकांड से इन राष्ट्रीय स्वयंसेवकों के हृदय इतने उत्तेजित हो गए थे और जनरल पिटकेरिन के सैनिकों को वहाँ जो ज़लालत उठानी पड़ी थी-कि उन्होंने असंभव को भी संभव कर दिखाया।

वाशिंगटन २१ जनवरी सन् १७७५ को जनरल ली और जनरल क्यूलर के साथ फ़िलाडेलफ़िया से रवाना हुआ और भिन्न-भिन्न प्रदेशों का अध्ययन करता हुआ २ जुलाई को केंब्रिज जा पहुँचा। उसने राष्ट्रीय कैंप का जो निरीक्षण

किया, उससे उसका दिल बैठ गया। वहाँ कोई १५००० सशस्त्र सैनिक थे, जिनमें नौ हजार मसाशुसेट्सवासी थे, बाकी अन्य उपनिवेशों के थे। परंतु इनकी कोई एक व्यवस्था न थी। इनके पास जो बंदूकें थीं, वे निकम्मी थीं और इनमें कोई-कोई तो बहुत ही लंबी थी, इसी संबंध में एक कर्नल ने लिखा था-इनके पास जो बंदूकें हैं वे चिड़िया मारने के लिये अच्छी हैं, लेकिन लड़ाई के लायक़ नहीं हैं, उनमें-से कुछ तो सात फ़ीट से कम लंबी नहीं हैं। बहुत से स्वयंसेवकों को तो शीत से बचाने के लिये कपड़े की बहुत ही आवश्यकता थी।*

पादरी विलियम एमरसन ने लिखा था-'इन कैंपों का निरीक्षण करने से बहुत ही हतोत्साह होता है। जिस तरह उनमें रहनेवाले सैनिक फटी और भिन्न-भिन्न हालत में हैं, उसी तरह से इन तंबुओं की भी भयंकर हालत है। हर-एक उसमें रहनेवाले सैनिकों के स्वभाव और रुचि का परिचायक है। कुछ बोर्ड के बने हैं, कुछ पाल के टुकड़ों से बने हैं और कुछ दोनों से। कुछ ईंट और पत्थर के बने हैं, कुछ योंहीं जल्दी में बाँध-बूँध दिए गए हैं और कुछ विचित्र तौर से मालाओं से सजे हैं। केवल एक बिग्रेडिया जनरल ग्रीन की सेनाओं के कैंप ही ऐसे थे—जो नियम से लगे थे, जिसके

Robert Livingston to Lord Stirling June 11-1776

* लेफ्टिनेंट कार्क भी कहता है कि उसके सैनिकों को वीड और बंकर की पहाड़ियों में जो बंदूकें मिली थीं, वे सात फ़ीट लंबी थीं।

सैनिक भी एक से यूनीफ़ार्म पहने और सीखे हुए थे।

इन सैनिकों में अधिकाँश नियम पालन तो जानते ही न थे। अपनी-अपनी खिचड़ी पकाना और अपने-अपने अफ़सरों की आज्ञा-पालन न करना ही वे स्वतंत्रता समझे बैठे थे। जो उन्हें हिदायतें दी जाती थीं, उन्हें वे तुच्छ समझते थे। रोज़ नए नए स्वयंसेवक आते थे और ज्योंहीं उनका जोश ठंढा होता था, वे घर को लौट जाते थे। कांग्रेस ने कुछ नियम बनाए, बहुतों ने उनको पालन करने से इन्कार कर दिया। उनमें प्रांतीयता के भावों की उग्रत इतनी थी कि कितनी ही बार सैनिक संगठन टूटने पर आ जाता था। पहले उनके पास एक भी तोप न थी, लेकिन जब टिंगोडेरोगा में अरनाल्ड ने १०० तोपें छीनकर राष्ट्रीय कब्ज़े में कर लीं, तब उन्हें चलाने के लिये आदमी मिलने में बहुत मुश्किल पड़ी।

वाशिंगटन ने खेद से लिखा-'सार्वजनिक मत का इतना पतन, उदारता और गुणों की इतनी कमी, येन-केन प्रकारेण अनुचित लाभ उठाने की इतनी आकांक्षा मैंने पहले कभी नहीं देखी थी और ईश्वर से यह प्रार्थना है कि वह यह कभी न दिखावे। मैं तो भविष्य को सोचकर काँप जाता हूँ। मुझे अब जो अनुभव हुआ है और जो होनेवाला है, उसका यदि पहले ध्यान भी कर सकता, तो मुझे कोई भी विचार इस भार के उठाने के लिये प्रेरित न कर सकता।' लेकिन वाशिंगटन यों हारने वाला नहीं था और हम देखेंगे कि इस

वीर ने छः साल तक किस तरह आँधी, पानी और तूफ़ान में अपने काम को किस ख़ूबी के साथ निबाहा।

सेना का अच्छी तरह निरीक्षण करने के बाद वाशिंगटन ने सेना की सब कमियों को कांग्रेस के सभापति के पास लिख भेजा। उसने लिखा कि सेना के स्थायी अफ़सर जैसे कमसरी जनरल, क्वार्टर-मास्टर-जनरल, कमसरी आफ़ मास्टर और कमसरी आफ़ आरटिलरी नियत कर दिए जाँय। यदि यूनीफ़ार्म बनाने में कठिनाई हो, तो कम-से-कम दस हज़ार हंटिंग कमीज़ें तथा रुपया, जिससे सेना के वेतन और भोजन का प्रबंध हो—उसके पास तुरंत भेजा जाय।'

उसने पहली सेना को तोड़कर फिर नया संगठन बिलकुल फ़ौजी ढंग पर किया—सैनिकों का वेतन नियत किया, उनके लिये जैसी भी हो सकी, एक यूनीफार्म बनवाई और रसद का इंतज़ाम किया। पादरी विलियम एमसन ने—जिसकी बाबत हम ऊपर कह चुके थे, कुछ दिन बाद लिखा है—"सैनिकों की छावनियों में व्यवस्था और नियमों के संबंध में तो अब एक दम बड़ा प्ररिवर्तन हो गया है। अफ़सर, क़ानून सब-कुछ नए। जनरल वाशिंगटन और ली सैनिकों में रोज़ गश्त लगाते हैं। प्रार्थना के बाद कमांडर-इन-चीफ़ की नई आज्ञाएँ भिन्न-भिन्न रेजीमेंटों को रोज़ सुनाई जाती है। शासन कड़ा होता जाता है और सैनिकों और अफ़सरों के यथा योग्य सम्मान की रक्षा भी की जाती है।

हर-एक को अपनी-अपनी जगह और स्थिति पर रहना पड़ता है और जो इसमें अवज्ञा करते हैं, उन्हें उनके अपराध के अनुसार बाँध कर तीस अथवा चालीस कोड़े लगाए जाते हैं। हज़ारों आदमी सुबह चार बजे से ११ बजे तक काम करते रहते हैं।" *

जब वाशिंगटन अपनी शक्तियों का संगठन कर रहा था, तब उसे मसाशुसेट्स की धारा-सभा-और कनेक्टीकट के गवर्नर ने कुछ सैनिकों की टुकड़ियाँ समुद्र तट पर भिन्न-

---

* The making of a republic.

"७ फरवरी—आज कैंब्रिज में दो मनुष्यों ने इतनी शराब पी ली कि इनमें से एक तो एक-दो घंटे बाद ही मर गया।"

"१० फरवरी-आज एक कैंप में दो औरतें पकड़ी गईं। वह मनुष्य जिसने शराब पीकर अपनी हत्या कर ली थी, आज उसे दफ़ना दिया गया।"

"२७ मार्च—कैप्टेन बिल्ले के चार आदमियों को आज कोड़े लगाए गए, पहले आदमी को १५ कोडे, इसलिये क्योंकि वह आज्ञा-पालन करने में लापरवाही करता था, दूसरे को ३९ कोडे, चोरी और भागने के अपराध में, तीसरे को १० कोडे, शराब पीने और अपने काम में लापरवाही करने के कारण, चौथे को २० कोडे, इसी अपराध के लिये पड़े।"

"१ मई—आज कैप्टेन फेरींटन के एक आदमी को २० कोडे, इसलिये पड़े, क्योंकि वह बिना छुट्टी लिए हुए ही हाजिरी लिखते वक्त अनुपस्थित रहा।"

भिन्न जगह भेजने के लिये लिखा, जहाँ कि सशस्त्र जहाजों द्वारा नागरिकों पर लूटमार होने की सँभावना थी। वाशिंगटन ने अपनी सेनाओं के अफ़सरों से सलाह की और नम्रतापूर्वक उसने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। आगामी युद्ध में वे किस नीति से सेनाओं का संचालन करेंगे, इसको बतलाते हुए उसने लिखा है-"यह तो हमारी स्थिति का दुर्भाग्य है कि, हम इन आक्रमणों के सामने अरक्षित अवस्था में हैं और हमें इस तरह के अस्थायी प्रयत्न स्वरक्षित बना नहीं सकते। हमारे शत्रु समुद्र के स्वामी होने के कारण अपनी सेनाएँ चाहे जहाँ भेजकर इस तरह के आक्रमण से हमें नुक़सान पहुँचा सकते हैं। लेकिन हम यदि उनके प्रत्येक काम में उनका पीछा करने का लोभ संवरण नहीं करेंगे, तो या तो हमारी सेना इतनी निर्बल हो जायँगी कि सहज में ही नष्ट हो सकें, अथवा समुद्र का बहुत-सा तट अरक्षित रह जायगा। न यह मुझे संभव ही मालूम होता है कि इस प्रयत्न में हम सफल होंगे; क्योंकि हमें इस लूट-मार की सूचना जब मिलेगी, जब उस जगह आक्रमण करने के लिये वे आ पहुँचे होंगे और हमारी सेनाएँ जब तक पहुँचेगी, उसके पहले ही वे अपना काम समाप्त कर लौट जायँगे।' पहले तो मसाशुसेट्स के सदस्य बड़बड़ाए, लेकिन फिर उन्होंने इस नीति की बुद्धिमत्ता स्वीकार कर ली।

वाशिंगटन ने सेना में व्यवस्था, सदाचरण, आज्ञा-

पालन की प्रवृत्ति और नियमों की स्थापना में पूरा प्रयत्न किया । यद्यपि वह नियमों के पालन करने में कड़ाई और दंड से भी काम लेता था, परंतु वह व्यवस्था योरोपीय सेनाओं की तरह बीभत्स नहीं थी, जहाँ तक संभव होता था स्नेह और आसानी से ही काम निकालने की कोशिश की जाती थी । उसने राष्ट्रीय सैनिकों के सदाचार को रक्षा के लिये सब व्यभिचारिणी स्त्रियों को सैनिकों के पड़ावों से निकलवा दिया, नशे को रोका और उनमें अच्छे आचरण के भाव जागृत किए । राष्ट्रीय सैनिकों में जो गुंडे और हुल्लड़बाज आ घुसे थे, वे धीरे धीरे भगाए गए ।

वाशिंगटन जब आया था, तब उसे सबसे अधिक बात-जो खटकी थी, वह राष्ट्रीय सैनिकों की गंदी आदतें और गंदा रहन-सहन का तरीका था । प्रांतीय धारा-सभा ने भी उसको अभिनंदन करते हुए स्वीकार किया था-"सेना के युवक यह नहीं समझते कि यह उनके लिये कितना आवश्यक है कि वे अपने कपड़े और पड़ावों को साफ़ रक्खें, नियमित व्यायाम करें और नशे से बचें तथा पड़ावों में निरंतर फैले हुए रोगों से अपनी रक्षा करें । इनमें-से जो बचपन से श्रम का काम करते चले आए हैं, उन्हें तो इनका बिलकुल ज्ञान तक नहीं है ।" वाशिंगटन ने आते ही पड़ावों को साफ़ कराना शुरू किया और रेजीमेंटल अफ़सरों के यह काम सुपुर्द किया कि वे रोज इनकी सफ़ाई का निरीक्षण करें । पड़ावों में साफ़

रसोईंघर बनाए गए, खाना बनाने में विशेष ध्यान दिया गया और जहाँ तक संभव हो सका, उनके लिये पर्याप्त खाद्य पदार्थ पहुँचाने की कोशिश की गई।

सम्राट् जार्ज तृतीय ने जब यह सुना कि इन राष्ट्रीय सैनिकों की संख्या बीस हजार पहुँच गई है, तो उसने लार्ड डरमूह को लिखा कि "यदि यह संख्या वास्तव में सही है, तो यह हमारे बड़े सौभाग्य की बात है; क्योंकि इतनी बड़ी सेना भोजन की कमी के कारण शीघ्र ही अपने घर वापिस चली जायगी"। परंतु यह आशा सफल होने की बहुत ही कम संभावना थी। प्रांतीय धारा-सभा पूरी तरह इस प्रयत्न में थी कि उसके सैनिक भूखे न मरने पावें और शीघ्र ही पड़ावों में पर्याप्त रसद पहुँचने लगी।

वाशिंगटन ने अपने पहली ही आज्ञा में सैनिकों को यह ध्यान दिलाया कि वे अब एक राष्ट्र के सैनिक हैं। अतः मैं आशा करता हूँ कि अब तमाम प्रांतीयता के भेद ताक पर उठा कर रख दिए जायँगे, ताकि सारी सेना में एक ही भाव और एक वायुमंडल आच्छादित हो जाय और एक प्रतियोगिता रहे कि हम जिस एक ध्येय को प्राप्त करने में लगे हुए हैं, उसके प्राप्त करने में कौन सबसे अधिक कार्य करता है।"

वाशिंगटन ने सारी सेना रेजीमेंट, ब्रिगेड और डिवीजन में विभाजित कर दी और उनके संचालक नियत कर दिए। उसने भिन्न-भिन्न अफ़सरों के लिये भिन्न-भिन्न तरह और रंग

के चिन्ह नियत किए। अभी तक राष्ट्रीय सेना का कोई झंडा नहीं था। वाशिंगटन ने तारे और पहियों वाला झंडा नियत कर पहली बार फहराया और फ्रांस से कर्ज़ा लेकर नीली वर्दियाँ बनवाईं।

सन् १७७६ में योरप से भी स्वयंसेवक बड़ी संख्या में आने लगे। इनमें-से वान स्टयुवेन ने वाशिंगटन को सेना के पुनर्संगठन में बहुत सहायता भी दी। उसने लिखा—'हमारी योरोपीय सेनाओं में, जो आदमी तीन महीने कवायद करता है, उसे रंगरूट कहते हैं। पर यहाँ तो हमें दो महीने की कवायत में सैनिक मिलने चाहिए।' इन सब प्रयत्न का फल यह हुआ कि एक ही वर्ष में ऐसी सेना तैयार हो गई, जो फ़ौजी शिक्षा और दीक्षा में कार्नवालिस और होवे की सेनाओं से कम न थी।'

इसके बाद वाशिंगटन ने छावनियों को स्वरक्षित बनाने और जहाँ-जहाँ मोर्चा कमज़ोर था, इसकी शक्ति बढ़ाने में लग गया और इस प्रकार शीघ्र ही उसकी स्थिति बहुत मज़बूत हो गई। पादरी विलियम एमरसन ने लिखा है, कि कितना काम हो चुका है, यह देखकर तो आश्चर्य होता है। मिस्टिक नदी से कैंब्रिज तक मोर्चा लग चुका है, शीघ्र ही दुश्मन के लिये केवल एक जगह को छोड़कर हमारे मोर्चों में घुसना प्रायः असंभव हो जायगा और वह एक जगह भी इस अभिप्राय से अरक्षित छोड़ी गई है कि दुश्मन अपने क़िलों से उस जगह आ फँसे। बारह महीने पहले किसको यह विचार हो

सकता था कि सारा कैंब्रिज और चार्ल्सटाऊन अमरीकन पड़ावों से भर जायगा, क़िले और खाईयाँ बन जायँगी और सब ज़मीन, खेत, बाग़ सार्वजनिक उपयोग के लिये खोल दिए जायँगे, घोड़े और मवेशियाँ मन-पसंद मैदान में चर सकेंगी, खेत समाप्त होकर चौरस होजायँगे और पेड़, लकड़ी और अन्य सार्वजनिक काम के लिये काट लिए जायँगे।

यद्यपि अमरीका में इस समय ब्रिटेन की जो जल-शक्ति थी, वह बहुत कमज़ोर थी। परंतु यह निश्चय था कि आगामी युद्ध में ब्रिटेन राष्ट्रीय पक्ष को तोड़ने के लिये अपनी जल शक्ति का पूरा उपयोग करेगा। इसलिये राष्ट्रीय जहाजी बेड़ा भी बनाना आवश्यक हो गया था। १५ जुलाई को सब अमरीकन रेजीमेंटों के कर्नलों को आज्ञा दी गई कि वे अपने ऐसे सैनिकों के नाम लिखकर भेजे, जो ह्वेल-बोट्स के प्रबंध और संचालन में निपुण हों। मछलियों पर अनुचित टैक्स लगाने से मल्लाहों में बहुतही असंतोष था। इसलिये वे धड़ाधड़ स्वयं सेवकों में अपने नाम लिखाने लगे। हर उपनिवेश में बहुत-से मछली पकड़ने और तट पर काम करनेवाले जहाज़ जिनका व्यापार नष्ट हो गया था, बेकार पड़े थे, वे राष्ट्रीय सत्ता के हाथ में आ गए और इस प्रकार शीघ्र ही कैंब्रिज के पास मिस्टिक नदी में छोटे जहाज़ों का एक बेड़ा तैयार हो गया।

वाशिंगटन ने एक स्थल-सेना के कप्तान को इनका संचालन

करने के लिये नियत किया और स्वयं बहुत दिनों तक ऐडमिरल जलाध्यक्ष का काम करता रहा। इस बेड़े ने अनेक भयंकर स्थितियों का सामना करते हुए सफलता-पर-सफलता प्राप्त की। वास्तव में जितना रुपया उसपर ख़र्च किया जाता था, उससे अधिक उपयोगी साबित हुआ। ब्रिटिश सेना के लिये जो रसद जल द्वारा पहुँचाने की चेष्टा की जाती थी—जैसे शराब, अन्न, आलू, कोयला, वह कितनी ही बार राष्ट्रीय बेड़े द्वारा लूट ली गईं।

(७)

पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा

"मैं निश्चय ही यह घोषणा कर सकता हूँ' वाशिंगटन ने अपने एक अंग्रेजी मित्र को सन १७७४ में लिखा 'कि उस सरकार (मसाशुसेट्स) अथवा अन्य किसी की भी यह आकांक्षा नहीं है कि वह पूर्ण स्वतंत्रता के लिये उद्योग करे" निस्संदेह बोस्टन और लेक्सिंगटन के हत्याकांडों से अमरीका-निवासियों के भाव सम्राट् और शासकों के प्रति बड़े उग्र हो गए थे और उन्होंने अपने प्रारंभिक अधिकारों के लिये शस्त्र भी उठा लिए थे, किंतु उनके हृदय में ब्रिटिश साम्राज्य से पृथक होने के भावों ने अभी तक प्रवेश तक नहीं किया था।"

अंगरेज और अमरीकनों की नाड़ियों में एक ही रक्त बहता था, उनके आचार-विचार, रहन-सहन सब बहुत-कुछ मिलते-जुलते थे। अमरीकनों को इंगलैंड से कम प्रेम नहीं था, वे अब भी इंगलैंड को अपनी पितृभूमि समझते थे और उनका विचार था कि उपनिवेशों में शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिये यूनीयन जैक की रक्षा उन्हें अत्यंत आवश्यक है। एक अमरीकन पत्र ने तो यहाँ तक लिखा था कि अमरीका के लिये इंगलैंड की रक्षा की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी कि एक निर्बोध बालक को माता की। वे तो स्वेच्छा-चार

शासन को दूर करना चाहते थे और उन अधिकारों की रक्षा करना चाहते थे, जो प्रत्येक मनुष्य की स्वतंत्रता और उन्नति के लिये आवश्यक है। पेटरिक हेनरी ने मसाशुसेट्स की धारा-सभा में कहा था कि हम इंगलैंड से समान अधिकार लेकर यहाँ आए थे, इसलिये नहीं कि हम उनकी—जो वहाँ रह गए, राजनीतिक गुलामी में रहें"। बहुत दिन तक वे निष्क्रिय प्रतिरोध से ही पार्लियामेंट और सम्राट् का विरोध करते रहे। परंतु बोस्टन और लेक्सिंगटन के हत्याकांडों ने उन्हें अधिक उग्र साधन व्यवहार करने के लिये विवश कर दिया। जिस समय लेक्सिंगटन के हत्याकांड की खबर मिली, उसी समय एक अमरीकन के समाचार-पत्र ने लिखा-'अब नरक का समय आ गया है। अब तो शस्त्र ही अंतिम साधन रह गया है और इसीसे इस झगड़े का निर्णय होगा।'*

सम्राट जार्ज-तृतीय, पार्लियामेंट और अधिकांश ब्रिटिश राजनीतिज्ञ तो स्वार्थ और अपने हठ की रक्षा करने में इतने डूब गए थे कि उन्हें अमरीकन राष्ट्रीय नेताओं की उचित-से-उचित माँग और कार्यों में बगावत ही दिखलाई देती थी। हम पाठकों को बतला चुके हैं कि किस तरह उन्होंने काँग्रेस के नम्र और विनीत प्रार्थना-पत्रों को ठुकरा दिया था, उनके शांत और संगठनात्मक आंदोलन को भी अपनी पाशविक शक्ति से तोड़ने की कोशिश की और एक अनुचित क़ानून की रक्षा करने के

* America Archives; August 1776.

लिये चार दूसरे स्वेच्छापूर्ण क़ानून बनाए। अमरीका में जो अंगरेज शासक थे, वह पार्लियामेंट को दमन करने के लिये उत्साहित करते थे और अमरीकन आंदोलन को तथ्यहीन और शक्तिहीन बतलाते थे। वे समझते थे कि टोरी लोगों की सहायता से वे देशभक्तों को पीस डालेंगे। यही नहीं, जब अमरीकन और अंगरेज सैनिकों में सशस्त्र झगड़े होने लगे, तब अमरीकन सैनिकों के साथ लड़ाई के सैनिकों की तरह व्यवहार न करके बाग़ियों की तरह व्यवहार किया जाता और हथकड़ी-बेड़ी डालकर उन्हें इंगलैंड भेज दिया जाता, था जहाँ उनपर अभियोग चलाया जाता था। अंग्रेज सैनिकों को जब अवसर मिलता, तब वे देशभक्तों की बस्तियों के साथ वही व्यवहार करते थे, जो दुश्मनों के देश में किया जाता है-यानी वे उन्हें लूट लेते, स्त्रियों को तंग करते और मकानों में आग लगा देते थे। ऐसी स्थिति में किसी भी स्वाभिमानी राष्ट्र के लिये केवल एक ही मार्ग था और वही आगे चलकर अमरीकनों को भी ग्रहण करना पड़ा।

एक केवल सेमुएल एडमस ही ऐसा आदमी था, जिसने स्टाँप-ऐक्ट के बनते ही यह निश्चय कर लिया था कि अमरीका को इंगलैंड से पृथक हो जाना चाहिए। सेमुएल एडमस, जान एडमस और मसाशुसेट्स के कुछ नेता तो चाहते थे कि द्वितीय सार्वदेशिक कांग्रेस में पूर्णस्वतंत्रता की घोषणा कर दी जाय, परंतु इनका समर्थन करनेवाले अधिक लोग

नहीं थे। इन्हें अधिकांश लोग तीव्र आंदोलनकारी और उग्र नीति के पोषक समझते थे। जेफ़रसन तक भी, जिसने बारह मास बाद ही स्वतंत्रता की घोषणा का मसविदा बनाया था, इस समय उसके पक्ष में न था। परंतु ब्रिटिश नीति की उग्रता इतनी बढ़ रही थी कि शीघ्र ही वे विवश होकर पृथक होने की बात सोचने लगे। इसी समय पायने ने 'कामनसेंस' नाम की एक पुस्तिका पूर्ण स्वतंत्रता के पक्ष में लिखी। सभी लोगों ने इसे बड़े चाव से पढ़ा और उनके विचारों में क्रांति हो गई। श्रीमती जान एडमस ने अपने पति को पत्र लिखते हुए इसकी भूरि-भूरि प्रसंशा की और लिखा-"मेरी समझ में नहीं आता कि सच्चे हृदय का कोई भी मनुष्य इन विचारों से सहमत होने में एक पल भी किस तरह हिचक सकता है।" प्रोफ़ेसर टायलर लिखते हैं कि,"एक विचार में तो देशभक्त (ह्वग) और टोरी दोनों ही सहमत प्रतीत होते थे कि साम्राज्य से पृथक होने के विचार का शमन किया जाय, लेकिन छः ही मास में ऐसा परिवर्तन हुआ कि अधिकांश ह्वग दल वालों के विचारों में एकदम परिवर्तन हो गया और उन्होंने खुलकर पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा कर * ही दी'। यह सब ब्रिटिश नीति की बलिहारी थी।

उपनिवेशों के राष्ट्रीय नेता बड़े ही असमंजस से इन विचारों को ग्रहण कर रहे थे। वाशिंगटन ने लिखा-'मेरे

* Tyler's Literary History ; Chapter XXIc. VII S९

देशवासियों को बड़ा ही खेद होगा, लेकिन समय और दमन सब कुछ कर दिखाता है और मुझे जो वर्जीनियाँ से पत्र प्राप्त हुए हैं, उनसे मालूम होता है कि 'कामनसेंस' वहाँ के बहुत-से लोगों के विचारों में एक दम क्रांति कर रही है।'

बहुत दिन तक यह विचार भिन्न-भिन्न नेताओं के मस्तिष्क को उत्तेजित करता रहा था। जेफरसन ने जिसने आगे चलकर स्वतंत्रता की घोषणा लिखी है-अपने एक लिखित पत्र में लिखा है कि "ब्रिटिश साम्राज्य में एक भी दूसरा मनुष्य ऐसा न होगा, जो ग्रेट-ब्रिटेन के संबंध को मुझसे अधिक प्रेम से देखता हो, परंतु जिस ईश्वर ने मुझे बनाया है, उसकी शपथ लेकर कहता हूँ कि जिस तरह हमें ब्रिटिश साम्राज्य से सहयोग करने के लिये कहा जाता है, उसे अंतिम स्वाँस तक मैं स्वीकार नहीं करूँगा।' कुछ ही दिन बाद ७ जून को पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा करने पर विचार करने के लिये कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। कई दिन के वादाविवाद के बाद निश्चय हुआ कि कुछ प्रांत के लोगों को समय दिया जावे कि वे अपने प्रदेश में जाकर जनता से इसकी स्वीकृति प्राप्त करें, परंतु इस विचार से कि समय नष्ट न हो, एक कमेटी बना दी गई कि वह पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा तैयार करे। जेफ़रसन ने यह घोषणा तैयार की और इस कमेटी में पेश की, जो बिना किसी परिवर्तन के ही स्वीकार कर ली गई।

पहली जुलाई को कांग्रेस में स्वतंत्रता की घोषणा पर वादाविवाद प्रारंभ हुआ, परंतु अभी तक शार्टहेंड की प्रथा नहीं चली थी, इसलिये हमें पूरे भाषणों का पता तक नहीं चलता था। विपक्षियों ने पूरी तरह कोशिश की कि यह प्रस्ताव पास न हो, परंतु अब समय बदल चुका था और ब्रिटिश नीति ने अधिकांश मनुष्यों के मस्तिष्क में ब्रिटिश साम्राज्यवाद से इतनी घृणा पैदा कर दी थी कि उन्हें अब इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग ही दिखलाई न पड़ता था।

तेरह में-से नौ उपनिवेशों ने इसे स्वीकार कर लिया, कि अंतिम निर्णय कल किया जाय। लेकिन यकायक दूसरे दिन से अधिवेशन ही भंग हो गया। उसी सायंकाल को–जब कि डिकिनसन प्रस्ताव के विपक्ष में अपना भाषण दे ही रहा था, सूचना मिली कि न्यूयार्क के कुछ ही दूर पर सैंतीस ब्रिटिश जहाज़ आ पहुँचे हैं और दूसरे दिन सुबह ही गोले फटने की भी आवाज़ सुनाई पड़ने लगी। पहली जुलाई को मीटिंग समाप्त होने से पहले ही जनरल वाशिंगटन का पत्र आ पहुँचा, जिसमें लिखा था कि तीन-तीन, चार-चार करके अंगरेज़ी जहाज़ आ रहे हैं और शीघ्र ही उनका आक्रमण होनेवाला है। दमन और कठिनाइयाँ तो एक स्वभिमानी राष्ट्र के निश्चय को और भी दृढ़ बना देता है। इन समाचारों से प्रतिनिधियों में और भी आग लग गई। अब तक जो

प्रतिनिधि विरोध कर रहे थे, उन्होंने भी अपना मत बदल दिया और सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास किया गया कि 'संयुक्त अमरीका' को एक स्वतंत्र राज्य होने का अधिकार है, जैसा कि प्रत्येक राष्ट्र को होना चाहिए। अब वे ब्रिटेन की पराधीनता से पूरी तरह मुक्त हो गए और ग्रेट ब्रिटेन से उनका राजनैतिक संबंध भी टूट गया। एडमस ने अपनी स्त्री को लिखा था कि, इस तरह अमरीका के सबसे बड़े प्रश्न का निश्चय हो गया'''सन् १७७६ (अब से) दूसरी जुलाई हमारी संतान के लिये उत्सव का दिन होगा। अब से आगे यह दिन प्रदर्शन और परेड, तोप, घंटियों और रोशनी द्वारा देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक मनाया जायगा।'

८ जुलाई—१७७६ को यह घोषणा पहली बार जनता को एक ऊँचे प्लेट्फार्म पर पढ़कर सुनाई गई, प्रसन्नता-सूचक ध्वनि से वायुमंडल गूंज उठा, सैनिकों ने खुशी में तोपें दाग—दाग कर बहुत—सा गोला-बारूद समाप्त कर दिया, तमाम रात और दिन घंटे बजते रहे; इनमें सबसे बड़े घंटे पर लिखा था—"सारे देशों में और उसके निवासियों में स्वतंत्रता की ध्वनि पहुँचा दे।' मकानों और दूकानों में रोशनी भी की गई।

फिर इस तरह की ख़ुशी सभी उपनिवेशों में मनाई गई। मसाशुसेट्स के कुल घरों गिर्जों में यह पूरी घोषणा पढ़ी

गई और नगरों की किताबों में उसका पूरा इंदिराज हो गया। रोहड् द्वीप में जब वह पढ़ी जा रही थी, तब जनता बीच-बीच में 'जयध्वनि' कर उठती थी-'समस्त संसार के स्वतंत्र व्यवसाय।' एक नगर में इस सूचना का स्वागत इंगलैंड के माल की होली जलाकर और रोशनी-आतिशबाजी और पटाखों द्वारा किया गया। यह संदेश जब हडसन नदी पर पड़े हुए राष्ट्रीय सैनिकों को मिला, तब उन्होंने जयध्वनि की और उन्हें प्रतीत हुआ कि अब उनका एक देश है, जिसके लिये वे लड़ और मर सकते हैं। न्यूयार्क में जब यह समाचार सैनिकों ने सुना, तो वे उत्तेजित हो गए और उन्होंने बोडलिंग ग्रीव पार्क में स्थापित सम्राट् जार्ज-तृतीय की मूर्ति को तोड़ डाली, उसका सिर गवर्नर के मकान की ओर फेंक दिया और धड़ की गोलियाँ ढालकर आपस में बाँट ली। *

घोषणा के बाद ही जान एडमस ने लिखा है कि, 'मैं जब सन् १७६१ की ओर देखता हूँ और न्यायालय में किट्स आफ् ऐसिसटेंस के संबंधी बहस, जिसे मैं अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन के झगड़े का प्रारंभ समझता हूँ, याद आती है और फिर उसके बाद के सभी राजनीतिक मामलों-कारणों और परिणामों की शृंखला पर विचार करता हूँ, तो मुझे इस क्रांति की आस्मिकता और महानता पर आश्चर्य होता है। ग्रेट ब्रिटेन की नीति मूर्खतापूर्ण है और अमरीका की बुद्धिमत्ता पूर्ण।

---

* The Making of a republic.

वाशिंगटन ने ९ जुलाई को अपनी सब सेना के सामने घोषणा सुनाते हुए कहा-'मुझे आशा है कि इस महान अवसर पर प्रत्येक अफ़सर और सैनिक में नवीन प्रेरणा होगी कि वे अधिक उत्साह और सच्चाई से अपना-अपना काम करें; क्योंकि अब उसके देश की रक्षा और शांति उनके शस्त्रों की सफलता पर निर्भर है और वे ऐसे शासन के सेवक हैं, जो उनकी योग्यता की पूरी क़दर करेगा और वे अब स्वतंत्र देश के सबसे बड़े-से-बड़े सम्मान को प्राप्त कर सकेंगे।'

(८)

बोस्टन की विजय

सेना को संगठित करने के बाद अब वाशिंगटन इस चेष्टा में था कि ब्रिटिश सैनिक बोस्टन से निकलकर सामने मैदान में आवें। उसने बोस्टन के सब नाके बंद कर रक्खे थे और आस-पास के प्रदेश से मवेशी हाँक दी थी। इससे ब्रिटिश सेनाओं को रसद मिलना असंभव हो रहा था और उनकी ऐसी दुर्दशा हो रही थी कि उस समय एक महिला ने बोस्टन से लिखा है-"हम चारों ओर से घिर गए हैं, बड़ी विचित्र स्थिति है। कुल-देश ही शस्त्र उठाकर सामना करने को तैयार हो गया है। हमें निजी खाद्य पदार्थ भी नसीब नहीं होते और प्रायः प्रतिदिन ही शहर पर गोला-बारी होने का ख़तरा रहता है और बागी बड़े ढीठ हो गए हैं और जब से वाशिंगटन और ली ने उनका संचालन अपने हाथ में लिया है, तब से तो वे निरंतर हमारी ओर आगे बढ़ रहे हैं।'

बोस्टन का यह घेरा कई सप्ताह तक जारी रहा, पर ब्रिटिश सेनाएँ अपनी जगहों से नहीं हिलीं। इसपर वाशिंगटन ने ब्रिटिश सिंह को कोंच कर उठाने के लिये चौदह सौ सैनिक भेजे कि वे जाकर एक टीले पर अड्डा जमा लें, जो ब्रिटिश

सेना के सामने ही था। अमरीकन सैनिक रात-ही-रात में उस टीले पर जा पहुँचे और प्रातः काल जब ब्रिटिश सैनिक उठे, तो उन्हें सामने दुश्मनों की मोर्चे-बंदी देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। परंतु वे इसपर भी अपने मोर्चे से नहीं हिले और बंदूकें छोड़ते ही रहे। वाशिंगटन को अब निश्चय हो गया कि अंग्रेजी सेनाएँ सहायता की राह देख रही हैं और जब तक नई ब्रिटिश सेना नहीं आ पहुँचेगी, वे अपने मोर्चों से नहीं निकलेंगी। वाशिंगटन के पास गोला-बारूद की कमी होती जा रही थी। और शीत ऋतु भी समीप आ रही थी। राष्ट्रीय सैनिक इस तरह के जीवव के आदी नहीं थे। इसलिये अधिक दिन तक इस घेरे को ऐसी दृढ़ता से जारी रखना उनके लिये अत्यंत कठिन कार्य हो गया था।

इधर कनकोर्ड की घटना के एक मास बाद ही कुछ मुट्ठी भर राष्ट्रीय नवयुवक सैनिकों ने टिंगोंडेरोगा में एक शानदार विजय प्राप्त की, जिससे अमरीकन लोगों के हाथ में बहुत कुछ तोपें औ बारूद आ गई। दूसरी विजय क्राउन पॉइन्ट की थी, जिससे कैनेडा के नाके पर उनका पूरा अधिकार हो गया। नवंबर सन् १७७५ में आरनाल्ड दो फुट बरफ़ पर चल कर दो सौ मील की यात्रा समाप्त कर, क्यूबेक जा पहुँचा, यहाँ नवयुवक मॉंटगोमरी उससे अपने सैनिकों-सहित जा मिला। इस समय इस संयुक्त सेना की संख्या नौ सौ थी और इन थोड़े-से आदमियों से मॉंटगोमरी ने शहर के चारों

तरफ़ घेरा डाल दिया था। उसने इस घेरे को किसी तरह तीन सप्ताह तक क़ायम रक्खा। लेकिन अब उसकी रसद और बारूद चुकने पर आ चुकी थी, उसके सैनिकों में रोग और बीमारी जोर पकड़े जाती थी, इसलिये उनमें असंतोष और अवज्ञा फैलती जा रही थी। उसके पास जो तोपें थीं, वह निकम्मी और बेकाम थीं। अब उसके पास तीन ही मार्ग थे—आत्म-समर्पण, पीछे हटना अथवा आक्रमण करना। पहली बात तो उसे किसी भी तरह स्वीकार नहीं थी, दूसरी नामुमकिन थी, इसलिये अब अंतिम मार्ग ही रह गया था। रिचार्ड मांटगोमरी ने वर्ष के अंतिम दिन वर्षा और तूफ़ान में दुश्मन पर धावा बोल ही तो दिया।

उसने अपनी तलवार खींची और कहा—'न्यूयार्क के लोगो! अपने जनरल के पीछे चले आओ।' और वह बाज की तरह तेजी से दुश्मन के पहरेदारों पर झपटा, पर वे भी सावधान थे। गोलियों की घनी बौछार अमरीका की सेनाओं पर पड़ी, उनमें-से कुछ गोली मांटगोमरी की छाती फाड़ कर घुस गईं। इस वीर नेता के गिरते ही सेना का दम टूट गया। अरनाड ने सैनिकों को इकट्ठा करने की बहुत कोशिश की, पर वह असफल रहा। इस तरह कनाडा अंगरेजों के लिये बच रहा।

इधर ब्रिटिश-सेना बोस्टन से निकलती न थी और शीत ऋतु के आगमन की राह देख रही थी, क्योंकि उन्हें विश्वास

था कि उस समय तक अमरीकनों की शक्ति बहुत निर्बल हो जायगी। वाशिंगटन चाहता था कि घेरे के जारी रखने में जो राष्ट्रीय शक्तियाँ व्यय हो रही थीं, वह न हों और शीघ्र ही कुछ निबटारा हो जाय। शीत ऋतु भी समीप आ चली थी और कुछ ही दिनों में बोस्टन और अमरीकन छावनियों के बीच की खाड़ी जम जाने को थी। यह निश्चय कर कि अंगरेजी सेना सहायता आते ही इस क़ैद से निकलने की कोशिश करेगी। इसलिये वाशिंगटन ने उन मोर्चों को मज़बूत किया, जहाँ आक्रमण की आशंका हो सकती थी।

अमरीकन सैनिक एक निश्चित अवधि के लिये भरती किए गए थे और वह अवधि अब समाप्त हो चुकी थी। इसलिये कांग्रेस ने आज्ञा दी कि उन सैनिकों में-से बाईस हजार दो सौ बहत्तर आदमियों की फ़ौज फिर भर्ती की जाय। अवधि की इस प्रथा से वाशिंगटन को संपूर्ण युद्ध में बड़ी ही तकलीफ़ हुई। वाशिंगटन ने एक पत्र में कांग्रेस के सभापति को लिखा कि, 'सेना के आधे कप्तान घर लौट जाना चाहते हैं, और यदि ऐसा हो गया, तो इससे उनके अधीनस्थ सैनिकों पर भी असर पड़ेगा, जो अफ़सर रह गए हैं, वे एक ही रेजीमेंट में अन्य उपनिवेशवालों के साथ रहना नहीं चाहते। बहुतों ने तरक्क़ी के लोभ में अपने नाम लिखा लिए थे और बहुत-से इसलिये अलग खड़े हैं कि जब उनको कुछ लाभ होने की संभावना होगी, तब वे सेना में मिल जायँगे। अफ़सरों से भी अधिक

कठिनाई सैनिकों के साथ थी। वे अपना नाम तब तक नहीं लिखाना चाहते थे, जब तक उन्हें यह न मालूम हो जाय कि उनके कर्नल, लेफ्टीनेंट कर्नल और कप्तान कौन होंगे? कनेक्टीकट उपनिवेश के लोग मसाशुसेट्स के अफसरों के नीचे काम करना नहीं चाहते थे और मसाशुसेट्स के आदमी रोहडद्वीप के आदमियों के साथ।

वाशिंगटन ने कांग्रेस को लिखा कि, 'यहाँ सार्वजनिक भाव की जितनी कमी है, उसपर आपका ध्यान दिलाने के लिये मैं विवश हुआ हूँ। मैं आशा करता था कि देश के कार्य के लिये स्वयं यह कर्मचारी उनके काम लिखने की हमको प्रार्थना करेंगे; परंतु मुझे तो अब प्रतीत होता है कि संभवतः यह हमें ऐसे कठिन अवसर पर छोड़ जाँय। हमारी स्थिति बड़ी भयप्रद है और जनरल होवे यह भली प्रकार जानता है। निस्संदेह ज्योंहीं उसके पास नई सेना आ जायगी, वह इस सूचना का भलीप्रकार लाभ उठाएगा।'

जनरल ग्रोव ने इस समय वाशिंगटन की बहुत सहायता की। वह सैनिकों के आचरण के संबंध में अधिक आशापूर्ण था-वह लिखता है-"यह लोग उतने ही वीर और कार्यशील हैं, जितने अन्य किसी भी देश के किसान—परंतु आप कुछ ही महीने की मिलीसिया में अच्छे बुद्धिमान मनुष्य पाने की आशा नहीं कर सकते। साधारण लोग अधिक लालची होते ही हैं। लोगों की बुद्धि व्यापारिक है; क्योंकि उनका

संबंध व्यापार से ही अधिक रहा है। आत्म-सम्मान के भाव और सैनिक के सजीव गुणों ने तो अभी उनमें अच्छी तरह प्रवेश तक नहीं किया है। हिज़ एक्सलेंसी वाशिंगटन को यह विश्वास है कि यहाँ के लोग मानव प्रकृति-बुराइयों से परे हैं और जब वे उनमें दूसरी जातियों के मनुष्य के समान स्वभाव और प्रकृति, ईर्षा और द्वेष गुण और अवगुण पाते हैं, तो वे उनकी निगाहों से गिर जाते हैं।'

अधिकांश राष्ट्रीय सैनिक शांति से रहनेवाले किसान थे। ब्रिटिश उग्रनीति और देश-सेवा के भाव से प्रेरित होकर वे अपने घर, खेत, स्त्री और बच्चों को छोड़कर चले आए थे। अब उत्साह का पहला प्रवाह धीमा पड़ गया था, कठिन सिपाही-जीवन के आधीन होने के कारण और कपड़ा तथा खाने-पीने की कमी के कारण तथा शीत के कष्टों का विचार करके वे घबड़ा उठे थे, उनकी इच्छा यह थी कि वे अब अपने देहाती घरों में जाकर अपने स्त्री और बच्चों को देखें।

इस स्थिति को देखकर वाशिंगटन ने मसाशुसेट्स की मिलीशिया के ३००० आदमी और न्यू हैंफ़शायर के, दो हजार सैनिकों को आज्ञा भेजी कि वे १० दिसम्बर तक कैंब्रिज के मोर्चों पर आकर उनकी जगह लेलें, जो घर जाना चाहते हैं। जिन लोगों ने घर लौटने का निश्चय किया था, उनको रोकने की भी चेष्टा की गई, पर वह व्यर्थ हुई और बहुत-से सैनिक

एक दिसंबर को छावनियां छोड़कर चल दिए। यह सब देहातों में पहुँचे, तो वहाँ की स्त्रियों ने इनका स्वागत इतनी धूम-धाम से किया कि इनमें फिर उत्साह का संचार हुआ और बाद को इनमें-से बहुत-से फिर राष्ट्रीय छावनियों में आ गए।

जिस दिन यह सैनिक छावनी से घर के लिये रवाना हुए, उसी दिन रसद, गोला-बारूद और अन्य सामानों से लदी हुई गाड़ियों-पर-गाड़ियां आ पहुँची। इनमें दो हजार बन्दूकें थीं, एक लाख फ्लिंट थे, तीस हजार गोलियाँ थीं, और ३० टन छर्रे थे। यह वह सामान था, जिसे अमरीकन जहाज़ ने दुश्मनों से छीना था। इस सहायता से सैनिकों में खुशी छा गई और बहुत-से अन्य सैनिक घर जाने से रुक गए। बोस्टन में जब अमरीकन सैनिकों की जय-ध्वनि का पता और उसका कारण मालूम हुआ, तो उन्होंने कहा—"अगर हमारी सेना समय पर हमारी सहायता के लिये आ पहुँची, तो बागियों को उनकी यह छोटी-छोटी विजय बड़ी ही महँगी पड़ेगी।"

अंत में कांग्रेस ने वाशिंगटन को आज्ञा दे दी कि यदि बोस्टन पर आक्रमण करना संभव हो, तो वह कर सकता है। वाशिंगटन ने निश्चय किया कि बोस्टन के दक्षिण की ओर स्थित डोरचेस्टर पहाड़ियों पर कब्ज़ा कर लिया जाय। वाशिंगटन ने कहा—यदि दुश्मन को लड़ने के लिये कोई बात

मजबूर कर सकती है, तो वह यही है कि हम डोरचेस्टर की पहाड़ी पर मोर्चाबंदी करने की चेष्टा करें। क्योंकि यदि हम इसमें सफल हो जांय, तो हम शहर के अधिकांश भाग और कुल बंदरगाह पर आधिपत्य प्राप्त कर सकेंगे।' इन पहाड़ियों पर कब्ज़ा होने से वे नुरू पहाड़ी तक पहुँच सकते थे, जहाँ से गोला-बारी करके दुश्मन को बोस्टन से निकालना संभव था।

वाशिंगटन इस आक्रमण के लिये बड़ी गंभीरता से तैयारी कर रहा था। उसने सब सेना में आज्ञा भेजी कि छावनियों में ताश तथा अन्य खेल बंद कर दिए जाँय। उसने लिखा-'इस सार्वजनिक भय की स्थिति में मनुष्य को कुमार्ग और विलास से अपनी प्रवृतियों को हटाकर ईश्वर और देश के लिये अपनी सब शक्ति और समय को केंद्रित कर देना चाहिए। ...हमारा लक्ष अत्यंत पवित्र है, यह मानव जाति और ईश्वर की रक्षा का कार्य है। हमारा सुख और शांति हमारे प्रयत्न की महत्वता पर ही निर्भर है। संक्षेप में स्वतंत्रता और गुलामी हमारे आचरणों का ही परिणाम होगी। इसलिये हमारे लिये इससे अधिक क्या प्रेरणा हो सकती है कि हम अपनी वृत्तियों का सदुव्यवहार करें। सैनिकों को यह स्मरण रखना चाहिए कि जो इस आक्रमण के समय में विना कमांडर-इन-चीफ़ की आज्ञा के छिपने की

कोशिश करेंगे, पीछे क़दम उठाएँगे या नियमों की अवहेलना करेंगे, उन्हें गोली से उड़ा दिया जायगा, ताकि उदाहरण रहे।'

डोरचेस्टर पहाड़ियों पर क़ब्ज़ा करने के लिये ४ मार्च नियत हुई। मोर्चेबंदी के लिये गाड़ियों में घास, लकड़ियों के गट्ठे और दूसरा सामान लादा गया और गाड़ियों के चलने की आवाज़ से दुश्मन को राष्ट्रीय सेनाओं के इस निश्चय का पता न लगे, इसलिये दूसरी ओर से थोड़ी-बहुत गोला-बारी भी की गई। दुश्मनों ने भी इसका जवाब दिया। इस गोलमाल में गाडियाँ और सैनिक डोरचेस्टर पर जा पहुँचे। रात भर बड़ी सरगर्मी से गढ़बंदी का काम होता रहा। यह काम इस होशियारी से और शांति से किया गया कि दुश्मनों को इसका पता दूसरे दिन ही चला, जब वे बड़ी मज़बूती से तैयार हो गए थे। अंगरेज़ सैनिक ने लिखा है-'आज सुबह ही डोरचेस्टर पाइंट पर दो बड़े और दो छोटे मोर्चे दिखलाई पड़े। यह सब रात-ही-रात में अल्लाउद्दीन के चिराग़ की करामात की तरह बड़े हो गए हैं। इन पहाड़ियों पर-से वे सारे नगर पर गोलाबारी कर सकते हैं। इसलिये या तो हमें उन्हें वहाँ से हटाना चाहिए या स्वयं ही नगर खाली कर देना चाहिए। एक दूसरे अंगरेज ने इसका वर्णन इस तरह किया कि-हम इन गत छ सप्ताह है। दो मास से, जैसा कि इस स्थिति में संभव हो सकता है, उससे अधिक

मजे की छान रहे थे, नाटक–नाच सब ही का मज़ा ले रहे थे, मालूम होता था कि इंगलैंड हमको भूल गया है और हम भी अपने को भूलने की चेष्टा कर रहे थे, लेकिन कल रात को तो हमारा यह नशा बुरी तरह झटका देकर उतार दिया गया। बागी कुछ समय से एक बंब-फैक्टरी तैयार कर रहे थे और कल रात को वे हमपर बंब भी बरसाने लगे। दो गोले तो मेरे पास ही आकर फूटे, एक कर्नल मौंकटन के मकान पर गिरा, पर भाग्य से बाज़ार से गुज़र जाने पर ही वह फूटा। बहुत-से मकान गिर गए, पर कोई मरा नहीं।'

श्रीमती जॉन एडमूस ने, जो अमरीकन पड़ावों के पास ही चिंता से बोस्टन पर आक्रमण होने की राह देख रही थीं, अपने पति को लिखा है—जबसे आप गए हैं, मैं निरंतर बड़ी ही चिंता की स्थिति में हूँ। एक महीना होगया, रोज़ कल-कल होता है, परंतु मैं यह नहीं जानती,-यह कल कब आयगा। परंतु सुनो! अब गोलों की गर्जना से यह मकान हिलने लगा है-मैं दरवाजे पर गई और मुझे मालूम हुआ कि हमारी सेना ने गोला–बारी कर दी है।

फिर सोमवार को उसी पत्र में-लिखा 'मैं अभी पेन की पहाड़ी से आई हूँ, जहाँ मैं गोलों की विचित्र गर्जना सुनने के लिये बैठी हुई थी और जहाँ से मैं प्रत्येक गोले को फेंके जाते हुए देख सकती थी। मेरे विचार में इस गर्जना में प्रकृति की एक अत्यंत महानता और पवित्रता का प्रदर्शन

छिपा हुआ है। अब तो यह गर्जना बहुत भयंकर होती जाती है; परंतु आह ! इस गर्जना में मृत्यु का कितना उग्र रूप छिपा हुआ है !! कितने हमारे देश-भाइयों का इसमें हनन होगा !!!"

"मैं करीब बारह बजे सोने गई; परंतु थोड़ी ही देर बाद उठ बैठी ।...मैं सो न सकी। खिड़कियों की खट-पट, मकान का हिलना, गोलों की गर्जना, फूटने की भयंकर आवाज़ मेरे हृदय में ऐसे भावों को पैदा करती है, मेरी आँखें ऐसे दृश्यों को देखती हैं, जिनका पहले मेरे लिये विचार करना भी कठिन था। मुझे आशा है कि मैं इस पत्र के भेजने से पहले ही बोस्टन पर—चाहे वह नष्टप्राय हालत में में ही क्यों न हो—विजय प्राप्त करने की सूचना दूंगी।"

जनरल होवे ने पचीस सौ अंगरेज सैनिक लार्ड पर्सी की अध्यक्षता में जलमार्ग से पहाड़ी पर आक्रमण करने के लिये भेजे। परंतु समुद्र में इतना भयंकर तूफ़ान उठ खड़ा हुआ कि नावों का उस पार पहुँचना ही असंभव हो गया। तूफ़ान के शांत होने में कई दिन लगे। इस बीच में अमरीकनों की ताक़त बहुत बढ़ गई। इसलिये अंगरेजों को अब आक्रमण करने का विचार ही छोड़ना पड़ा। पहाड़ी पर-से अमरीकन सैनिक बराबर गोला-बारी कर रहे थे और अब जनरल होवे का नगर में रहना असंभव हो गया था, ऐडमिरल सोलढम ने भी जनरल होवे को सूचना दी कि

अब बंदरगाह में अंगरेजी जहाजों का टिकना कठिन और भयप्रद है। अंत को होवे को यही निश्चय करना पड़ा कि नगर जल्दी-से-जल्दी खाली कर दिया जाय। परंतु यह हो कैसे? क्योंकि होवे आत्म-समर्पण करना ता नहीं चाहता था और पीछे लौटने में अमरीकन सैनिक उनपर आग बरसाने के लिये तुले बैठे थे, जिससे उसकी बहुत-सी सेना के नष्ट होने का भय था। इसलिये होवे ने घोषणा की कि यदि ब्रिटिश सेना के लौटने और जहाज़ों में चढ़ने में बाधा की जायगी, तो वह बोस्टन में आग लगाकर उसे भस्म कर देगा। धमकी काम कर गई। यद्यपि सैनिक नीति से यह विरुद्ध था कि बोस्टन की रक्षा के लिये अंगरेजी सेना को ध्वंस का यह सुगम अवसर छोड़ दिया जाय। परंतु वाशिंगटन अपने हाथ अपने ही देशवासियों के रक्त से रँगना नहीं चाहता था। इसलिये उसने ब्रिटिश सेनाओं को शांति से जाने दिया।

अंगरेजी सेनाओं के चले जाने के दूसरे ही दिन वाशिंगटन ने नगर में प्रवेश किया। नगर-निवासियों ने जय-ध्वनि से उसका स्वागत भी किया। चारों तरफ हर्ष छा गया। एक दर्शक ने लिखा है कि "वास्तव में यह दृश्य कितना ही मनोरम होता यदि उन लोगों का वार्तालाप और परस्पर मिलन होता जो इतनी भयंकर स्थितियों में बहुत दिनों से एक-दूसरे से बिछुड़े हुए थे।

राष्ट्रीय सेनाओं की यह बिजय बहुत ही महत्वपूर्ण थी।

ड्यूक आफ़ मेंचेस्टर ने हाउस आफ़ लार्ड्स में भाषण देते हुए कहा-युद्ध की सभी सामग्रियों से सुसज्जित, चुने हुए अफ़सरों की संरक्षक में चुनी हुई ब्रिटिश सेना, जिसकी सहायता पर एक बड़ा जहाजी बेड़ा तैनात था, विद्रोही प्रजा को दुरुस्त करने, एक विरोधी नगर को सबक़ देने और ब्रिटेन के अधिकारों की स्थापना करने के लिये भेजी गईं थीं। इस सेना ने कितने ही कठिन मास बागियों की क़ैद में व्यतीत किए उनके (राष्ट्रवादियों के) सैनिकों ने उनके सभी मार्ग बंद कर दिए, उन्होंने उनके किसी प्रयत्न को सफल न होने दिया और उनकी सारी योग्यता और होशियारी को धूल में मिला दिया।

(९)

देशद्रोहियों का कार्य

अमरीका में इस समय राज-भक्त लोगों की संख्या और शक्ति अधिक थी। यह टोरी कहलाते थे। यह नवीन प्रजा-तंत्र को नष्ट करने के लिये ब्रिटिश-सत्ता से भी अधिक उतावले हो रहे थे। प्रजातंत्र से उन्हें इतनी घृणा थी कि, उन्होंने ब्रिटिश सेना की सहायता करने में दया-धर्म को भी ताक पर उठाकर रख दिया था। यदि सच पूछा जाय, तो प्रजातंत्रवादियों को जितना उत्साह प्रजातंत्र की रक्षा करने में नहीं था, जितना इन राज-भक्तों का उसके नष्ट करने में था। उन्हें ब्रिटिश अजय शक्ति में पूर्ण विश्वास था और वे व्यग्रता से उस अवसर की राह देख रहे थे, जब देश-भक्तों की संपत्ति और भूमि ज़ब्त करके उनको बांट दी जायगी। मेडम हिगिनसन ने तो अपनी यह हार्दिव इच्छा प्रकट की थी कि ब्रिटिश शक्ति जब विद्रोहियों पर विजय प्राप्त कर लेगी, तब वह उस अवसर को अपनी गाड़ी के पहिए को विद्रोहियों के रक्त में चलाकर मनाएगी।

अब आगे जो लड़ाई का मुख्य क्षेत्र होने वाला था, उसके चारों तरफ़ राज-भक्तों का बड़ा ज़ोर था। न्यूयार्क के सारे प्रदेश में तो राज-भक्त होना एक गौरव समझा जाता था और देश-भक्तों को बड़ी तुच्छ और हेय दृष्टि से देखा जाता था। एक किसान ने रक्षा-समिति के पास शिकायत की कि, प्रजा-तंत्रवादी होने के कारण उसके साथ बड़ा ही बुरा व्यवहार किया जाता है। उसके टोप की कलगी छीन कर जूते से कुचल डाली गई, उसके एक अन्य प्रजा-तंत्र-वादी डच मित्र के बाल उसके विचारों के कारण खींचे गए और राज-भक्त होटल-वालों ने उनके हाथ शर्बत तक नहीं बेचा। राई गाँव में एक शिक्षक शांति-पूर्वक चौदह वर्ष से रहता था और सब ग्रामीण पड़ोसी उससे स्नेह करते थे, परंतु उसने एक दिन प्रजातंत्र के पक्ष में कुछ शब्द कहे, इससे गाँववाले बड़े उत्तेजित हो गए। इस बहाने पर कि उसने एक ग़ैर क़ानूनी होटल को कुछ रुपया उधार दिया है, उसे जेल में ठूंस दिया गया और जब वह बिचारा वहाँ पड़ा था, तब पीछे से उसका मकान भी तोड़ डाला गया और उसकी पूंजी में—से २० पौंड तो विना किसी कारण के और ३०० पौंड ज़मानत के बहाने पर हथिया लिए।

न्यूयार्क के जितने मालदार पूंजी-पति थे, उन्होंने तो क्रांति के विरोध करने का ठीका ही ले लिया था। जब वाशिंगटन अपनी सेनाओं सहित न्यूयार्क में घुस आया था,

तब गवर्नर भाग कर पास के एक जहाज़ में जा छिपा था। परंतु यह टोरी दल-वाले पूंजीपति बराबर उससे पत्र-व्यवहार करते थे और छोटी-बड़ी सब ख़बरें उसके पास पहुँचाया करते थे। वे उसकी आज्ञा का उसी तरह पालन करते थे, जैसे वह अब भी न्यूयार्क का शासक हो। इन्हें जहाँ भी अवसर मिलता था ये सीधे लोगों को प्रजा-तंत्र के विरोध में भड़काने की चेष्टा करते थे। यह वाशिंगटन की सेना के प्रति तरह-तरह की हवाएँ बाँधा करते थे। कभी वे यह मंसूबा करते थे कि सम्राट् के जन्म-दिवस के पहिले ही सब सार्वजनिक इमारतों पर यूनियन जैक फहराया जायगा और कभी यह आशा करते थे कि अमुक-अमुक प्रसिद्ध देश-भक्तों की हत्या कर डालने से सब जगह शांति हो जायगी।

अभी वाशिंगटन को न्यूयार्क में बहुत दिन आए न हुए थे कि उसके गुप्तचरों ने एक भयंकर षड़-यंत्र का भंडा-फोड़ किया। यह षड़-यंत्र राष्ट्रीय बारूदखाने में आग लगाने, वाशिंगटन और उसके मुख्य अफ़सरों को उड़ा ले जाने की नीयत से था। इसके पूरा करने के लिये गवर्नर, ट्रायन और उसके टोरी एजेंटों ने आकाश-पाताल एक कर दिया था और रुपए की मदद से राष्ट्रीय सेना के एक बड़े भाग को तोड़ लिया गया था। वाशिंगटन का एक रक्षक तक गुप्त रूप से दुश्मनों से मिल गया था। इस षड़यंत्र के

टूटने के बाद बहुत-से लोग जेलखाने में भेज दिए गए, परंतु राजभक्तों का उत्साह तब भी ठंडा न हुआ।

बारचेस्टर और दूसरी जगह के किसान शांति-प्रिय थे; इसलिये क्रांति की लड़ाई-झगड़ों से वे देश-भक्तों के विरोधी हो गए थे। वे समझते थे कि यह प्रजातंत्र-वादी ब्रिटिश सम्राट् के प्रति, जिसके संरक्षण में उनकी जन और संपत्ति सुरक्षित थी, व्यर्थ ही झगड़ा उठाकर देश का सर्वनाश किए देते हैं। सरकार के एजेंट लोगों के इस सीधेपन का पूरा फ़ायदा उठाते थे। कांग्रेस ने चाय-कर का विरोध करने के लिये यह प्रस्ताव किया था कि ग्रेटब्रिटेन और आयलैंड को कोई माल न भेजा जाय। वे उन्हें समझाते थे कि इस नीति से देश के व्यापार का सर्वनाश हो जायगा और लोग भूखों मरने लगेंगे। यह लोग कहते थे कि फ्लेक्स के बीज को ही ले लीजिए, आयलैंड इसका सबसे बड़ा ख़रीददार है। अगर कांग्रेस की यह नीति बरती जाय, तो यह बीज हमारे घरों में ही पड़ा सड़ता रहेगा। इसके विपरीत अगर हम उसमें से चाय कर अदा भी करदें, तो भी हमें बहुत-कुछ बच रहेगा। वे कहते मान लो मैंने इस फ़सल में ११ बुसेल बीज साफ़ करके रख छोड़ा है। 'इस समय इसका बाज़ार का भाव कम-से-कम दस शिलिंग है, जिसके हिसाब से मेरे बीज ५ पौंड और १० शिलिंग में बिक सकते हैं। दस शिलिंग मैं ख़र्च के लिये छोड़ देता हूँ। पाँच पौंड के चार सौ तीन पौंड हुए और

यदि हम लंदन का एक्सचेंज दर दो सौ प्रति से भी माने तो हम इससे दो सौ पौंड चाय का कर अदा कर सकते हैं। यह दो पौंड चाय छः पौंड प्रतिवर्ष के हिसाब से तैंतीस वर्ष ४ महीने के लिये पर्याप्त है। इसलिये चाय के इस भयंकर कर को, जिसने सारे देश में यह तूफ़ान पैदा कर दिया है, अदा करने के लिये मुझे तैंतीस वर्ष में केवल एक बुसेल बीज बेचना पड़ता है।" * इस तरह के प्रचार कार्य से इन सीधे किसानों पर बड़ा ही बुरा असर पड़ता था। सूक्ष्म बातें तो उनकी समझ में आती ही न थीं।

स्वार्थी और चालाक टोरी इन लोगों को उंगलियों पर नचा रहे थे। सम्राट् के पक्ष में कितने ही दलों ने घोषणा की-'हम अपनी स्थिति साफ़ कर देना चाहते हैं। हमने कभी भी कांग्रेसों और समितियों को स्वीकृत नहीं किया, हम व्यक्तिगत संपत्ति के नाश का विरोध करते हैं। हम उत्पाती और विद्रोहियों के कार्य को घृणा से देखते हैं। अंत में, हम जिस सर्वश्रेष्ठ महान् जार्ज-तृतीय की राजभक्त प्रजा थे, आगे भी उसी तरह रहना और मरना चाहते हैं।' जब कांग्रेस के लिये इस प्रदेश से प्रतिनिधि चुनने के लिये मत लिए जाने-वाले थे, तब टोरियों का एक बड़ा भारी जलूस इस सभा की अनियमितता के विरोध में गाता हुआ निकला-ईश्वर हमारे

---

* Tylers Literary History ; vol Ix Chapter XV Section 3.

सम्राट् महान जार्ज की रक्षा करे। सशस्त्र दलों ने रात को प्रदेश पर कब्ज़ा कर लिया, ह्विग अर्थात देशभक्तों के बाड़े तोड़ डाले और घोड़ों का भगा दिया गया और तोपों में पत्थर भर दिए। इन करतूतों से जो-हुजूर लोग अंगरेजी सरकार की सहानुभूति अपनी ओर खींचना चाहते थे, परंतु जब ब्रिटिश सेनाओं ने इन देशों में प्रवेश किया, तो उसने सरकारवादी टोरी और प्रजातंत्रवादी ह्विग-किसी को भी नहीं छोड़ा। वे हो-जो सम्राट जार्ज चिरंजीवी हो!, कहकर कांग्रेस का विरोध करते थे, अब उसी सम्राट् के सैनिकों ने उन राजभक्त-प्रजा को तरह-तरह से लूट-खसोट कर पैसे-पैसे के लिये मोहताज कर दिया। ब्रिटिश पक्ष के एक ऐसे ही अन्य भक्त और वकील जोसेफ़ गेलोवे को लज्जा के साथ स्वीकार करना पड़ा था कि जहाँ ब्रिटिश सेनाएँ जाती थीं, वहाँ मित्र, शत्रु, सहायक और विद्रोही सबका भाग्य एक ही होता था। "लूट-खसोट की मारमार" और पक्के-से-पक्के स्वामिभक्त के हृदय में भी उस प्रणाली के प्रति असंतोष पैदा हो जाता था, जिसमें राजभक्तों के रक्षा देने के बहाने से उनको इस तरह चूसा जाता था कि वे अपना पेट भी नहीं भर सकते थे।

ब्रिटिश सत्ता के पास धन-शक्ति थी, कितने ही भूखे प्रजा-तंत्र-वादी अपने लोभ को संवरण न कर सकते और इस जाल में फँस ही जाते थे। अंगरेज़ लोगों को जहाँ भी मौका मिला है, वहाँ ही वे मनुष्य को इस कमज़ोरी का उपयोग करने में नहीं

चूके हैं। जान एडमूस ने लिखा था कि–इंगलैंड अमरीका को 'घूंस के सोने के टाँके से जोड़ना चाहता है।' उन्होंने चारों तरफ़ रुपया बुरी तरह बाँटा, जिससे प्रजातंत्र के संगठन को बड़ी हानि पहुँचने लगी। प्रजा-तंत्र सरकार ने जब कागज़ी नोट चलाए, तब इन राजभक्त टोरियों ने बहुत से जाली नोट बना डाले और विज्ञापन निकाला कि जो लोग भीतरी प्रदेशों में जाते हों, उन्हें यह नोट कागज़ के मूल्य में ही मिल सकते हैं। खेद तो यह है कि कुछ लोग देशभक्तों में भी आर्थिक लाभ के लिये ऐसे कार्यों में शामिल हो जाते थे। जब ब्रिटिश सेनाएँ स्टेटिन द्वीप में आईं, तो टोरी राजभक्तों ने तालियों की गड़गड़ाहट में उनका स्वागत किया। उन्होंने प्रदेशीय नोटों की एक बड़ी होली जलाई और कांग्रेस को गालियाँ दीं। उन्होंने ब्रिटिश सैनिकों से कहा कि जब तक विद्रोहियों की पूरी तरह मरम्मत न की जावेगी, तब तक शांति नहीं होगी। इस तरह के कामों से प्रजातंत्र के नोटों की कुछ भी क़ीमत नहीं रह गई और प्रजा-तंत्र के सामने अत्यंत भयंकर आर्थिक समस्या उठ खड़ी हुई।

इसका परिणाम यह हुआ कि प्रजातंत्र के नोटों को कोई पूछता तक न था। एक जोड़ा जूता ख़रीदने के लिये ७०० डालर के नोट देने पड़ते थे, एक गाड़ी भर नोट देने से बत्तीस सेर अनाज मिल सकता था।

भारतवर्ष की तरह वहाँ भी यह प्रश्न गूंजता था कि क्या

भिन्न-भिन्न उपनिवेशों, दलों और मतों की बिखरी हुई शक्तियों को एक तार में पिरोया जा सकता है। देशद्रोही टोरी दल-वालों ने इस बात का वितंडावाद बना लिया था। वे कहते यह गुदड़ीवाले सैनिक क्या लड़ाई जीतेंगे? यदि यह लोग किसी तरह जीत भी जाँय, तो सब उपनिवेश सदा के लिये रक्तपात में डूब जायँगे। वे कहते कि प्रांतीय प्रतियोगिता की ऐसी ज्वाला भड़क उठेगी, जो कभी शांत न होगी। कभी एक प्रांत दूसरे पर आधिपत्य कर लेगा, तो कभी दूसरा तीसरे पर और यह झगड़े तब तक जारी रहेंगे, जब तक यह प्रदेश अन्य प्रदेशों को ग़ुलामी में जकड़ न जाय। ऐसा मत केवल अशिक्षित और जाहिल मनुष्यों का ही नहीं था। एक सम्माननीय लेखक ने लिखा है कि 'भविष्य में अमरीका प्रजातंत्र या एक तंत्र किसी भी झंडे के नीचे एक प्रगतिशील-संयुक्त-राज्य बन सकेगा-यह आशा इतनी कपोलकल्पित और निराधार है, जो पहले कभी उपन्यास-लेखकों के मस्तिष्क में भी न आई होगी। अमरीका-निवासियों का पारस्परिक द्वेष और हित विभिन्नता इस बात की द्योतक है कि उनमें कभी एकता अथवा हित समानता न होगी। किसी भी शासन प्रणाली के आधीन

Washington wrote on 7th Nov. 1776—'The enemy have treated all here without discrimination. The distinction of whig and Tory has been lost in one general scene of ravage and desolation.'

एक साम्राज्य में संयुक्त नहीं हो सकते। इस बिखरे हुए लोगों में एक-दूसरे के प्रति इतनी शंका और अविश्वास है कि वे अनगिनती छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो जायँगे।

शेफ़ील्ड ने इंगलैंड को लिखा था—"अमरीका के भिन्न-भिन्न राष्ट्रों को एक राष्ट्र बनाना कोई मज़ाक नहीं है, हमें इस ओर तो कोई भय करने की आवश्यकता नहीं है। यदि अमरीकन रियासतें दूत भेजना निश्चित करें, तो उनका स्वागत करो और प्रत्येक रियासत को अपने भी दूत भेज दो। बहुत ही शीघ्र प्रत्येक रियासत तुम्हारे दूतों के साथ पृथक-पृथक आवश्यक निश्चय कर लेगी और बस केवल इसी की जरूरत है।" उक्त अमरीकन लेखक और शेफ़ील्ड को बहुत ही जल्दी अपने कथन का भ्रम मालूम हो गया। कुछ ही वर्षों के बाद संयुक्त-राज्य स्थापित हुआ और आज योरप के सब राष्ट्र उसके चरणों पर माथा नवा रहे हैं।

भारतवर्ष में जिस तरह राष्ट्र—विरोधी शक्तियाँ हिंदू-मुस्लिम प्रश्न को प्रज्वलित करने में संलग्न हैं, उसी तरह अमरीका में ईसाइयों के भिन्न भिन्न फिरकों में कलह पैदा करने की कोशिश की जाती थी। झूठी झूठी बातें उड़ाकर ईसाइयों के भिन्न-भिन्न फ़िरक़ो को लड़ाने की चेष्टा की जाती थी। टोरियों ने एकबार प्रकाशित किया कि फ्रांस से-जो उस समय अमरीका के पक्ष में था, प्यूरीटन्स का धर्म—परिवर्तन कराने के लिये पादरी, धर्म-प्रचारक मूर्तियाँ और गैलनों पवित्र जल

जहाजों में भरकर अमरीका में आ रहे हैं। पेरिस से नाच सिखानेवाले मास्टर आ रहे हैं, वे प्रेसबीटेरियन्स को अंग-संचालन और नाचना सिखावेंगे। इसी तरह की बातों से लोगों के धार्मिक भाव प्रजातंत्र के विरुद्ध उभाड़ने की चेष्टा की जाती थी।

मई सन् १७७९ में वाशिंगटन जब मिडिल बुक में था, तब इसकी सेना के आयरिश सिपाही कुछ बिगड़ रहे थे। तुरंत ही इन लोगों को तोड़ने के लिये पोस्टर लगाए गए, जिनमें लिखा था-'आयलैंड की शिकायतें बिलकुल दूर हो गईं।' 'ग्रेट ब्रिटेन और आयलैंड स्नेह और एक हित के बंधनमें बँध गए, परंतु आयरिश सिपाही अँगरेजों की चालें खूब जानते थे-इसलिये एक आदमी भी प्रजातंत्र सेना से न हटा। बहुत-से अन्य पोस्टरों में-से कुछ का मज़मून यह था, 'अब सब आकांक्षा-शील जवानों के लिये अवसर दिया जाता है कि वे अपने नाम को अमर बना लें। नवयुवकों से अपील की जाती है कि, 'देश को बगावत और दुर्भाग्य की यंत्रणा से बचाओ।'

एक ब्रिटिश रंगरूट भरती करनेवाले ने घोषणा की कि, किसी भी साहसी नवयुवक को जो ब्रिटिश सेना में जाना चाहे, तुरंत ही शानदार घोड़े पर चढ़ाया जायगा और ५०० रुपया की क़ीमत के कपड़े भी दिए जायँगे।

इन सरकारवादी लोगों का उत्पात इतना बढ़ा कि सन् १७७५ में वाशिंगटन को हुक्म निकालना ही पड़ा कि प्रजातंत्र

के विरोधी पकड़ लिए जांय और उन्हें देश से बाहर कर दिया जाय। "जो लोग देश की शक्तियों को चूस रहे हैं, हमें उन्हें अपना काम स्वतंत्रता पूर्वक भी क्यों करने देना चाहिए और जब कि हम विशेषकर यह जानते हैं कि यह शक्ति भर शरारत करने की कोशिश करेंगे।"

(१०)

दमन की भयंकर ज्वाला

ब्रिटिश साम्राज्यवाद कितने निरपराधियों की हड्डियाँ, कितनी ललनाओं के सतीत्व भग और कितने बालकों के चीत्कार पर बना है, उसका यदि कोई मनुष्य स्मरण कर सके, तो उसका हृदय काँपे विना रह ही नहीं सकता। इसके काले इतिहास में अन्याय और अमानुषिकता पृष्ठ-पृष्ठ पर मिलेगी। अमरीका के इस स्वातंत्र्य की लड़ाई में शाँति और व्यवस्था के नाम पर निरपराध लोगों पर क्या-क्या नहीं किया गया है? ब्रिटिश सत्ता और टोरियों ने जो-जो वीभत्स और वीभत्सता-पूर्ण कार्य किए हैं, उसका इतिहास बहुत बड़ा है और हम यहाँ पाठकों को उस समय की स्थिति का ध्यान दिलाने के लिये थोड़े से ही उदाहरण दे सकते हैं।

ब्रिटिशवादी टोरी हडसन की उपजाऊ भूमि पर टूट पड़ते, वहाँ की मवेशी, घोड़े और भेड़ों को हाँक ले जाते, शांतप्रिय किसानों के झोपड़ों में आग लगा देते, किसानों को पकड़ ले जाते और उनकी स्त्रियों पर बलात्कार करते थे। ब्रिटिश शासक इन ख़बरों को सुनते और ख़ुश होते थे। एक बार रेमिंगटन

गजट ने लिखा था कि "बागियों पर किए गए इन आक्रमणों से राजभक्त टोरियों को ऐसे अवसर मिलेंगे, जिसको वे अपने देशवासी बागी भाइयों से अपनी हानि का बदला ले सकें।'

सन् १७७५ में एक मनुष्य ने एक ब्रिटिश सैनिक से फ़ौजी क़ानून के विरुद्ध एक बंदूक ख़रीदी। जब उसने रुपया दे दिया, तब ब्रिटिश सैनिक और 'टोरी' उसपर टूट पड़े, उसका मुँह कोलटार (अलकतरा) से काला किया और उसकी गर्दन में एक तख़्ती लटकाकर निकाला, जिसपर लिखा था 'अमरीका की स्वतंत्रता या प्रजा-तंत्र का नमूना।'

जनता पर इस तरह के अत्याचार रोज़ की घटना हो गए थे। इसपर बिलेरिया के मुखिया ने ब्रिटिश कमांडर को लिखा—'महोदय को विदित हो कि हमने अब इस बात का निश्चय किया है कि यदि हमारे देश के निर्दोष निवासियों के प्रति यह अमानुषिक व्यवहार किया जायगा, तो अब तक हम जो प्रार्थना-पत्र और शिकायतें पहुँचाते रहे हैं, उससे अब बिलकुल ही भिन्न मार्ग और साधन काम में लाएँगे।'

कैप्टेन वैलेस की अध्यक्षता में ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े ने तट के नगर और बस्तियों में भय का साम्राज्य स्थापित कर दिया था। उनकी गोला-बारी और लूटमार से बहुत-सी बस्तियों में त्राहि-त्राहि मच गई थी। अंत में ब्रिटिश जहाज़ों से अपनी रक्षा करने के लिये और दुश्मन की रसद लूटने के लिये कितने ही प्रदेशों को अपने-अपने छोटे जहाज़ बनाने के लिये विवश

होना पड़ा। फ़ालमाउथ भी, जिसे अब पोर्टलैंड कहते हैं, एक ऐसा बंदरगाह था, जिसने ब्रिटिश जहाज़ों से आत्म-रक्षा करने में यश प्राप्त किया था।

११ अक्टूबर, १७७५ को लेफ्टीनेंट मोबर कितने ही ब्रिटिश जंगी जहाज़ लेकर यहाँ आया और तट पर एक पत्र भेजा कि सम्राट् के जहाज़ों पर आक्रमण करने का बदला लेने के लिये वह आया है। उसने दो घंटे का समय दिया कि नगर-निवासी जान लेकर भाग जाँय। इन दो घंटे के बाद जहाज़ के सबसे ऊंचे मस्तूल पर लाल बत्ती लटका दी जायगी और एक तोप छोड़ी जायगी। यह इस बात के चिन्ह होंगे कि नगर के विध्वंश करने का कार्य प्रारंभ हो गया। इसपर नगर—निवासियों के तीन प्रतिनिधि जहाज़ पर आए। परंतु लेफ्टीनेंट ने कहा कि मैं इसमें कुछ भी नहीं कर सकता। मुझे जलाध्यक्ष ग्रीवज़ की आज्ञा है कि मैं बोस्टन और हेलीफ़ेक्स के बीच के सभी बंदरगाहों में आग लगा दूं और उसे आशा है कि इस समय न्यूयार्क भी भस्म हो चुका होगा।

बड़ी कठिनाई से जब नगर-निवासियों ने कुल अस्त्र-शस्त्र मोबर को समर्पण कर दिए, तब इस बात के लिये वह राज़ी हुआ कि वह दूसरे दिन सुबह नौ बजे तक की मोहलत शहर खाली करने को दे देगा और नगर-निवासी इस बीच में अपने स्त्री, बच्चे और ज़रूरी चीजें हटाने का प्रयत्न करें।

दूसरे दिन नौ बजे से पहले ही वे प्रतिनिधि फिर जहाज़ों पर आए। लेफ्टीनेंट कुछ शर्तों पर नगर छोड़ने के लिये तैयार हो गया। पर इन स्वाभिमानी देशभक्तों ने उन शर्तों को मनना अस्वीकार कर दिया। लालबत्ती मस्तूल पर लगाई गई और तोपों में बत्ती लगा दी गई। पाँच मिनट में मकानों में आग लग गई और फिर दिन भर गोले बरसते रहे। पहाड़ियों पर खड़े हुए नगर-निवासी इस अग्निकांड के दर्शक थे। इस कांड ने उनमें-से बहुतों को निराशा और निर्धनता की गोदी में पटक दिया था। कहा जाता है, एक सौ उन्तालीस घर और दो सौ अट्ठाईस स्टोर जलकर ख़ाक हो गए। बंदरगाहों में जितने राष्ट्रीय जहाज़ थे, वे सब नष्ट कर दिए गए या लूट के तोहफ़े में उन्हें ले गए।*

जनरल ग्रीव ने जनता के दुर्भाग्य की बाबत लिखा है।-'आह! जो लोग इस तट के नगरों को छोड़ने के लिये विवश हुए थे, उनकी यंत्रणाएँ और भयंकर दशा में-से उनकी रक्षा करने के लिये अगर आप कुछ कर सकें, तो अवश्य करना चाहिए। इनकी यह दशा कमीशन-प्राप्त लुटेरे और आज्ञा-प्राप्त डाकुओं के प्रति घृणा की आग फूंक देगी······लोगों में अब स्वतंत्रता की घोषणा की कामना है।" *

न्यूयार्क के पश्चिमोत्तर प्रदेश में व्योमिंग की सुंदर और

---

* 'Helmes's Annal' ii 220.

* Ammerica archivrs, iii 114'D

उपजाऊ घाटी में अनेक शांतिप्रिय किसान रहते थे। यहाँ कोई झगड़ा नहीं था, लेकिन यहाँ के बहुत-से नवयुवक स्वतंत्रता की आवाज़ पर प्रजातंत्र की सेनाओं में भरती होकर चले गए थे। जुलाई सन् १७७८ में ८००० ब्रिटिशवादी ४०० आदि निवासी इस प्रदेश पर टूट पड़े, बहुत-से आदमियों को मार डाला। अधिकाँश स्त्रियों को पकड़ ले गए, उनके खेत और मकान जला डाले। जो लोग गोलियों और आग से बच भी गए, उन्हें जंगल में ६० मील तक खदेड़ दिया गया।

पेनसिलवेनियाँ प्रदेश के सैनिकों ने इसका बदला उनादिल्ला नगर के आदि निवासियों से लिया, लेकिन बटलर और जानसन ने चेरी घाटी के निरपराध और भोले किसानों में दूसरा हत्याकांड मचा दिया। प्रजातंत्रवादी सरकार देशद्रोही टोरियों को दंड देती थी, पर अवसर मिलते ही यह फिर उभड़ जाते थे। इस तरह लोगों ने सारी उत्तरीय सरहद को उजाड़ डाला था।

यह स्मरण रखना चाहिए कि ब्रिटिश सैनिक यह हत्याकांड किसी शत्रु प्रदेश में नहीं कर रहे थे, परंतु वहाँ, जहाँ के निवासी उन्हीं की प्रजा थे और जो अपने अधिकारों और प्रतिष्ठा के लिये लड़ रहे थे। इन ब्रिटिश-सैनिकों और इन पीड़ित लोगों के रक्त में कोई विशेष भिन्नता नहीं थी और यह कुछ ही समय पहले इंगलैंड के सम्राट् को अपना देवता मानते थे।

जब निरपराध मनुष्यों की यह हालत थी, तब युद्ध में पकड़े हुए सैनिकों की हालत तो उससे भी बीभत्स होनी ही चाहिए। अमरीकन सैनिक कैदियों को भारी-भारी जंजीरों से कस दिया जाता था और उनका तरह-तरह से अपमान भी किया जाता था। एक प्रतक्षदर्शी लिखता है, कि हमारे अभागे सैनिक बंदियों को रसद बहुत ख़राब और बहुत ही थोड़ी मिलती है, उनके कपड़े बड़ी फटी हालत में हैं और यदि ईंधन कभी मिलता है, तो बहुत ही कम। ऐसी स्थिति में रोग का फैलना अनिवार्य है और उनके जेलख़ाने शीघ्र ही बीमारखाने बन गए हैं।' इस तरह सैकड़ों अमरीकन क़ैदी चूहों की मौत मर रहे थे। बहुतों को जंजीर में कसकर इंगलैंड में मुलजिम बनाकर भेज दिया गया था। साधारण सैनिक और उच्च घराने के क़ैदियों में कोई भेद नहीं रक्खा जाता था दोनों एक ही तरह से पीड़ित थे। वाशिंगटन ने जब बार-बार इस बीभत्सता का हाल सुना, तो उसने जनरल गेज को लिखा-"मुझे मालूम हुआ है कि अफ़सर अपनी स्वतंत्रता और देश के हित लिये अग्रसर हैं और जो युद्ध में अपने दुर्भाग्य से आपके हाथों में जा पड़े हैं, वे साधारण जेलखानों में चोर-डाकुओं के साथ भर दिए गए हैं। जबकि वे चोटों और रोग से पीड़ित हैं, तब भी उनकी सम्माननीय स्थिति और पद का विचार नहीं किया जाता। इस नीति के संबंध में आपका चाहे जो कुछ भी मत हो, परंतु महोदय! आप यह तो मानेंगे कि वे

जो कुछ कर रहे हैं-वे यह समझकर करते हैं कि उनका कार्य अत्यंत उत्तम, स्वतंत्रता और देश के हित के लिये है-इस जगह राजनैतिक नीति को हस्तक्षेप नहीं कर देना चाहिए। मनुष्यत्व और पद के अधिकार सभी विश्व पर लागू और विस्तीर्ण हैं। मुझे आशा होनी चाहिए थी कि जो सिपाही आपके हाथों में जा पड़ेंगे, उनके साथ अब इससे अधिक अच्छा बर्ताव होगा। मैं आपको यह सुझाए बगैर भी नहीं रह सकता कि इससे आप और आपके मंत्रि-मंडल, जिनके अधिकृत आप कार्य कर रहे हैं-तथा हमारे बीच की खाई बहुत हीचौड़ी होती जाती है, जिसे आपने एक बार ही पाट देने की इच्छा प्रकट की है। मैं आपको यह भी सूचित कर देना चाहता हूँ कि अब से आपके जो सज्जन हमारे हाथ में आ पड़ेंगे, उनके साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जायगा, जैसा आप हमारे सैनिकों के साथ-जो आपकी कैद में हैं, करेंगे।" इसका उत्तर जनरल गेज ने बड़ा ही उल्टा-सीधा दिया, अपनी उदारता की डींग हाँकी और राष्ट्रीय सैनिकों को बाग़ी बताया, जो उसके मत में क़ानून के अनुसार फाँसी पर लटकाए जाने के अधिकारी थे।

वाशिंगटन ने इसका जवाब दिया कि,-उसने जिस विषय पर पत्र लिखा था, उससे इन बातों का कोई संबंध नहीं है। ब्रिटिश और अमरीकनों की दया, धर्म और उदारता में कौन बड़ा है, हमारे वे शीलवान नागरिक, जो अपनी स्त्री

बच्चों और संपत्ति की रक्षा के लिये आततायी शक्ति द्वारा तलवार उठाने के लिये विवश किए गए हैं, वे विद्रोही हैं और फाँसी की सजा के योग्य हैं, अथवा वे जो ग़ैर क़ानूनी अधिकार लालच और प्रतिहिंसा के दयाहीन पुतले बन रहे हैं, मेरी वह शक्ति, जिसके अधिकृत मैं कार्य करता हूँ, वह बनावटी और स्वयं-प्राप्त है अथवा उसका आधार स्वाधीनता के अटल सिद्धांतों पर है। आपने जो हमारे सैनिकों पर दुर्व्यवहार करने का लाँछन लगाया है, उसकी मैंने पूरी तरह जाँच की है और मैं इस निश्चय को पहुँचा हूँ कि उसमें तनिक भी सत्यता नहीं है। न केवल आपके अफ़सर और सैनिकों के साथ ही बड़ी नम्रतापूर्ण व्यवहार किया गया है-जो एक दूसरे नागरिक और भाई के साथ कर सकता है, वरन् उन देश-द्रोहियों के साथ भी, जिन्होंने अपनी स्थिति और सहायता से देश में रक्त बहा दिया है-किया गया है, न्यायोचित क्रोध पूर्ण जनता के क्रोध से रक्षा करने की चेष्टा की गई है।"

"महाशय! आप उन तमाम पदों को-जो उसी श्रोत में (ब्रिटिश सरकार में) प्राप्त नहीं हुआ है, जिससे आपको प्राप्त हुआ है, हेय दृष्टि से देखते हैं। मैं तो उस पद से अधिक सम्माननीय दूसरा पद ही नहीं देखता, जो कि एक वीर और स्वतंत्र जनता की शुद्ध इच्छा से प्राप्त हो। क्योंकि वही तो सभी शक्तियों की जननी और मूलश्रोत है।

वर्तमान स्थिति पर आपके मंत्रि-मंडल के चाहे-जो कुछ भी विचार हों, परंतु लेक्सिंगटन, कनरोड और चार्ल्सटाऊन की घटना स्वयं उसकी भलीप्रकार घोषणा कर देती है। ईश्वर आपके और अमरीका के बीच में इस बात का शीघ्र निर्णय कर देगा और संयुक्त-उपनिवेशों के अन्य दूसरे सब निवासी अपने जीवन का बलिदान करके भी आपने पूर्वजों से प्राप्त न्यायोचित और अमूल्य अधिकारों की रक्षा करेंगे।'

इसपर भी वाशिंगटन ने इस बात की पूरी कोशिश की थी कि उसके राष्ट्रीय सैनिक विजित ब्रिटिश सेना और टोरी जनता पर किसी तरह का अत्याचार न करने पावें। राष्ट्रीय सैनिक मनुष्य थे, उनके भाइयों पर ब्रिटिश सैनिक और राजभक्त निरंतर पदाघात कर रहे थे, उन्हें बाग़ी और उपद्रवी कहकर संबोधित किया जाता था और उनके धन, जन, संपत्ति सभी पर आक्रमण हो रहा था, परंतु इन उत्तेजनापूर्ण स्थितियों में भी उनका व्यवहार अधिक मनुष्यत्व और वीरत्वपूर्ण था।

वाशिंगटन और उसके सहयोगियों के भाव क्या थे और वे किस तरह इस क्रांति युग में भी यथासंभव रक्तपात और अशांति को रोकने की चेष्टा कर रहे थे। उसका पता वाशिंगटन के एक पत्र से मिलता है, जो उसने अरनाल्ड को कनाडा पर आक्रमण करते समय लिखा था-"तुम्हारे और तुम्हारे आधीन अफ़सरों तथा सैनिकों के आचरण और साहस पर न केवल

इस उद्योग की सफलता और तुम्हारी मान-रक्षा ही नहीं, बल्कि सारे देश की रक्षा और हित निर्भर है। इसलिये मैं तुम्हें और तुम्हारे आधीन अफ़सरों और सैनिकों को आदेश देता हूँ कि जिस तरह तुम अपने सम्मान, आत्म-रक्षा, अपने देश के गौरव और प्रशंसा को महत्व देते हो, उसी तरह तुम वहाँ यह न समझकर कि तुम दुश्मनों के मुल्क में मोर्चा कर रहे हो, यह समझना कि यह प्रदेश तुम्हारे भाइयों और और मित्रों का ही है और यदि किसी तरह बेचारे सैनिकों में कनाडा की जनता को लूटने या अपमानित करने का प्रयत्न हो, तो उसे हर तरह से रोकने की चेष्टा करना। यदि कोई भी अमरीकन सैनिक इतना कायर और नीच हो कि किसी कनाडा-निवासी अथवा इंडियन की संपति अथवा व्यक्तिव्य पर आक्रमण करे तो मैं चाहता हूँ कि तुम उसे ऐसी कड़ी और उदाहरण-प्रद सजा दो, जैसी कि अपराध की गहनता के लिये आवश्यक हो। समय और अपने ध्येय के विचार से यदि वह सजा मृत्यु-दंड तक भी हो, तो बहुत अधिक न होगी।......... मैं तुम्हारे ऊपर यह भार भी छोड़ता हूँ कि उस देश के धर्म और रीतियों के प्रति किसी तरह का अपमान न हो...... जब हम अपनी स्वतंत्रता के लिये लड़ रहे हैं, तब हमको इस बात के लिये बड़ा सावधान रहना चाहिए कि हम दूसरे की आत्मा का हनन न करें। वे यह ध्यान में रक्खें कि ईश्वर ही केवल मनुष्य के हृदयों को देखता है और हम

उसी के सामने उत्तरदाता है।" *

"फिर भी यह एक महान क्रांति थी, हजारों सैनिक उत्तेजित हृदय से अपनी तलवारें खींचे हुए थे, देश में उथल-पुथल हो रही थी, जहाँ राष्ट्रीय झंडे के नीचे हजारों मनुष्य अपने सिद्धांत और देश की रक्षा के लिये सच्चे हृदय से इकट्ठे हुए थे, वहीं बीसों और सैकड़ों अनुचित स्वार्थ और लोभ के विचारों को लेकर आ घुसे थे, लेकिन फिर भी इस अशाँति के समय में जो राष्ट्रीय नीति रही, उससे अनेक परतंत्र राष्ट्र शिक्षा-ग्रहण कर सकते हैं। एक तरफ़ शांति और व्यवस्था' का ठेका उठाए हुए ब्रिटिश शासक थे और दूसरी ओर वह कल की स्थापित सत्ता थी, जिसे 'बग़ावत' और 'विद्रोह' कहा जाता है। परंतु दोनों के कार्यों में महान अंतर था। एक प्रतिहिंसा की ज्वाला से जल रहे थे और अपने 'अधिकार' के मद में दूसरे की सब बातें तुच्छ समझते थे और दूसरी ओर वे मनुष्य थे, जो अपनी स्वतंत्रता और सिद्धांत पर मर मिटना चाहते थे, परंतु यह कभी न भूलते थे कि दूसरों की स्वतंत्रता का मूल्य उनकी स्वतंत्रता से कम नहीं है।"

अधिक क्या कहें? हम मि० कोलवेर, जो एक अंगरेजी गवर्नर था और जो राष्ट्रीय सेनाओं की क़ैद में था, उसी के शब्दों में निर्णय कर देना चाहते हैं। उसने वाशिंगटन को

* The making of arepublic.

Washingtons' writings Vol. 118. p. 194.

लिखा है "जो व्यवहार आपने मेरे प्रति किया है, यदि मैं उसके लिये आपके प्रति कृतज्ञता प्रगट न करूँ, तो मैं उस व्यवहार के अयोग्य साबित होऊँगा। इसका एक अंश भी मेरी योग्यता के कारण नहीं, परंतु यह सब जनरल वाशिंगटन के कारण था, जिसमें मनुष्यत्व और उदारता इतनी कूट-कूट कर भरी हुई है। इस उपकार का बदला केवल धन्यवाद देकर मैं दे सकता हूँ और आशा है वह आपको अवश्य स्वीकृत होगा।"

(११)

स्वेच्छाचार का शासन

यद्यपि इंगलैंड में प्रजा के मताधिकार 'शासन की शक्ति शासितों की इच्छा से प्राप्त की जाय' के सिद्धांत को स्वीकृत हुए कई शताब्दियाँ बीत चुकी थीं, परंतु वास्तविक स्थिति इससे बिलकुल ही भिन्न थी। कहने को तो हाउस आफ़ कामन्स में-से सदस्य-निर्वाचित किए जाते थे; परंतु वास्तव में वह ग्रेट-ब्रिटेन की जनता की प्रतिनिधि-संख्या थी, यह किसी भी तरह नहीं कहा जा सकता था। मत-दाताओं अथवा उम्मेदवारों की कोई उचित व्यवस्था नहीं थी। कितने ही नगरों को कोई प्रतिनिधि भेजने का अधिकार तक नहीं था। मैंचेस्टर और शेफ़ील्ड जैसे नगर मत देने से वंचित थे, लेकिन सम्राट् का बहुमत करने के लिये बहुत छोटे-छोटे देहातों को, जो सम्राट् के समर्थक थे—मताधिकार दे दिया गया था। कितने ही देहात जो उजड़ गए थे और जिनमें एक भी झोंपड़ी तक नहीं रही थी, उसके नाम पर सम्राट् के पृष्ठपोषक अब तक सदस्य बने चले आते थे।

यही नहीं, अधिकांश सीटों का क्रय-विक्रय तक होता था। धनी होना ही वोट को प्राप्त करने के लिये पर्याप्त योग्यता थी।

कोई कैसा भी मनुष्य धन-खर्च करने पर वोट ख़रीद कर सदस्य बन सकता था। इसलिये कुछ इने-गिने मालदार घरानों का ही हाउस आफ़ कामन्स में एकाधिकार था। इनमें-से अधिकाँश सम्राट् की कृपा प्राप्त करने के लिये प्रजा के भारी-से-भारी अधिकारों को कुचलने को तैयार हो जाते थे। इस समय इंगलैंड का राजनीतिक जीवन बहुत ही गंदा था। बहुत-से बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ बड़ी-बड़ी घूंस लेते थे और इसे कोई बुरा भी नहीं समझता था।

आज-काल के सभ्य युग में जहाँ प्रजातंत्र स्थापित है,कोई भी केबिनेट (शासन-समिति) प्रजा की दृष्टि में गिर जाने पर एक-दो वर्ष से अधिक क़ायम नहीं रह सकती,परंतु यहाँ इस समय बहुत दिनों से जनता मंत्रि-मंडल के स्वेच्छाचार से पिसी जाती थी। फिर भी मंत्रि-मंडल में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ था। दस वर्ष में कुछ अधिकारी निकाले जाते थे और कुछ रक्खे जाते थे,परंतु कोई भी निकाला जाय या रक्खा जाय, सम्राट् के मित्रों को इसका कुछ भी भय न था, उनको तो जगह मिल ही जाती थी * हाउस आफ़ कामन्स के सदस्य सर जार्ज ओटो ट्रेवेलियन लिखते हैं-"उस युग में मताधिकार तो

---

* 'Political life in England was exceedingly Corrupted. In England some of the best statesmen indulged in whole-some bribery, as it was the innocent thing in the world. The Country was really governed

पैरों तले बिलकुल ही कुचल दिया गया था, स्वतंत्र वादाविवाद करना अपराध समझा जाता था, शासन के प्रत्येक विभाग में ईनाम का ही खूब दौर-दौरा था, शासक प्रजा के भावों और मत की तनिक भी पर्वाह नहीं करते थे।' खिताब या पदवी के लिये सभी लालायित रहते थे और उसकी रक्षा करने के लिये दरबार की कृपा प्राप्त करना ही सबसे अच्छा मार्ग था। सार्वजनिक कार्य-कर्त्ता यह भलीप्रकार जानते थे कि यदि वे उस सत्ता का विरोध करते हैं, जो कि राजनीति की छिपी हुई रस्सियों को खींच रही है, तो शीघ्रही उनके शासन का स्थान जाता रहेगा और यदि वे स्वेच्छाचारी सत्ता को स्वीकार करते हैं, तो देश की प्रतिष्ठा ही नष्ट हो जायगी।

सन् १७७५ में इंगलैंड की प्रजा में शासकों के प्रति भयानक असंतोष फैल गया था और उस वर्ष के मई मास में जॉन वेसले ने लार्ड नॉर्थ को चेतावनी दी कि अधिकाँश प्रजा में अब सम्राट् और मंत्रि-मंडल के प्रति तनिक भी प्रेम नहीं रह गया है और वे किसी सुयोग्य नेता के मिलते ही खुलो बगावत कर बैठेंगे। बर्क, पिट और चार्ल्स फॉक्स तथा उनके कुछ अनुयायी सम्राट् के दल के स्वेच्छाचार को हटाकर सार्वजनिक अधिकार की रक्षा करना चाहते थे।

---

by a few great families, some of whose members sat in the House of lords and others in the house of commans. —John Fiske.

इसके विपरीत सम्राट् इस प्रवृत्ति को सदा के लिये कुचलने की चिंता में था। जार्ज तृतीय यह भली-भाँति जानता था कि अमरीका के उपनिवेश उसके सर्वोपरि अधिकार की अवहेलना करके सार्वजनिक मताधिकार के सिद्धांत को स्थापित करने में यदि सफल हो गए, तो इंगलैंड में भी उसकी स्थिति पर धक्का लगे बग़ैर न रहेगा। सम्राट् के लिये उपनिवेशों की इस क्रांति में एक तरह से जीवन-मरण का प्रश्न छिपा हुआ था।

सम्राट् के अधिकांश समर्थक छोटे और तुच्छ लोग थे-जो भारतवर्ष और उपनिवेशों की लूट-खसोट के माल से एक दम धनवान और प्रभुत्व में आ गए थे। यह लोग क्लर्क और किसान की हैसियत से भारतवर्ष और उपनिवेशों में जाते, लेकिन लार्ड बनकर वापिस आते थे। इन अनुचित साधनों से प्राप्त धन से लोगों का जीवन अधिकाधिक विलासमय और आकांक्षापूर्ण होता जाता था। सेमुएल बरवेन ने उस समय के लंदन के जीवन के संबंध में लिखा है कि, 'इस महान नगर के स्वभाविक गुण ही आत्म-विस्मृति, धोखेबाजी और हर तरह की बुराइयों में लिप्त होना है, इसे देखकर आश्चर्य नहीं करना चाहिए। धन की भरमार से बहुतों को हर प्रकार की अय्याशी के साधन प्राप्त हो जाते हैं, जिनसे ईश्वर की कृपा से अमरीका का हमारा भाग अज्ञात है।" इंगलैंड की पार्लियामेंट में ऐसे ही लोगों का अधिक प्रभुत्व था।

इस समय ब्रिटिश राजनीतिक पतन पर पार्लियामेंट में कोई अश्रुपात करनेवाला था, तो वह अकेला एक बर्क ही था। उसने बड़ी कठिनाई से सम्राट और मंत्रि-मंडल के स्वेच्छाचार को रोकने और जनता के मत का समर्थन करने के लिये ह्विग पार्टी बनाई; परंतु सन् १७७४ में इसका प्रभाव बहुत कम रह गया था। सन् १७७२ में लार्ड टाउनसेंड ने लिखा है-"मैं आपको कुछ समाचार भेजना चाहता हूँ, सब मामला शांत है और नगर में कोई चहल-पहल नहीं है। मालूम होता है कि विरोधी, जो ग़रीब है किसी को कुछ हानि नहीं पहुँचा सकते, राष्ट्र को इस दुष्ट मंत्रि-मंडल पर क़त्तई छोड़कर चले गए।" ह्विग एक-दूसरे से आपस में अपनी सफ़ाई पेश करते थे और जब अवसर मिलता था, तो अपने नेता को यह कहकर संतुष्ट करने की चेष्टा करते थे कि जब देश में ही सार्वजनिक भाव सोया पड़ा है, तब पर्लियामेंट में हम क्या कर सकते हैं। परंतु बर्क इस बात को स्वीकार नहीं करता था। वह कहता-इसमें दोष किसका है? जब चुनाव का वक़्त आता है, तब तो तुम अपने प्रतिपक्षी का विरोध करने के लिये सर्वस्व होम करने को तैयार हो सकते हो, अपना अंतिम रुपया तक ख़र्च कर सकते हो, अपना घर गिरवी रख सकते हो और वोट देने के लिये रुग्ण-शैय्या पर-से भी उठकर आ सकते हो और प्रचार करने के लिये इन मनुष्यों में घूम सकते हो, जिन्हें तुम तुच्छ समझते हो, परंतु जनता के साथ सहयोग करने उन्हें उनकी

तकलीफ़ और राष्ट्र का कर्त्तव्य समझाने के लिये तुम अपने आराम का छोटा-सा अंश भी बलिदान नहीं कर सकते !

इस समय इंगलैंड में बहुत ही कम लोग अमरीकन उपनिवेशों की सच्चा स्थिति और भावों को समझते थे। डॉक्टर फ्रैंकलिन ने तो लंदन से लिखा है कि, 'यहाँ एक बड़ा दोष है। वह यह है कि यहाँ के लोग इतने दूर देशों में—जैसे अमरीका में क्या हो रहा है, इस ओर बहुत ही कम ध्यान देते हैं और इनके विषय में कुछ अधिक पढ़ना भी नहीं चाहते। इनमें उन बातों को भी, जिनके विषय में वह जानते हैं कि उन्हें उनपर विचार करना होगा, उनको भी स्थगित करने की एक प्रवृत्ति है, जिससे उन्हें दूसरी अपनी जरूरी बातों पर विचार करने का अवसर मिल जाय और उसके बाद वे अपने मनोरंजन में मग्न हो जाते हैं और संसार की विस्मृति में शांति से डूब जाते हैं।' बर्क ने एक बार कहा था कि जब फ्रैंकलिन पार्लियामेंट में पेश हुआ और उससे अमरीका की स्थिति पर प्रश्नोत्तर होने लगे, तब पार्लियामेंट के सदस्य ऐसे मालूम होते थे, जैसे कुछ स्कूल के छोकड़े अपने मास्टर से सवाल पूछते हों।

यही नहीं, वह इंगलैंड और उपनिवेशों के पारस्परिक संबंध के विषय में जो-कुछ समझे बैठे थे, वह भी अत्यंत भ्रमपूर्ण था। उनके विचार में उपनिवेशों का अस्तित्व ही इसलिये था कि उसके साधनों से इंगलैंड समृद्धिशाली हो। उपनिवेशों की गोरी जनता को तो वे अपनी जोंकें समझते थे

जिनके द्वारा उपनिवेशों के साधनों का प्रवाह इंगलैंड में पहुँचता रहेगा। उन्होंने यह कभी नहीं सोचा था कि अमरीका भी कभी इनकी मातृभूमि हो सकती है और वे स्वाधीनता के उन सिद्धांतों की माँग पेश कर सकते हैं, जो अंगरेज अपने देश में चाहते हैं।

इन लोगों के लिये उपनिवेशों की स्थिति समझने का सबसे बड़ा साधन उपनिवेशों के अंगरेज शासक थ। परंतु यह वहाँ उपनिवेशों के संबंध में ऐसी-ऐसी झूठी बातें लिखकर भेजते थे कि इंगलैंड की जनता वास्तविक स्थिति को बहुत ही कम जान पाती थी। उपनिवेश के यह अंगरेज शासक मंत्रि-मंडल को दमन के नए-नए क़ानून बनाने और सैनिक शक्ति से उसका पालन कराने के लिये उभाड़ते रहते थे। ऐसी ही बहुत सी चिट्ठियाँ डाक्टर फ्रैंकलिन के हाथ में पड़ गईं थीं, जिनको पढ़कर उपनिवेश की जनता में बड़ी उत्तेजना भी फैली थी।

इस विशाक्त वायुमंडल में पार्लियामेंट उपनिवेशों के लिये क़ानून बनाने और व्यवस्था निर्धारित करने के लिये बैठती थी और इन सब कार्यवाहियों पर सम्राट् का अंकुश रहता था। बहुत-से सदस्य अमरीका में फ़ौजी शक्ति के इस प्रदर्शन के विरुद्ध थे और अमरीकनों की शिकायतों को भी सुनना चाहते थे; परंतु सम्राट् की भृकुटी देखकर चुप रह जाते थे। लार्ड कोयर्थन ने कहा है कि, अमरीकनों की यह माँग कि

'मताधिकार नहीं तो कर नहीं, बिलकुल ही तथ्यहीन है। स्वयं इंगलैंड में ऐसे बहुत-से नगर हैं, जैसे लीड, शीफीड, मैंचेस्टर, बरमिंघम आदि, जिनके कोई भी सदस्य पार्लियामेंट में नहीं हैं, फिर उपनिवेशवालों को इस संबंध में शिकायत करने की गुंजाइश ही कैसे रह सकती है। उसने कहा है कि यदि मसाशुसेट्स के लोग सीधी तरह नहीं मानते, तो उनके जंगलों में आग लगा देनी चाहिए और सैनिक शक्ति से उनके घुटनों को तोड़ देना चाहिए। अमरीका में जेम्सऑटिस ने इसका जवाब देते हुए कहा था कि-'हमसे इन शहरों की बाबत अधिक बातें न करो; क्योंकि हम ऐसे गंदे तर्कवाद से आजिज़ आ गए हैं। यदि उनके प्रतिनिधि नहीं हैं, तो होने चाहिए' फ़िलाडेलफ़िया की एक सभा में कहा गया—

"क्या उन दो आदमियों को, जो ऐसे अंग्रेजी प्रदेश द्वारा निर्वाचित हुए हैं, जिसने अपनी वोटें सबसे ऊँचा दाम लगाने वाले के हाथ बेच दी थीं, यह कहने का कोई बहाना हो सकता है कि वे वरजीनियाँ और पेनसिलवेनियाँ के प्रतिनिधि समझे जाँय और क्या ऐसे चार सौ लोगों को अधिकार है कि वे हमारी स्वतंत्रता का अपहरण करें ?"

वास्तव में ऐसी स्थिति में किसी भी न्यायपूर्ण तर्कवाद से ब्रिटिश शासन को झुका देना असंभव था। यदि ब्रिटिश मंत्रि-मंडल के होश कोई भी चीज़ दुरुस्त कर सकती थी, तो वह केवल 'बाहुबल' था। यदि इस समय ब्रिटिश राजनीतिज्ञ

शान की अधिक चिंता न करके न्याय की ओर ही अधिक ध्यान देते, तो आज ब्रिटिश-साम्राज्य अधिक शक्तिशाली होता और अमरीका भी कनाडा की तरह उनका एक उपनिवेश होता। परंतु अमरीका के सौभाग्य से उनकी आँखें बंद हो गई थीं। उन्होंने दमन और स्वेच्छा का वह मार्ग ग्रहण किया था, जिससे किसी भी राष्ट्र पर सदा के लिये आधिपत्य नहीं किया जा सकता। अमरीकन पहले कुछ थोड़े से ही स्वेच्छापूर्ण क़ानूनों के विरुद्ध आवाज़ उठा रहे थे, पर वे धीरे-धीरे पूर्ण स्वतंत्रता के लिये तलवार खींचने के लिये विवश किए गए।

"हाउस आफ कामांस जहाँ कोई भी रिपोर्ट नहीं जाने पाती थी-ऐसे बंद कमरे में होती थी—इसकी सत्ता की कोई सीमा नहीं थी और अपने आपकी ही प्रतिनिधि थी। इसके पदों का क्रय—विक्रय खुले बाज़ारों में होता था, प्रायः एक-एक जगह का क्रय चार हज़ार पौंड तक होता था और स्वयं हाउस आफ़ कामन्स के भीतर भी वोट धन और सहायता के लोभ से बेची और ख़रीदी जाती थीं। सदस्यों को घूंस देने के लिये ख़जाने में एक दफ्तर खोला गया था और एक ही दिन में वोट ख़रीदने के लिये पच्चीस हजार पौंड ख़र्च किए गए थे। पिट ने एक बार कहा कि था यह पार्लियामेंट राष्ट्र की प्रतिनिधि नहीं है।"

बल्कि प्रतिनिधि है ऊजड खंडहरों की, रईस ख़ान्दानों की, पूंजीपतियों की और-और विदेशीय बाहुबल वालों की। स्वयं बादशाह

यह स्पष्ट ही है कि अमरीका में जो रक्तपात हुआ, उसका उत्तरदायित्व केवल ब्रिटिश—सत्ता पर ही है। जब अमरीकनों के प्रत्येक तर्क को अवहेलना की जा रही थी, उनके शांति-पूर्ण और न्यायोचित आँदोलन को पाशविक शक्ति द्वारा कुचलने की चेष्टा की जा रही थी, उस समय उनके लिये दो ही मार्ग थे, एक यह कि ,गुलामी स्वीकार करें ,आत्म-समर्पण कर दें अथवा अपनी जान को हथेली पर रखकर ब्रिटिश तोपों से टकरा जाँय। क्या कोई भी जीवित राष्ट्र पहली बात को स्वीकार कर सकता है? इसलिये उनके सामने केवल एक मार्ग ही रह गया और बड़ी अनिच्छा से उस मार्ग की ओर वे अग्रसर हुए थे।

स्वतंत्रता के यज्ञ का पहला वर्ष समाप्त हो चुका था, व्यवस्था रहित और नौसिखुए राष्ट्रीय सैनिकों ने अब तक जो सफलता प्राप्त की थी, वह आशा से अधिक थी। ब्रिटिश मंत्रि-मंडल अब स्थिति की गंभीरता को पूरी तरह समझ गया था और अपनी सब शक्ति से राष्ट्रीय शक्ति को कुचलने पर उतारू होगया था। दो-तीन सैनिकों की टुकड़ियों को छोड़कर इंगलैंड से सब सैनिक अमरीका में भेज दिए गए थे। बोस्टन के अधिकार में आने के बाद वाशिंगटन अपना हेडक्वार्टर न्यूयार्क में ले

जार्ज-तृतीय अपनी शाही आय को पदों और वोटों के खरीदने में व्यय करते थे। सारे राष्ट्र में पचास में एक भी आदमी को मताधिकार प्राप्त नहीं था।'—A new History of England pp 535.

आया था और वहाँ भी अपनी शक्तियों का संगठन कर रहा था। राष्ट्रीय सेनाओं को सबसे अधिक साधन और सहायता पेरोमाक नदी के उत्तरीय हिस्से से मिलती थी। इसलिये ब्रिटिश कमांडर ने उसपर आक्रमण करके उसे अपने अधिकार में लाने का निश्चय किया। होवे और क्लिटन को आज्ञा हुई कि वे न्यूयार्क पर धावा मारें और हडसन नदी के प्रदेश को अपने अधिकार में कर लें, बरगोइन भी उनकी सहायता के लिये कनाडा से दक्षिण की ओर आते हुए उस नदी के ऊपरी प्रदेश में मिल जायगा। हडसन के आस-पास का प्रदेश कब्ज़े में आने से न्यू इंगलैंड अन्य उपनिवेशों से पृथक हो जायगा और अन्य उपनिवेशों से सहायता न मिलने के कारण वहाँ विद्रोह शांत हो जायगा। यहाँ शांति होने पर अन्य प्रांत स्वयं ही चुप हो बैठेंगे।

अगस्त में जनरल होवे २४ हजार ब्रिटिश और हीसियन सैनिकों के साथ उधर जा पहुँचा और कुछ ही दिन बाद क्लिटन अपनी उस सेना को-जो चार्लूसटाउन में पराजित हो चुकी थी, लेकर उससे जा मिला। इस तरह अब होवे के अधिकार में ५५००० पूर्ण शिक्षित और साधन-प्राप्त सेना इकट्ठी होगई। अंगरेजी सेनाओं को ओर से होवे की चिट्ठी लेकर कर्नल पेटरसन भी वाशिंगटन से मिलने के लिये आया कि यदि विद्रोही आत्म-समर्पण कर दें, तो उन्हें माफ़ कर दिया जायगा। वाशिंगटन ने पेटरसन के साथ तो बहुत अच्छा व्यवहार किया;

परंतु उसने अपने व्यक्तिगत नाम से शत्रुओं का कोई भी पत्र लेना स्वीकार न किया। उसने कहा—देश के शत्रुओं से अपने व्यक्तिगत नाम पर कोई भी पत्र लेना उसके अधिकार के बाहर की बात है। पेटरसन ने इस बात पर बड़ा ही ज़ोर दिया कि जनरल होवे और उसके भाई को ब्रिटिश सरकार ने बहुत-बड़े अधिकार दिए हैं कि वे उपनिवेशों में शांति स्थापित करें। इसलिये वे राष्ट्रीय पक्ष को हर तरह सुविधा देने को तैयार हैं। वाशिंगटन ने जवाब दिया—'मुझे जहाँ तक मालूम हुआ है, आप लोगों को केवल क्षमादान देने का अधिकार दिया गया है। जिन लोगों ने कोई अपराध ही नहीं किया है, उन्हें क्षमा की आवश्यकता ही क्या है? यही स्थिति अमरीका-निवासियों की है। वे तो केवल अपने जन्मसिद्ध अधिकारों की रक्षा करने के लिये लड़ रहे हैं।' कांग्रेस ने इस ब्रिटिश क्षमा-दान के मसविदे को सब अख़बारों में छपा दिया, जिससे सब संसार देख ले कि ग्रेटब्रिटेन उन्हें तोड़ने और बहलाने की कैसी चेष्टा करता है। साथ ही उसने जनरल होवे को भी जवाब दिया कि 'अंगरेजों के अत्याचारों का विरोध करना हम अपराध नहीं समझते। इसलिये हमें माफ़ी माँगने की भी कोई ज़रूरत नहीं है।'

अंगरेज समझौता करना चाहते थे। न्याय के आधार पर नहीं, अपनी सैनिक शक्ति के भय प्रदर्शन से। वे समझते थे कि जर्मनी के भाड़ेतू हीसयन सैनिक और कार्नवालिस के अँगरेज जवानों के आ जाने से बागियों में इतना भय फैल जायगा कि

वे हतोत्साह होकर भाग उठेंगे और कांग्रेस को अँगरेजों की शर्तों पर ही समझौता करना पड़ेगा। इधर कांग्रेस अभी कोई समझौते की बात ही नहीं करना चाहती थी, क्योंकि उसे अच्छी तरह विदित था कि ब्रिटिश-सत्ता न्याय और तर्क से नहीं झुकती। उसे यदि कोई झुका सकता है, तो वह केवल भाले की नोंक ही है। जिस दिन उनमें इतनी शक्ति आ जायगी कि वे ब्रिटिश सिंह की गर्दन को भाले की नोंक से झुका सकें, उसी दिन न्यायोचित समझौता हो जायगा।

वाशिंगटन इस समय न्यूयार्क में नहीं रहना चाहता था, क्योंकि उसे भय था कि कहीं उसकी भी वही हालत न हो, जो बोस्टन में अंगरेजी सेना की हुई थी। दूसरी ओर वह ब्रिटिश सैनिकों की वीभत्सता से नगर की भी रक्षा करना चाहता था। उसके पास इस समय कुल ११००० सैनिक थे, जिसमें दो हजार के पास बंदूकें नहीं थीं। १२ सितंबर सन् १७७५ को वाशिंगटन अपना हेडक्वार्टर भी न्यूयार्क से ७ मील दूरी पर ले आया। कुछ ही समय बाद यहाँ से दो ही मील की दूरी पर कूपिंगडेल नामक स्थान में ब्रिटिश सेना आ जमी और वहीं थोड़ी दूर पर ब्रिटिश जंगी जहाज भी हडसन नदी में आ पहुँचे। अब अंगरेजों ने दो तरफ से आग बरसाना शुरू किया। न्यू इंगलैंड ब्रिगेड के रक्षक, जोकि वहाँ इसलिये नियत किए गए थे कि दुश्मन को शहर में बढ़ने से रोकें और बिना एक भी गोली छोड़े हुए खड़े रहें-भाग खड़े हुए। यह भगदड़ देखकर जनरल पुटनम

कीदो टुकड़ियाँ भी घबड़ाकर इस भगदड़ में सम्मलित हो गईं। वाशिंगटन ने-जो तोपों की आवाज़ सुनकर इधर को ही घोड़ा दौड़ाए हुए आ रहा था, इन भगोड़ों को रोकने की काफ़ी चेष्टा की। परंतु फिर ज्योंहीं कुछ अंगरेज सैनिक दीख पड़े, त्योंही फिर ये भाग उठे। इसपर वाशिंगटन का दिल टूट गया और वह अपना टोप गुस्से में ज़मीन पर फेंक कर मौत का आह्वान करने के लिये दुश्मनों की ओर बढ़ा। उसने चीखकर कहा—क्या यही आदमी हैं, जिनको लेकर मुझे अमरीका की रक्षा करनी है? वह डोमन से ८० क़दम दूरी पर ही रह गया था। यदि इस समय एक अन्य अफ़सर घोड़े की बागडोर दूसरी ओर को न मोड़ देता, तो वाशिंगटन दुश्मनों के हाथ में ही पड़ जाता।

ब्रिटिश सेनाएँ न्यूयार्क में घुसीं, देशद्रोही टोरी उनका स्वागत करने के लिये तैयार ही बैठे थे। २० सितंबर की घोर रात्रि में अमरीकन सैनिकों ने नगर की ओर धूआँ और चिनगारियाँ निकलते हुए देखा। नगर धाँय-धाँय कर ज्वालाएँ उगल रहा था। रात भर यह अग्निकांड इसी तरह होता रहा और दूसरे दिन भी धुएँ के बादल बनकर इधर-उधर फैलते रहे। अग्नि में निष्पक्षता है, उसने टोरी और देशभक्त किसी का भी कुछ भेद नहीं रक्खा।

वाशिंगटन को जब पता लगा कि जनरल होवे न्यू जर्सी पर चढ़ाई करनेवाला है, तो हडसन नदी को पार कर

वह पोर्टली में जनरल ग्रीन से जा मिला। ब्रिटिश सेनाओं ने फ़ोर्ट वाशिंगटन पर धावा किया। क़िले में इतनी अमरीकन सेना और सामान नहीं था कि वे इतनी बड़ी ब्रिटिश-सेना का सामना करते। परंतु फिर भी कर्नल मॉंगो बहादुरी के साथ सामना करता रहा। ब्रिटिश सैनिकों ने जब पीछे से आक्रमण किया, तब उसके सैनिक तितर-बितर हो गए और उसे अपने क़िले में लौटकर शरण लेनी पड़ी। जब राष्ट्रीय सैनिक पड़ाव उखाड़ रहे थे, तब हीसियनों ने संगीनों से उन्हें भोंक डाला। वाशिंगटन ने कर्नल मॉंगो को समाचार भेजा कि यदि वह शाम तक ठहर सके, तो रात को सहायता पहुँचाने की चेष्टा की जायगी। परंतु राष्ट्रीय सैनिकों में इतनी गड़बड़ी और निराशा फैल गई थी कि अब उनको फिर जमाना असंभव था। ब्रिटिश सेना ने क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया और क़रीब २००० क़ैदी और बहुत-से सैनिक उनके हाथ पड़े। इसी तरह फ़ोर्टली, निवार्क, न्यूबर्नसविक, ट्रेंटन और जर्सी प्रांत के दूसरे नगर विजयी सेना के हाथ में आ गए।

अब ब्रिटिश सेना चाहती थी कि वह हडसन से हेकिन-सेक तक फैल जाय, ताकि राष्ट्रीय सेना दो नदियों के बीच में पड़ जाय। वाशिंगटन उनके इस अभिप्राय को अच्छी तरह समझ गया था। इसलिये उसने अपनी सेना को तुरंत ही पीछे लौटने का हुक्म दे दिया।

८ दिसंबर को जनरल वाशिंगटन ने ३००० थके हुए और

उत्साहहीन सैनिकों को लेकर डीलावरे नदी को पार किया। अंगरेजी और फिलाडेलफ़िया की कांग्रेस की सेना के बीच में केवल यही एक नदी रह गई थी। अमरीकन सेना नदी पार कर ही चुकी थी कि, लार्ड कार्नवालिस शान-बान से उनका पीछा करता हुआ आ पहुंचा, परंतु उस पार जाने के लिये उसे नावें ही नहीं मिलीं; क्योंकि वाशिंगटन ने नदी के सत्तर मील नीचे और ऊपर की सभी नौकाओं को दाहिने किनारे पर बँधवा दिया था। इसलिये कार्नवालिस को अपनी सेना के साथ न्यूयार्क वापिस लौट जाना पड़ा।

तीन महीने में स्थिति बिलकुल ही बदल गई थी। वाशिंगटन अपने सैनिकों-सहित डीलावरे नदी के उस पार खदेड़ दिया गया था। उसकी सेना करीब-करीब नष्ट-भ्रष्ट हो चुकी थी और कुल लैंड आदलैंड, न्यूयार्क सिटी और न्यूजर्सी के प्रदेश अंगरेजों के हाथ में आ गए थे।

इस समय अमरीका-निवासियों में मतभेद का प्याला लबालब हो रहा था। उनका नेतृत्व करनेवाली कांग्रेस विभक्त हो रही थी और कार्यकर्त्ता एक-दूसरे को भला-बुरा कहने में व्यस्त थे। हाल की हारों ने तो नए प्रजा-तंत्र की जड़ें भी हिला दी थीं। वाशिंगटन जब फ़िलाडेलफ़िया में आया, तब कांग्रेस के बहुत-से सदस्य उसपर गालियों की वर्षा करने लगे। परंतु अब भी वाशिंगटन ही ऐसा आदमी था, जिसपर अधिकांश लोगों का विश्वास था। सेना के संचालन

में कांग्रेस की आज्ञा प्राप्त करने में बहुत नुक़सान हो जाता था, इस कारण कांग्रेस ने छः महीने तक के लिये वाशिंगटन को पूरे अधिकार दे दिए थे कि वह जहाँ चाहे सेना भेजे।

कार्नवालिस और होवे न्यूयार्क को लौट गए थे, परंतु ट्रेंटन में राहल की संरक्षकता में बहुत-सी अंगरेज़ी सेना छोड़ गए थे। उन लोगों को यह पूरा विश्वास था कि वाशिंगटन की टूटी हुई शक्तियाँ अब जुड़ नहीं सकतीं। इसलिये वह बड़े दिन के उपलक्ष में दावतें उड़ाने और ख़ुशियाँ मनाने में मशगूल हो गए। उनको विश्वास था कि अब बहुत ही शीघ्र बागी आत्म-समर्पण कर देंगे।

इधर जनरल ली अपने कुछ सैनिकों के साथ वाशिंगटन से आ मिला और इसतरह उसके सैनिकों की संख्या ४००० हो गई। परंतु उनके पास न तो पूरे कपड़े ही थे और न अच्छी तरह उन्हें खाना ही मिलता था। इन सैनिकों को लेकर आक्रमण की बात सोचना बड़े ही साहस की बात थी। अब राष्ट्रीय पक्ष की ऐसी कोई विजय भी नहीं हुई, जो उनमें पुनः जीवन फूंक सके। ऐसी स्थिति में उनके पक्ष को जीवित रखना मुश्किल मालूम होता था।

राष्ट्रीय सेना ने निश्चय किया कि वह नदी पार करके नौ मील की दूरी पर पड़ी हुई हीसियन सेना पर बड़े दिन की रात को जा टूटें। वाशिंगटन ने बड़े ही ध्यान से आक्रमण की सब तैयारियाँ कीं और अपने सैनिकों को लेकर डीलावरे नदी के

तट पर जा पहुँचा। नावें तैयार थीं, सैनिक उनमें बैठ-बैठ कर पार होने लगे। उस समय बड़ी भयंकर शीत पड़ रही थी, आँधी भी ज़ोर से चल रही थी। चारों ओर भयंकर अँधेरा था और नदी बरफ़ के टुकड़ों से भरी हुई थी। कभी-कभी बर्फ़ की चट्टानें नौकाओं से टकराकर उन्हें अपने मार्ग से हटा देती थीं। कितनी ही नौकाएँ तो डूबते-डूबते बचीं। वाशिंगटन उस पार पहुँच चुका था और तोपों और दूसरे सामानों से भरी हुई नौकाओं के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था। ज्यों-ज्यों समय गुज़रता जाता था, त्यों-त्यों उसका दिल भी धड़क रहा था। कुछ ही घंटों में राष्ट्र और उसका निर्णय होनेवाला था। इस उद्योग में सफलता प्राप्त करने पर राष्ट्र की शक्तियाँ फिर जमा हो सकती थीं और पराजय के बाद तो कोई मार्ग ही नहीं था।

सेना और सामान के पहुँचते-पहुँचते तीन बज गए और कहीं चार बजे जाकर वाशिंगटन ट्रेंटन की ओर कूच कर सका। दुश्मन को सोते हुए पकड़ना तो अब संभव नहीं था; क्योंकि राष्ट्रीय सैनिक दिन निकलने से पहले पहुँच ही नहीं सकते थे। लौटना भी अब मुश्किल था; क्योंकि यदि दुश्मनों को इसका पता लग जाय, तो नदी का पार करना भी बहुत जोखिम की बात हो जाती थी। इसलिये यही निश्चय हुआ कि अब चाहे जो कुछ भी हो, आगे बढ़ना ही चाहिए।

इधर राहल को इस बात की कुछ भनक पड़ गई। इसलिये

वह सजग हो गया। लेकिन जब वाशिंगटन डीलावरे नदी को पार करने की चेष्टा कर रहा था, तब इधर ट्रेंटन की चौकी में भय-सूचक बंदूकें भी छोड़ी गईं। इससे राहल अपनी सेना को लेकर चौकी की ओर दौड़ा। यहाँ आकर मालूम हुआ कि जंगल में-से कुछ आदमियों का एक दल चौकी पर टूट पड़ा और ६ आदमियों को घायल कर चला गया। राहल ने जंगल में सैनिकों की दो टुकड़ियाँ और एक तोप भेजी, परंतु वहाँ खोजने पर भी कोई न मिलने पर, यह सोचकर कि जो आक्रमण होना था, सो हो गया और अब कोई डर की बात नहीं है। इसलिये वे लौटकर सो रहे। इधर वाशिंगटन ने आधी सेना जनरल सलीवन की संरक्षता में नीचे के मार्ग से ट्रेंटन की ओर भेजी और स्वयं भी बचे हुए सैनिकों को लेकर ऊपर के रास्ते से बढ़ा। वह दुश्मन के सिपाहियों को अपनी सेना की कैंची में पकड़ना चाहता था। इस समय तूफ़ान तो शांत हो गया था, पर कोहरा अब भी बुरी तरह छाया हुआ था। ओस की सबब से ज़मीन इतनी फिसलनी हो गई थी कि चलना मुश्किल होगया था। अत्यंत भयंकर शीत, इसपर ओस और बर्फ़ की वर्षा! दो सैनिक तो बर्फ़ में जम गए। अनेक सैनिकों के पैर में जूते नहीं थे, इस कारण बर्फ़ पर चलना—यह सोचकर हृदय काँप उठता है।

बर्फ़ और तूफ़ान के कारण सैनिकों का चलना और गाड़ियों की खटपट दूर जाने नहीं पाती थी। आठ बजे

सुबह ट्रेंटन का गाँव दिखलाई पड़ा। जैसे ही वे गाँव के समीप पहुँचे, वाशिंगटन ने एक आदमी से जो लकड़ी काट रहा था पूछा-"हीसियन चौकी कहाँ है ?" उस आदमी ने तुरंत ही उत्तर दिया—"मैं नहीं जानता।" तब एक कप्तान ने कहा "तुम बता दो, क्योंकि यही जनरल वाशिंगटन है।" इतना सुनते ही आदमी का रुख़ एक दम बदल गया। उसने अपने दोनों हाथों को उठाकर कहा-'ईश्वर आपको समृद्धिशाली और चिरायु बनावे, चौकी उस मकान में है और संतरी उस पेड़ के पास खड़ा होता है।"

राष्ट्रीय सैनिक पहले चौकी पर टूट पड़े। वहाँ जो सैनिक थे, वे बिलकुल बेख़बर पड़े थे। उन्होंने पहले कुछ लड़ने की चेष्टा की, पर फिर जब राष्ट्रीय सैनिकों की संख्या देखी, तो वे भाग खड़े हुए। अब हीसियन सेना में अस्त्र-शस्त्र सँभालकर खड़े हो जाने के लिये बिगुल बज उठा। चारों ओर कोलाहल मचने लगा। कुछ सैनिकों ने खिड़कियों से ही इधर-उधर गोलियाँ चलाईं और कुछ बाज़ार में भाग कर एकत्र होने की कोशिश करने लगे। घुड़सवार घोड़ों पर बैठकर इधर-उधर दौड़ने लगे, जिससे और भी गड़बड़ी मच गई। कर्नल राहल अपने सैनिकों को इकट्ठा करने की कोशिश कर रहा था, परंतु वह भी इस आकस्मिक आक्रमण से घबड़ा गया था।

हीसियन सेना ने वाशिंगटन का सामना किया। परंतु

राहल के घायल होकर गिरते ही उनकी हिम्मत टूट गई और उन्हें राष्ट्रीय सेनाओं के हाथ में आत्म-समर्पण कर देना पड़ा। यहाँ १००० क़ैदी, कितनी ही तोपें और बहुत-सा सामान वाशिंगटन के हाथ लगा। वाशिंगटन के सैनिकों की जैसी फटी और बुरी हालत थी और जैसी परिस्थिति में उन्होंने आक्रमण किया था, उसमें विजय प्राप्त करना यह केवल राष्ट्रीय पक्ष के सौभाग्य की ही बात थी। यदि राहल और उसके सैनिक विजय के मद में इतने मशगूल न हो जाते, तो अमरीकन शक्ति का इस समय कम-से-कम अंत ही हो जाता। वाशिंगटन की सेना की हालत देखते हुए उसे लेकर अब आगे बढ़ना तो संभव ही नहीं था। इसलिये कुछ सेना ट्रेंटन में छोड़कर वाशिंगटन फ़िलाडेलफ़िया में वापिस लौट आया।

फ़िलाडेलफ़िया से दूसरे दिन सुबह जिस समय यह तोपें, क़ैदी और झंडे बाज़ारों में निकाले गए, तो लोग चकित रह गए। फ़िलाडेलफ़िया-निवासी तो प्रतिदिन नगर पर अँगरेजी आक्रमण की आशंका कर रहे थे, अब एकाएक जब उन्होंने इस विजय के समाचार सुने, तो उनकी प्रसन्नता का ठिकाना ही न रहा। इससे देश-भक्तों के टूटे हुए दिलों में फिर सहारा आ गया।

इधर जनरल होवे डीलावरे नदी के जम जाने पर फ़िलाडेलफ़िया पर आक्रमण करने का स्वप्न देख रहा था, उसने जब यह ख़बर सुनी, तो वह दंग रह गया। कार्नवालिस

योरप जाने की तैयारी कर रहा था, जनरल होवे ने उसको पत्र लिखकर रोका और न्यूबर्सी में सेना की व्यवस्था करने के लिये भेज दिया।

कार्नवालिस ने अपनी सेना को प्रिंसटाउन में एकत्रित किया और ट्रेंटन की ओर बढ़ने लगा। वाशिंगटन की स्थिति फिर भयावह हो चली थी। क्योंकि उसके पास इतनी शक्ति तो थी ही नहीं कि, वह सामने आकर कार्नवालिस का सामना कर सके। उसने जनरल केडवाल्डर और जनरल मिफ्लिन को लिखा कि जल्दी ही उधर आ जाओ। उनके आ जाने पर एसनपिंक नदी के पूर्वीय किनारे पर छावनियाँ डाल दी गई। नदी बहुत गहरी थी और उसपर पत्थर का एक पुल भी था। इसी पुल के मुहाने पर वाशिंगटन ने अपनी तोपें लगा दीं। सूर्य डूबते ही कार्नवालिस ने ट्रेंटन में प्रवेश किया।

दूसरे दिन कार्नवालिस ने पुल पार करके वाशिंगटन पर धावा मारना चाहा। परंतु तोपों की मार से उसे बार-बार पीछे ही हटना पड़ा। प्रत्येक बार जब कार्नवालिस के सैनिक असफल होकर पीछे हटते, तब अमरीकनों के मोर्चे जयध्वनि और हर्षनाद से गूंज उठते थे। अत में कार्नवालिस ने भी छावनियाँ डाल दीं। वाशिंगटन की सेना इस समय दो नदियों के बीच फँस गई थी। पीछे डीलावरे नदी थी और सामने एसनपिंक नदी, जिसके दूसरे पार दुश्मनों की सेना पड़ी हुई थी। दुश्मन यदि एसनपिंक नदी को पार कर लें, तो फिर

राष्ट्रीय सैनिकों को धूल में मिलने से कौन रोक सकता था? पीछे डीलावरे नदी होने के कारण उनके लिये पीछे लौटना भी कैसे संभव हो सकता था? कार्नवालिस यह सब समझता था और उसे विश्वास था कि अब राष्ट्रीय सेना उसकी कैंची से निकल नहीं सकती।

दिन भर गोला-बारी होती रही, परंतु अमरीकनों को अधिक हानि नहीं पहुँची। धीरे-धीरे निशादेवी ने अपनी काली चादर फैला दी और सैनिक तंबुओं में चले गए। कुछ समय के लिये सब शांत हो गया। परंतु वाशिंगटन के हृदय में शांति कहाँ थी? उसके विचारों में तूफ़ान उठ रहा था? राष्ट्रीय सैनिकों की मौत मुँह बाए खड़ी थी। अंग्रेज सैनिकों की संख्या वाशिंगटन से कहीं अधिक थी, और वे सभी योरप की लड़ाइयों में लड़े हुए अनुभवी सैनिक थे, साथ ही वे कपड़े और हथियारों से पूर्ण-संपन्न थे। इधर राष्ट्रीय सैनिकों के पास न तो बदन में साबूत कपड़े, न पेट भर अन्न, न लड़ने का पूरा सामान और सब-के-सब नौसिखुए सैनिक थे। यदि उनके हृदय में कुछ था, तो केवल देश के लिये बलिदान हो जाने की आकांक्षा ही।

डीलावरे नदी पार करने की चेष्टा करना असंभव था। यदि पार हो भी गए, तो सारा जर्सी प्रांत दुश्मनों के हाथ में चला जायगा। फिर तो शीघ्र ही कार्नवालिस फ़िलाडेलफ़िया पर धावा मारकर प्रजातंत्र की हड्डियाँ तोड़ देगा।

वाशिंगटन यह सोच ही रहा था कि उसे हृदय के एक कोने में कुछ आशा का प्रकाश दिखलाई पड़ा। वाशिंगटन ने सोचा कि दुश्मन की प्रायः सभी सेना प्रिंसटन से चल पड़ी है, परंतु उनका सामान और रसद अब भी बर्नसविक में पड़ा हुआ है? वाशिंगटन ने सोचा कि क्या रात में एक भिन्न लंबे मार्ग से प्रिंसटन पर आक्रमण करके वहाँ के बचे हुए सैनिकों को क़ैद करना और उनकी रसद वग़ैरह को नष्ट करके बर्नसविक तक पहुँच जाना संभव नहीं है? इससे उसके सैनिकों में ट्रेंटन पर विजय प्राप्त करने के बाद जो उत्साह भर गया है वह भी कम न होगा और वे इस भावी आपदा से बच भी जायँगे और शायद ट्रेंटन पर भी फिर अधिकार करने का अवसर मिल जायगा।

काम बड़े ही साहस का था; परंतु अब जीवन या मरण के सिवाय दूसरा उपाय ही क्या था? वाशिंगटन ने दुश्मन को धोखा देने के लिये कुछ आदमी खाईं खोदने के लिये भेज दिए, जिससे दुश्मन को मालूम हो जाय कि हम अपनी रक्षा के लिये खाइयाँ खोद रहे हैं और कुछ को इस काम पर तैनात कर दिया कि तंबुओं की आग रात भर प्रज्वलित रक्खें।

रात को प्रजा-तंत्रवादी-सेना चुपचाप तंबुओं से निकल पड़ी और एक बहुत गोल-मोल सड़क से प्रिंसटन की ओर रवाना हो गई। सुबह होते-होते वाशिंगटन स्टोनीब्रुक नदी के पास पहुँच गया और उसकी सेनाएँ पुल से पार हो गईं। इधर कर्नल

मोहुड दो टुकड़ियों को लेकर कार्नवालिस की सहायता को आ रहा था। उसकी और राष्ट्रवादियों की भयंकर मुठभेड़ हो गई। पहले तो अंगरेज़ विजयी होते दिखलाई दिए और एक अंगरेज सैनिक की संगीन अमरीकन जनरल वीर मर्सर की छाती में घुस गई। अब तो चारों तरफ़ से अंगरेज़ सैनिक उसपर संगीनें बरसाने लगे। मर्सर लड़ता-लड़ता पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसका अंत आ चुका था। परंतु पासा फिर पलटा। अमरीकन सेना की विजय हुई। सौ से अधिक अंगरेज़ काम आए और ३०० गिरफ्तार कर लिए गए। बचे हुए अंगरेज बर्नसविक को भाग गए और प्रिंसटन नगर पर प्रजातंत्रवादियों का कब्ज़ा हो गया। अब वाशिंगटन की सेना बहुत थक गई थी और उसमें दूसरा आक्रमण करने की शक्ति भी नहीं रही थी। इसलिये निश्चय हुआ कि मोरीटाउन के पहाड़ी-प्रदेश में छावनियाँ डाली जांय।

सुबह कार्नवालिस जो उठा, तो अपने सामने उजड़े हुए तंबू देखकर भौंचक्का रह गया। बहुत देर तक उसकी समझ में ही नहीं आया कि अमरीकन सैनिक किधर जा सकते हैं? परंतु उसने पूर्व की ओर जब गोला-बारी की आवाज़ सुनी तो उसे मालूम हुआ कि अमरीकन सैनिक साफ़ बचकर निकल ही नहीं गए, पर उन्होंने प्रिंसटन में उनकी रसद पर धावा भी बोल दिया है। उसने सब छावनियाँ उखाड़ने का हुक्म दे दिया और स्वयं प्रिंसटन की ओर दौड़ पड़ा।

इधर वाशिंगटन भी सावधान न था। उसने जनरल पुटनम को लिखा—दुश्मनों में आतंक छा गया है। मुझे आशा है कि मैं उन्हें जर्सी से बाहर निकाल सकूँगा। अपनी सेना को कांसविक की ओर ले जाओ और उस तरफ़ दुश्मन पर कड़ी निगाह रक्खो। जितने गुप्तचर बाहर भेजना आवश्यक समझो, भेज दो। कुछ घुड़सवार देहाती कपड़ों में इस काम के लिये बराबर इधर-उधर घूमते रहें। यदि दुश्मन के आगमन का पता लगे, तो तुरंत ही मुझे सूचना भेजो। *

कुछ ही समय में स्थिति बिलकुल ही बदल गई। कार्नवालिस को, जो अमरीकन सेना को विध्वंस करने का स्वप्न देख रहा था, बर्नसविक में लौट जाना पड़ा, जहाँ उसने अपने सब सैनिकों को इकट्ठा होने का हुक्म दिया। वह दुश्मन से इस तरह घिर गया था कि वह उस मार्ग द्वारा ही न्यूयार्क से आमदरफ्त रख सकता था और वहीं से उसे रसद भी प्राप्त हो सकती थी। हेमिल्टन के शब्दों में "एक शक्तिशाली सेना का असाधारण दृश्य!" छोटी-सी सैनिक शक्ति ने उसे थोड़ी-सी भूमि में घेर लिया था और उसे उस सीमा से कभी बाहर निकलने नहीं दिया।

मई मास में जनरल बरगोइन इंगलैंड से कनाडा भेजा गया कि वहाँ से वह अंगरेजी सेना संगठित कर प्रजातंत्र-

* Life of washington Vol 11 p. 712.

वादियों पर टूट पड़े। सम्राट् और उसके सहयोगियों का विचार था कि कनाडा की यह सेना यदि न्यूयार्क में पड़ी हुई होवे की सेना से संयुक्त हो गई, तो विद्रोहियों के लिये आत्म-समर्पण करना अनिवार्य हो जायगा। बरगोइन की सेना में इस समय तीन हजार सात सौ चौबीस अंगरेज सैनिक और अफ़सर, तीन हजार सोलह जर्मन, दो सौ पचास कनाडा-निवासी, चार सौ रेड-इंडियन थे और चार सौ तेहत्तर गोलंदाज़ थे। इस तरह अस्त्र-शस्त्रों से भली-भाँति सुसज्जित आठ हज़ार सिपाहियों की शक्तिशाली सेना ने दक्षिण की ओर कूच किया।

बरगोइन ने वोकट के प्रपात पर डेरा डाला, यहाँ से क्राउन पॉइंट कुछ ही मील उत्तर की ओर था। यहाँ कुछ वहशियों को भी अंगरेजी सेना में मिला लिया गया। इनपर वीभत्स लोगों को ऐसी-ऐसी जोशीली और उत्तेजना पूर्ण बातें कहीं गईं और उन्हें अमरीकनों द्वारा उनपर किए हुए अत्याचारों का इस तरह स्मरण दिलाया गया कि उनके हृदय प्रतिहिंसा से जल उठे। जहाँ-जहाँ यह सेना विजय प्राप्त करती, वहाँ-वहाँ यह हिंसक लोग निर्दोष अमरीकनों की बस्तियों पर लूटमार करने, घर जलाने और स्त्री-बच्चों को पीड़ित और अपमानित करने के लिये छोड़े दिए जाते थे।

बरगोइन ने क्राउन पॉइंट तो विना लड़ाई के ही जीत लिया और टिकोनडेरोगा से चार मील उत्तर की ओर

अपनी छावनियाँ डाल लीं और स्वयं मोर्चेबंदी करने की चेष्टा करने लगा। यहाँ उसने एक घोषणा निकाली, जिसमें उसने कहा कि अगर विद्रोही आत्म-समर्पण नहीं कर देंगे, तो वह उनको पीस डालेगा। इस समय टिंकोनडेरोगा के किले में जनरल सेंटक्लेयर के आधीन २००० प्रजा-तंत्रवादी सैनिक थे। सेंटक्लेयर ने वाशिंगटन को सहायता भेजने के लिये लिखा। लेकिन इस समय उसे अपनी ही रक्षा करने के लाले पड़रहे थे। इसलिये उत्तर की ओर वह कोई सहायता नहीं भेज सकता था। टिंकोनडेरोगा का किला बहुत मज़बूत था और सेंटक्लेयर अंगरेजी सेना का मुक़ाबला कुछ दिन तक भी कर सकता था। परंतु किले के पास ही पंद्रह सौ गज पर एक पहाड़ी थी। उसपर यदि अंगरेजी सेनाएँ पहुँच जाँय और वहाँ से गोला-बारी करें, तो अमरीकन सैनिकों का टिकना असंभव था। अमरीकन सैनिक दूसरी ओर अंगरेजों पर गोला-बारी करने में व्यस्त तो थे ही, पर उनका ध्यान इस पहाड़ी की ओर तनिक भी नहीं था।

अंगरेज जनरल फ़िलिप तुरंत ही पहाड़ी की महत्वता को समझ गया और उसने पहाड़ी को अच्छी तरह देखने के लिये एक इंजीनियर भेज दिया। उसने स्थिति को अच्छी तरह देखकर अंगरेजी जनरल के सामने रिपोर्ट पेश की कि, वहाँ से क़िले पर बहुत अच्छी तरह गोला-बारी की जा सकती है और यद्यपि पहाड़ी बहुत ऊबड़

खाबड़ है, लेकिन चौबीस घंटे में पहाड़ी पर तोपें और सेना पहुँचाने के लिये मार्ग बनाया जा सकता है। अँगरेजी सैनिक चट्टानों और पेड़ों को काटकर रास्ता बनाने में पिल पड़े।

दूसरे दिन सूर्य निकलते ही अमरीकन सेना ने देखा कि पहाड़ी पर ब्रिटिश सेना की लाल वर्दियाँ चमक रही है और किले पर आग उगलने के लिये तोपें भी लगाई जा रही हैं। अब क्या हो? कल तक तो ब्रिटिश तोपें किले पर आग उगलना शुरू कर देंगी। उस समय दो ही मार्ग रह जायँगे—मृत्यु या आत्म-समर्पण। अंत में सेंटक्लेयर ने निश्चय किया कि रात को चुपचाप किला छोड़ दिया जाय। परंतु इसमें कई कठिनाइयाँ थी। दोपहर के तीन बज चुके थे और उन्हें रात के लिये सब तैयारियाँ करनी थी। सामने पहाड़ी पर दुश्मन ताक रहे थे और उनकी तैयारियों से उन्हें तुरंत संदेह हो सकता था। बीमार, स्त्री, बच्चे, तोप, रसद सब-कुछ साथ लेना था; परंतु यह सब इस सावधानी से किया गया कि दुश्मन कुछ ताड़ ही नहीं सके। बीच-बीच में गोला-बारूद भी की जाती थी, जिससे दुश्मनों का ध्यान उधर लगा रहे। अंत में राम-राम करते रात आई। सेंटक्लेयर ने अपने आदमी और गोला-बारूद दो सौ नावों पर चढ़ा दिए और स्केनिलवरो को रवाना हुआ। सुबह होते-होते अंगरेजों को इसका पता चला, ब्रिटिश छावनियों में सैनिकों के लिये शस्त्र सँभालने के लिये बिगुल

बजाया गया और तोपें छोड़ी गई। अँगरेज सैनिक अमरीकनों का पीछा करने लिये चल दिए।

टिंकोनडेरोगा पर ब्रिटिश झंडा फहराने लगा, बरगोइन विजय-पर-विजय प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ता चला और उसने तीन ही सप्ताह में तीन और आवश्यक क़िलों पर अधिकार प्राप्त कर लिया। प्रजातंत्रवादियों की सेना–जो भूख से व्याकुल थी, तितर–बितर हो गई। राष्ट्रीय सेना की बहुत-सी तोपें, गोला–बारूद और सामान दुश्मनों के के हाथ में आ गया। परंतु सबसे अधिक हानि, जो राष्ट्रीय पक्ष के लिये हुई, वह यह थी कि सर्वसाधारण की दृष्टि में उसकी शक्ति बहुत गिर गई थी। अलबेनी नगर में तो पूरा आतंक छा गया, बरगोइन के आने की आशंका से लोग इतने भयभीत हो गए कि अपने-अपने घरों से सामान और फ़र्नीचर निकालकर दूसरी जगह भेजने लगे। यह कहा जाता था कि उत्तर का ज़बर्दस्त बाँध टूट गया और अब दुश्मन को रोकना असंभव है। इधर बरगोइन की बीभत्सता बढ़ती ही जाती थी, वह जहाँ जाता, टोरी और बहशियों की सहायता से आग लगा देता और मीलों तक बस्ती उजड़ जाती थी।

इन क़िलों पर कब्ज़ा होने से अंगरेज़ी सेना में ख़ुशी छा गई। उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि अब विद्रोही उनकी शक्ति के सामने अधिक दिन नहीं ठहर सकते। उस समय के एक प्रसिद्ध अंगरेज़ लेखक ने लिखा है कि आक्रमणकारी

फ़ौज 'इस विजय से बहुत ही खुश हो रही थी और समझती थी कि उनको शक्ति अजय है। वह अपने दुश्मन को बड़ी ही हेय दृष्टि से देखती थी, उसका विचार था कि अब उनका परिश्रम सफल होने ही वाला है।' इंगलैंड के मंत्रि-मंडल और अमरीका-विरोधी जनता ने इन समरों को बड़ी ख़ुशी से सुना। अमरीकनों की अयोग्यता और कमज़ोरी का बार-बार ढिंढोरा पीटा जाने लगा। "यह मत निश्चय करना कठिन नहीं था कि लड़ाई यथार्थ में समाप्त हो चुकी और अब आगे प्रतिरोध करने से उनकी आत्म-समर्पण करने की शर्तें भी बिगड़ती ही जायँगी।"

बरगोइन को अपनी विजय का पूरा निश्चय था। उसकी सेना और हडसन नदी में अब केवल सोलह मील का ही अंतर रह गया था। सोलह मील के तय करते ही उसके सैनिक वाशिंगटन पर टूट पड़ेंगे और राष्ट्रीय सेना को सदा के लिये छिन्न-भिन्न कर देंगे। यदि बरगोइन धावा मारता हुआ एलबेनी पहुँचकर क्लिंटन से जा मिलता, तो अमरीकन सैनिकों का अंत निश्चय ही था, परंतु प्रजातंत्र की शक्तियों को तुच्छ समझना तो अंगरेजी अफ़सरों का स्वभाव ही हो गया था। इसलिये बरगोइन ने सोचा अब जल्दी ही क्या है? काम तो क़रीब-क़रीब हो ही गया है। अब कुछ समय यहाँ विश्राम क्यों न कर लिया जाय। अंगरेजी सैनिकों ने पड़ाव डाल दिए।

इस समय प्रजातंत्र के अस्तित्व के लिये यह अत्यंत आवश्यक था कि उसको भिन्न-भिन्न शक्तियाँ एक भाव और एक हृदय से काम करें। परंतु कांग्रेस में इस समय भिन्न ही दृश्य दिखलाई दे रहा था। तू-तू, मैं-मैं और आपसी झगड़ों के दृश्य देखकर देशभक्तों के हृदय बैठे जाते थे। जनरल क्यूलर और सेंटक्लेयर पर टिंकोनडेरोगा का क़िला छोड़ने के लिये अपशब्दों की बौछार पड़ रही थी। जान एडमस ने तो यहाँ तक कहा कि हम यदि एक जनरल को गोली न मार देंगे, तो एक जगह को भी क़ायम न रख सकेंगे।' लेकिन वीर जनरल क्यूलर इन बातों से घबड़ाया नहीं। उसने घोषणा की कि 'वह जनरल से एक-एक इंच पर लड़ेगा।'

उसने बरगोइन के समय नष्ट करने का पूरा लाभ उठाया। उसने बुरकीन के झरने को इस तरह रोक दिया कि उसमें-से नावें पार न हो सकें। स्केनिसरो से जो सड़क अलबेनी को आती थी, उसके दोनों तरफ़ पेड़ों का बहुत घना जंगल था। क्यूलर ने इन पेड़ों को काट दिया, जिनके गिरने से सड़क बंद हो गई। आस-पास की नदी, नाले, और झरनों पर के करीब-करीब पचास पुल तोड़ दिए गए और जानवर भी हाँक दिए गए।

इधर बरगोइन रसद, तंबू और असबाब के आगमन की प्रतीक्षा में तीन सप्ताह तक स्केनिसवरो में पड़ा रहा। यहाँ उसने प्रजातंत्रवादियों की बहुत-सी भूमि और

खेत छीनकर टोरियों को नाममात्र मूल्य में दे दिए।

जब बरगोइन सेनिसवरो से चला, तो उसे एक तरह से रेंग कर चलना पड़ रहा था। वह एक दिन में एक मील से ज़्यादा नहीं चल सकता था। इस तरह हडसन तक पहुँचने में उसे पंद्रह दिन लग गए। उसे सफलता की अब भी पूर्ण आशा थी, वह सोच रहा था कि शीघ्र ही अलवेनी पहुँच जायगा। जहाँ क्लिटन की सेना उसकी सहायता के लिये आ रही थी। वह अब निरंतर विना किसी विरोध के बढ़ रहा था। वह जहाँ जाता, बेचारे किसान उसके आतंक से घर छोड़-छोड़ कर भाग जाते थे, वह उनमें आग लगा देता था। उसके सैनिक सुंदर लहलहाते हुए खेत नष्ट कर देते थे। बरगोइन की प्रगति रोकने के लिये स्क्यूलर हडसन से कुछ ही मील पर डटा हुआ था।

शीघ्र ही बरगोइन की सारी ख़ुशी किरकिरी हो गई। उसे मालूम हुआ कि उसकी रसद और अन्य सामान बहुत-कुछ निबट चुका है और पास की टिकिनडेरोगा से रसद लाने के लिये परियाप्त घोड़े नहीं हैं। इसी समय उसे एक टोरी ने सूचना दी कि वेनिंगटन में प्रजातंत्रवादियों की कुछ रसद और घोड़े जमा हैं, उसकी रक्षा के लिये बहुत ही कम सैनिक हैं और आस-पास की जो, जनता है वह राज-भक्त है, जो मौका पाते ही तुरंत प्रजातंत्रवादियों के विरुद्ध उठ खड़े होंगे। इसपर बरगोइन ने ८०० जर्मन, कुछ कनाडा-निवासी और कुछ आदि-निवासियों

को बौम की अध्यक्षता में बेनिंगटन पर छापा मारने और रसद पर कब्ज़ा करने के लिये भेज दिया।

बौम के आगमन का समाचार बेनिंगटन और उसके चारों ओर देहातों में फैल गया। स्टार्क नाम का एक प्रजातंत्रवादी आठ सौ राष्ट्रीय सैनिकों को लेकर बौम के आने की प्रतीक्षा करने लगा। बौम टोरियों को संगठित करके अपनी सेना में मिलाने की आशा कर रहा था, पर यहाँ उसे मालूम हुआ कि सारा प्रदेश ही विद्रोह में उठ खड़ा हुआ है। इसलिये अब बौम को रुक जाना पड़ा, वह रक्षा का प्रबंध करने लगा और उसने बरगोइन को और सहायता भेजने के लिये लिखा। स्टार्क के सैनिक भी सामने ही आकर डट गए। १५ तारीख़ को इतनी ज़ोर की वर्षा हुई कि बौम सिवाय खाईं वग़ैरह ठीक कराने के और कुछ न टलका। दूसरे दिन धूप निकलते ही प्रजातंत्रवादियों ने उनपर आक्रमण किया। बुड्ढा स्टार्क उनका सेनाध्यक्ष था। ब्रिटिश छावनियों की तरफ़ से जो गोले छोड़ने की पहली आवाज़ हुई, तो बुड्ढे स्टार्क ने अपनी तलवार चमकाकर कहा-"देखो लड़को! वे लाल कोटवाले हैं, हम या तो आज उनको पराजित करेंगे या मोली स्टार्क (स्टार्क की पत्नी) विधवा हो जायगी। बौम के आदमी चीत्कार कर हडसन की तरफ़ भाग उठे। स्टार्क ने बहुत दूर तक उनको खदेड़ा, इस प्रकार बहुत-से क़ैदी और रसद उनके हाथ लगी।

इधर जनरल स्क्यूलर जब बरगोइन को चारों तरफ़ से घेरने की तैयारी कर चुका, तब उसी समय कांग्रेस से जनरल गेट्स उससे चार्ज लेने आ पहुँचा। इससे जनरल स्क्यूलर को बड़ा खेद हुआ कि उसके परिश्रम का सारा प्रतिफल उसके हाथ से अनायास ही निकला जा रहा है ❀; परंतु उसकी आत्मा बड़ी उच्च थी। उसने अपने स्वार्थ को देश के हित के सामने तुच्छ समझा। उसने जनरल गेट्स के नीचे रहकर ही उसे सहायता पहुँचाने का निश्चय किया।

बरगोइन के आफ़त के दिन आ रहे थे। प्रजातंतवादी जनरल लिंकस ने कनाडा और बरगोइन के बीच के दो किले जीत लिए थे, जिससे उसे कनाडा से रसद और सहायता मिलना रुक गया था। अब प्रजातंत्रवादी सैनिकों की संख्या भी बरगोइन से बढ़ गई थी और उसके आदमी रसद कमी के कारण निर्बल हो रहे थे। उसने क्लिंटन के आने की आशा से हडसन नदी को पार किया और सराटोगा में छावनी डाली। वह क्लिंटन को बराबर संदेशा भेज रहा था, परंतु प्रजातंत्रवादी इन्हें बीच ही में रोक लेते थे। अंत में

❀ Livingston wrote to schuyler 'Burgoyne is in such a situation, that we can neither advance nor retire without fighting.' A Capital battle must soon be faught. I am chagrined to the soul, when I think that another person will reap the fruits of your labour.'

किसी तरह उसे क्लिंटन का जवाब मिला कि वह दूसरे मास की बीस तारीख़ को उससे आ मिलेगा। पर इतने दिन सामना करने की ताक़त बरगोइन में न थी। अब क्या हो? अब बरगोइन के पास एक ही मार्ग था कि वह जान हथेली पर रखकर दुश्मन पर टूट पड़े। अंत में यही निश्चय हुआ। बरगोइन अपने १५०० सैनिक लेकर मोर्चों से निकल पड़ा और 'युद्ध वीर' राष्ट्रीय सेना पर टूट पड़ा।

उधर क्लिंटन विजय-पर-विजय प्राप्त कर रहा था और जिस दिन बरगोइन ने यहाँ धावा बोला, उसी दिन उसने जनरल बोथन को एक बड़ी सेना लेकर अलबेनी के लिये रवाना कर दिया। बोथन बढ़ता जाता था और तट-प्रदेश को जलाने और नष्ट-भ्रष्ट करने में बहुत समय नष्ट कर रहा था।

इधर बरगोइन और प्रजातंत्रवादी सेना में भयंकर मार-काट छिड़ गई थी। कितनी ही बार प्रजातंत्रवादियों ने आगे बढ़कर गोलियों की बौछारें कीं और कितनी ही बार वे पीछे खदेड़ दिए गए। पाँच दफे प्रजातंत्रवादियों ने एक तोप पर कब्ज़ा किया और पाँचों दफ़े वह उनसे छिन गई। अंत में कर्नल क्लिली अपनी तलवार हिलाता हुआ उस तोप पर जा कूदा और उसे प्रजातंत्रवादियों के कब्ज़े में ले लिया।

ब्रिटिश सैनिक गोलों की आग बर्षा रहे थे, लेकिन वे बीच

के घने जंगल में रुक जाते थे और प्रजातंत्रवादियों को अधिक हानि नहीं होती थी। अंत में ब्रिटिश सेना को हटना ही पड़ा। उसके कई अफ़सर मारे गए। क्लिंटन के पास से अब तक कोई सहायता नहीं आई थी। सैनिक भूख से तड़फड़ा रहे थे, प्रजातंत्रवादियों ने सब रास्ते रोक रक्खे थे और रसद का मिलना असंभव हो गया था। प्रजातंत्रवादी स्त्रियों पर हाथ नहीं उठाते थे, इसलिये केवल वे ही नदी से पानी ला सकती थीं। अब मुश्किल से केवल तीन दिन के लिये खाने की रसद और बाक़ी थी और आगे कुछ मिलने की आशा भी नहीं थी। ऐसी हालत में बरगोइन ने अपने अफ़सरों की एक मीटिंग की। जिस तंबू में मीटिंग हो रही थी, उसके चारों तरफ़ साँय-साँय गोलियाँ चल रहीं थी। एक गोला तो तंबू फाड़कर मेज पर ही फूटा था। शाम को सफ़ेद झंडा फहरा दिया गया। इसके अतिरिक्त होता ही क्या? रात को कैप्टेन कैंपवेल ब्रिटिश हुक्म लेकर आया और उससे यह भी मालूम हुआ कि बौथन उसकी भी सहायता को आ रहा है, पर अब बहुत देर हो चुकी थी। शांति का संदेश फिर किस तरह वापिस हो सकता है। इसलिये ५७९० सैनिकों ने प्रजातंत्रवादियों के हाथ आत्म-समर्पण कर दिया। अमरीकन सैनिकों ने इन अंगरेज़ों के साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार किया और इस युद्ध में भाग न लेने की प्रतिज्ञा करने पर उन्हें योरोप भी भेज दिया।

दूसरी ओर जनरल होवे वाशिंगटन को ब्रांडीवाइन स्थान पर बुरी तरह हरा चुका था। प्रजा-तंत्रवादियों की राजधानी फ़िलाडेलफ़िया तक अंगरेजों के हाथ में चली गई थी और कांग्रेस को यार्कटाउन में शरण लेनी पड़ी थी। इससे प्रजातंत्रवादियों के दिल टूट गए थे और उनपर निराशा के बादल छा गए थे। वे सोचते रहे थे कि अब प्रजा-तंत्र का अंत समीप आ गया है। अंगरेजी सेनाओं ने 'ईश्वर सम्राट् की रक्षा करे' गाते हुए फ़िलाडेलफ़िया में बड़े शान के साथ प्रवेश किया। उनकी लाल वर्दियाँ! चमकते हुए शास्त्र! सुंदर कलगियाँ! उनकी एक-सी चाल सब से एक विचित्र प्रकार का वैभव टपकता था। इसमें और ग़रीब राष्ट्रीय सेना में-जो कुछ ही पहले इसी बाज़ार से गुज़र चुकी थी, कितना अंतर था। उनके सूखेहुए मुख! उनके फटे-पुराने कपड़े! उनकी कुचली हुई आशा-लता!

बरगोइन की पराजय के समाचार से राष्ट्रीय पक्ष में फिर जीवन आ गया। गेट्स की प्रशंसा के पुल बँध गए। कांग्रेस ने उसे धन्यवाद दिया और एक मेडल भी भेजा, जिसमें उसकी मूर्ति बनी थी और बरगोइन उसे अपनी तलवार भेंट कर रहा था। अब गेट्स के प्रशंसक उसकी प्रशंसा और वाशिंगटन की बुराई करने लगे और इस बात के लिये व्यग्र दिखलाई देते थे कि गेट्स को वाशिंगटन की जगह कमांडर-इन-चीफ़ बनाया जाय। वे इस बात को भूल गए कि वाशिंगटन

और गेट्स की स्थिति में महान अंतर था, जिस स्थिति में गेट्स ने विजय प्राप्त की थी, वह वाशिंगटन की स्थिति के सामने कुछ भी नहीं थी और वहाँ राष्ट्रीय सेना को नष्ट होने से बचाना वाशिंगटन का ही काम था।

गेट्स की उक्त विजय का यह परिणाम निकला कि फ्राँस की सरकार ने संयुक्त-राज्य की सरकार के विधान को मान लिया और दोनों में एक समझौता हो गया कि यदि इंगलैंड और फ्राँस में युद्ध हो, तो अमरीका फ्राँस की मदद करेगी, जिसमें दोनों में-से कोई भी इंगलैंड से पृथक संधि नहीं करेगा और जब तब अमरीका स्वतंत्र नहीं हो जाय, दोनों मिलकर लड़ेंगे। फ्राँस का हाथ जब अमरीका की ओर बढ़ता हुआ देखा, तो ब्रिटिश पार्लियामेंट ने कर उठाने और समझौता करने की चेष्टा की। पर अब स्थिति बिलकुल ही बदल चुकी थी। अब तो कांग्रेस पूर्ण स्वतंत्रता ही प्राप्त करके संतुष्ट हो सकती थी। इसलिये उसने समझौते की बात को ठुकरा दिया। इसपर जो कमीशन इंगलैंड से संधि के लिये गया था, उसने सर्वसाधारण में अपील की, धमकी दी, डराया और घोषणा की कि जो उपनिवेश पृथक समझौता करना चाहे, तो उसकी शिकायतों पर विचार किया जायगा और विद्रोहियों को क्षमा कर दिया जायगा। परंतु यह सब व्यर्थ हुआ। कमीशन के सभी बाण खाली गए और अपना-सा मुँह लेकर उसे वापस आना पड़ा। फ्राँस के बची

में पड़ने का परिणाम यह हुआ कि ब्रिटेन ने फ्राँस से भी युद्ध की घोषणा कर दी। इसपर फ्राँस के बादशाह लुई सोलहवें ने डीस्टिंग की अध्यक्षता में एक जहाज़ी बेड़ा और कुछ सेना प्रजा-तंत्रवादियों की सहायता के लिये भेजी। इस समाचार से राष्ट्रवादी अमरीकनों में आनंद छा गया। पुराना द्वेष नष्ट हो गया और फ्राँस के गुण गाए जाने लगे। यह समाचार वाशिंगटन को तब मिले, जब कि वे अपनी सेना को लेकर फोर्ज की घाटी में पड़े हुए थे। उनकी सेना ने जब ये समाचार सुने, तो वे ख़ुशी में पागल हो उठे, गाना-बजाना हुआ, दावतें हुईं और 'जनरल वाशिंगटन चिरजीवी हो' जयध्वनि से आकाश गूँज उठा।

अब युद्ध के तीन वर्ष समाप्त हो चुके थे और प्रजा-तंत्र नष्ट होते-होते फिर शक्तिशाली बन गया था। सर विलियम होवे के प्रति इंगलैंड में इतना विरोध पैदा हो गया कि उसे सर हेनरी क्लिंटन को ब्रिटिश सेना का भार सौंप कर इंगलैंड लौट जाना पड़ा। अब न्यूयार्क, फ़िलाडेलफ़िया, हडसन और डीलावरे के प्रदेश को छोड़कर सारा देश अंगरेजों के हाथ से निकल चुका था।

इस समय फ़िलाडेलफ़िया में उन्नीस हजार पाच सौ तीस ब्रिटिश जवान सब साज वो समान के साथ मौजूद थे और इधर वाशिंगटन के पास फोर्ज की घाटी में ग्यारह हजार आठ सौ नौ आदमियों की संख्या से अधिक नहीं थे। इसके

अतिरिक्त अमरीकन सेना जिस आर्थिक कठिनाइयों में कार्य कर रही थी, वह कठनाई अंगरेजी सेना को नहीं थी। परंतु फिर भी राष्ट्रीय सेना ने ब्रिटिश सिंह के नाक में दम कर दी थी। इसका कारण इसके अतिरिक्त क्या हो सकता है कि सत्य की सदा विजय होती है। यद्यपि ब्रिटिश सिंह की पाशविक शक्ति बढ़ी हुई थी, तथापि पाशविक शक्ति से एक राष्ट्र के निर्णय का दमन कभी नहीं हुआ है। राष्ट्र का आत्मिक बल और दृढ़ निश्चय ही निर्बल सेनाओं में ब्रिटिश शक्ति को पराजित करने की शक्ति पैदा कर रहा था।

सर हेनरी क्लिटन के अध्यक्ष होते ही उसने निश्चय किया कि फ़िलाडेलफ़िया खाली कर दिया जाय और ब्रिटिश-सेना न्यूयार्क में इकट्ठी हो; क्योंकि अब फ्राँस और इंगलैंड में लड़ाई होना निश्चित हो गया था। इसलिये उनकी स्थिति फ़िलाडेलफ़िया में स्वरक्षित नहीं थी। पाँच हजार सैनिक वेस्ट इंडीज़ और तीन हज़ार फ्लोरिडा, जो कि फ्राँसीसी सरकार के कब्ज़े में था, धावा करने के लिये भेज दिए गए कुछ सैनिक जहाज़ी बेड़े द्वारा न्यूयार्क को भेज दिए गए। और क्लिंटन अपने साथ क़रीब आठ या नौ हजार सैनिकों को लेकर स्थल के रास्ते से न्यूयार्क को रवाना हुआ। वाशिंगटन ने क्लिटन का पीछा किया, पर क्लिटन और उसकी सेना सही-सलामती से न्यूयार्क में जा पहुँची।

१३ जुलाई सन् १७७८ को कांग्रेस ने वाशिंगटन को

डीस्टिंग की अध्यक्षता में कुछ फ्राँसीसी और जहाज़ी सेना तथा जहाज़ी बेड़े के आने की सूचना दी। इस बेड़े में १२ जहाज़ बड़े और छः छोटे थे और करीब चार हज़ार फ्राँसीसी सैनिक। पहले तो डीस्टिंग और वाशिंगटन ने निश्चय किया कि फ्राँसीसी बेडा सैंडीहुक में प्रवेश कर ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े पर आक्रमण करके उसपर अधिकार कर ले या उसे नष्ट कर दे। इसमें यदि सफलता हो, तो फिर न्यूयार्क पर आक्रमण करके उसे अधिकार में लाने की चेष्टा की जाय। फ्राँसीसी बेड़े को सहायता के लिये वाशिंगटन ने भी अपनी सेना लेकर हडसन नदी को पार किया और ह्वाइट प्लेन में पड़ाव डाल दिए।

इस आक्रमण से न्यूयार्क में खलबली पैदा हो गई * उस समय का एक लेखक लिखता है British seamen endured

---

* Lord Carlishle,a member of the Commission wrote to a friend, 'I enclose you our manifesto, which you will never read,' Tis a short af dying speech of the Commission,an effort from which I expect littlesuccess Everything is upon.a great scale upon this country. The revers are immence; the cliamat violemt in heat and Cold; the prospects magnificent; the thunder and lightening tremendous. The disorders uncident to the country make every Constitution tremble. We have nothng on a great scale with us, but our blunders, our mis conduct, our ruin, our losses, our disgraccs and misfartunes.

the mortification, for the first time, of seeing a British fleet blocked up and insulted in their own harbour, and the French flying triumphant without. And this was still more embittered and aggravated by beholding every-day vessels under English colours captured under very eyes by the enemy.' इधर फ्रांसीसी अफ़सर और जहाज़ी कर्मचारी भी अत्यंत उत्तेजित थे। कुछ ही दूर पर ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े पर यूनियन जैक फहराता हुआ दिखाई दे रहा था और उन्हें आशा थी कि सेंडहुक को पार करते ही वे अमरीका से ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेकेंगे। इसी समय उन्हें मालूम हुआ कि आगे पानी इतना उथला है कि उनमें-तोपों से लदे हुए जहाज़ आगे नहीं बढ़ सकते। इसलिये ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े पर आक्रमण करने का विचार छोड़ देना पड़ा।

रोहड द्वीप में भी बहुत-सी अंगरेजी सेना और रसद थी। जब सेंडहुक का आक्रमण असफल हुआ, तब यह निश्चय किया गया कि रोहड द्वीप पर आक्रमण करके न्यूपोर्ट को ही कब्ज़े में में कर लिया जाय। ज्योंहीं राष्ट्रीय सेना स्थल मार्ग से उधर पहुँची, त्योंहीं फ्राँसीसी बेड़ा भी बंदरगाह में घुस पड़ा। अमरीकन सेना ने नगर के चारों ओर घेरा डाल दिया और फ्राँसीसी बेड़े की सहायता की प्रतीक्षा करने लगे। इधर तूफ़ान ने फ्राँसीसी जहाज़ी बेड़े को तितर-बितर कर दिया

था। इसलिये उसे मरम्मत के लिये बोस्टन को रवाना होना पड़ा। अमरीकन सेना डीस्टिंग के जहाजी बेड़े के चले जाने के कारण अधिक दिन तक घेरा कायम न रख सकी। उन्हें पीछे हटना पड़ा। इस कारण अमरीकन और डीस्टिंग में बड़ा मतभेद खड़ा हो गया और डीस्टिंग को चारों ओर से बुरा-भला भी कहा जाने लगा। वाशिंगटन ने अपने भाई को एक पत्र में लिखा है-

"An unfortunate storm and some measures taken in conasequence of it by the French admiral, blasted in one moment the fairest hopes that ever were conceived; and from a moral certainty of success, rendered it a matter of rejoicing to get our own troops safe off the island. If the garrison of that place consisting of nearly six thousand men, had been captured, as there was in appearance at least a hundred to one in favour of it, it wauld have given a finishing blow to British, pretensions of sovereigty over this country" कुछ समय के लिये तो फ्रांसीसी और राष्ट्रवादियों के हृदयों में इतना अंतर हो गया था। यहाँ तक कि संधितक टूटने को आगई थी। पर फिर कांग्रेस और वाशिंगटन की चेष्टा से सब शांत गया।

सन् १७७८ के अंत में कर्नल कैंपबेल जॉर्जिया के तट-प्रदेश पर अपना जहाजी बेडा लेकर आया और सवन्नाह पर कब्ज़ा कर लिया। कुछ ही महीने बाद जनरल प्रीवोस्ट ने

क्रीयर क्रीक में प्रजा-तंत्रवादियों को पराजित किया। ओगस्टा का नगर भी उनके हाथ में आ गया और इस तरह जॉर्जिया प्रदेश में फिर अंगरेज़ों का झंडा फहराने लगा।

इधर स्पेन ने भी प्रजा-तंत्र के पक्ष में घोषणा कर दी और उसके जहाज़ महासागर में अंगरेज़ों के जहाजों को हानि पहुँचाने लगे।

अब क्लिंटन ने सोचा कि दक्षिण में प्रजा-तंत्रवादियों का ज़ोर कम है और टोरी अधिक हैं। इसलिये पहले उसी को अच्छी तरह कब्ज़े में क्यों न लाया जाय? यह विचार कर उसने सन् १७८० के प्रारंभ में ही दक्षिणीय करोलीना को कूंच कर दिया। ११ एप्रिल को वह चार्लसटन पहुँचा और ५००० सैनिकों को लेकर नगर के चारों तरफ़ घेरा डाल दिया। इस समय यहाँ लिंकन के आधीन २५०० प्रजा-तंत्रवादी सैनिक थे। उसने जी-तोड़कर सामना किया और ४२ दिन तक नगर की रक्षा करता रहा। परंतु उसकी रसद समाप्त हो चुकी थी, उसके सैनिकों के हृदय टूट गए थे और नगर के लोग बार-बार उसके पास पहुँच रहे थे कि आत्म-समर्पण करके नगर की रक्षा की जाय। लिंकन ने अंगरेज़ों के यह स्वीकार कर लेने पर कि उसे और उसके सैनिकों को लड़ाई के क़ैदी न समझा जायगा और उन्हें राज्य-भक्ति की शपथ लेने के लिये विवश न किया जायगा, आत्म-समर्पण कर दिया। अंगरेज अपने वादे तोड़ने में सिद्धहस्त तो हैं हीं, जब

प्रजा-तंत्रवादी सैनिक शस्त्र डाल चुके, तब उन्हें इस बात के लिये विवश किया गया कि वे राजभक्ति की शपथ लें और जिस प्रजा-तंत्र को वे अपने प्राणों से भी प्यारा समझते थे, उसके विरुद्ध लड़ें। उसने नगर के भिन्न-भिन्न दलों को भी इस बात के लिये विवश किया कि वे सम्राट् का पक्ष लेकर प्रजा-तंत्र के विरुद्ध तलवार उठावें और अंगरेज़ी सेना में भर्ती हों। * उसने घोषणा की कि जो इसकी अवज्ञा करेगा, उसे प्राणदंड दिया जायगा। इस डर से बहुत-से लोगों ने भय से उसकी बात मान ली।

वाशिंगटन अधिक सहायता भेजने में असमर्थ था। परंतु फिर भी उसने जनरल गेट्स को ६००० सैनिक लेकर दक्षिण की ओर भेजा। इनमें केवल १५०० जवान सैनिक-शिक्षा पाए हुए थे, बाकी सभी रंगरूट थे और उनके पास खाने के लिये कच्चे फलों अतिरिक्त कोई रसद भी नहीं थी। परंतु सराटोगा की विजय के कारण गेट्स की योग्यता में सैनिकों को पूरा

---

* Clinton, true to the traditions of his caste, shamefully broke his promises. He issued—"a proclamation offering pardon to all, who should return to the King's allegience... He then compelled all parties to espouse the royal cause and arm themselves for the purpose of driving their rebel oppressors, and all the miseries of war, far from the province."

—The making of a repablic pege 72.

विश्वास था और कांग्रेस को भी आशा थी कि वह दुश्मनों से दक्षिण की रक्षा कर सकेगा। कार्नवालिस २००० अंगरेज़ सैनिकों को लेकर उसका मुकाबिला करने आया; परंतु गेट्स के नए सिपाही के लिये लड़ना तो दूर रहा, वे पहली ही गोलियों की बौछार से भाग खड़े हुए और ब्रिटिश सेना ने निर्दयता से ३० मील तक उनका पीछा किया। ९०० प्रजा-तंत्र-वादी सैनिक मारे गए, १०० क़ैदी हुए और बची हुई सब गोली-बारूद भी विजयी सेना के ही हाथ लगी। कांग्रेस, के जो सदस्य गेट्स का ही समर्थन करते थे और उसे वाशिंगटन की जगह कमांडर-इन-चीफ़ बनाना चाहते थे, वे ही उसे अपने पद से हटाए जाने के लिये व्याकुल भी हो उठे। जनरल ग्रीन ने उससे चार्ज ले लिया और गेट्स सदा के लिये युद्ध जीवन से पृथक होकर उत्तरीय प्रदेश को रवाना हो गया।

जानसन ने लिखा है-"उसकी लंबी और अप्रिय यात्रा, इस बात को प्रदर्शन करती थी कि, उसका यश और प्रतिष्ठा भंग हो गई। एक भी नेत्र उसके स्वागत के लिये न चमका और एक भी आदरपूर्ण शब्द उसके स्वागत में सुनाई न पड़े। हर जगह उसके प्रति क्रोध अथवा उदासीनता, विरोध अथवा अनादरपूर्ण शांति दिखलाई पड़ती थी। सब उसे केमडन का भगोडा कहते थे, कोई भी उसे सराटोगा का विजयी नहीं समझता था।"

(१२)

महायज्ञ की अंतिम आहुतियाँ

सन् १७८१ के प्रारंभ में ही जनरल ग्रीन दक्षिणी करोलीना में लार्ड राउडन के आधीनस्थ केमडन में पड़ी हुई अँगरेजी सेना से मुठभेड़ लेने के लिये चल दिया और केमडन से दो मील पर होवकिर्क की पहाड़ी पर अड्डा डाल दिया और वहाँ केमडन से लार्ड राउडन को निकालने की आशा करने लगा। परंतु शीघ्र ही लार्ड राउडन ने अमरीकन सैनिकों पर धावा बोल दिया और जनरल ग्रीन को पीछे हटना पड़ा। लार्ड राउडन में ग्रीन का पीछा करने का साहस नहीं था। वह केमडन लौट गया और वहाँ अपनी बची हुई सेना के आने का मार्ग देखने लगा।

उधर ग्रीन के भेजे हुए दो जनरल-ली और मॉरियन ने फोर्ट वाटसन पर अधिकार कर लिया था। अब ग्रीन ने केमडन के पास और ली और मॉरियन ने सांती की पहाड़ियों पर राउडन की इस आनेवाली सहायता को रोकने के लिये मोर्चा डाल दिया। परंतु वे सफल न हुए। राउडन की बची हुई सेना भी उससे आ मिली। अब निस्संदेह लार्ड राउडन की शक्ति बहुत बढ़ गई और जनरल ग्रीन को अपने थके हुए सैनिकों से

उसपर विजय प्राप्त करने की आशा बहुत कम थी। वर्जीनियाँ से सहायता के वादे आते रहे। परंतु आशा सदैव ही निराशा में परिवर्तित होती रही । अंत में उसने वापिस हटने का ही निश्चय किया। उसने जनरल डेवी को पत्र में लिखा- "हमें अपना कार्यक्रम इसी आधार पर बनाना चाहिए, कि शत्रु वही करेगा,जो उसे करना चाहिए। लार्ड राउडन हमें पहाड़ों में पीछे खदेड़ देगा, परंतु हम एक-एक इंच भूमि के लिये अपनी अंतिम शक्ति तक लड़ेंगे।" उसने डेवी को लिखा दिया कि वह कांग्रेस के सदस्यों को इस निराशा-जनक परिस्थिति कीसूचना दे दे।

प्रातः काल होते ही अमरीकन तंबुओं में निराशा की जगह आशा की ज्योति चमकने लगी। उसने जनरल डेवी को लिखा-"राउडन केमडन को खाली करने की तैयारियाँ कर रहा है, वह शत्रुओं के मोर्चों की कुंजी थी, अब या तो सब जगह हमारी ही विजय होगी या वे खाली कर दिए जायँगे। अब सब ठीक है। अपने पत्र जला डालो। मैं तुरंत ही कौंगारी पर धावा बोल दूंगा।

कार्नवालिस वर्जीनियाँ में अमरीकन सैनिकों से मुठभेड़ करने केलिये चल दिया। इसलिये अब राउडन को कोई सहायता आने की आशा नहीं रही थी। उसके पास की रसद भी ख़तम हो चुकी थी और नई रसद आने के सभी मार्ग अमरीकनों ने रोक लिए थे। इसलिये राउडन को केमडन खाली कर देने के अतिरिक्त दूसरा

चारा ही न था। उसने चलते हुए केमडन में आग लगा दी, बहुत-सा सामान, सरकारी मकानात और जेलखाना जल कर भस्म हो गया।

अब अमरीकन सेना को धड़ाधड़ सफलता मिलने लगी, मोटे, ग्रानकी आदि किले जीतने और उनकी रसद वगैरह अपने कब्ज़े में करने के बाद ग्रीन ने राजभक्तों के महान गढ़ 'नाइन्टी-सिक्स' नामक किले को भी घेर लिया और एक महीने के घेरे के बाद वह उसके कब्ज़े में आ गया। जब वह अगस्टा नामक किले को लेने की चेष्टा कर रहा था, तभी उसे पता लगा कि राउडन नई सहायता लेकर आगे बढ़ा चला आ रहा है।

ग्रीन ने पीछे लौटकर सलूदा में डेरा डाल दिया और लार्ड राउडन ने 'नाइन्टी-सिक्स' किले पर पुनः कब्ज़ा कर लिया। अब की लार्ड राउडन ने अपने दो हज़ार सैनिकों को लेकर ग्रीन का पीछा किया; परंतु रसद निबट जाने के कारण शीघ्र ही उसे पुनः वापिस हट जाना पड़ा और फिर ऑरेंज-बर्ग में डेरा डाल दिया। अंगरेज़ कर्नल कर्जर 'नाइन्टी-सिक्स' में बची हुई सेना को लेकर राउडन से मिल जाना चाहता था, जिससे अंगरेज़ों की स्थिति फिर अत्यंत अच्छी हो जाती और संभव है वे पुनः इस हिस्से से अमरीकन सेनाओं को निकाल बाहर करने में भी समर्थ होते। ग्रीन ने अपनी सारी शक्तियों से इस संगठन को रोकने का निश्चय कर लिया; परंतु १४ जुलाई सन् १७८१ को

कर्जर और राउडन की सेनाएँ मिल गईं। अब चार्ल्सटन और उस तरफ़ के हिस्से में अंगरेजी शक्ति बहुत कम रह गई थी। इसलिये अमरीकन जनरल ने शीघ्र ही उस ओर कब्ज़ा करने के लिये धावा बोल दिया। हैंपटन यकायक चार्ल्सटन में जा धमका और उसपर कब्ज़ा कर लिया। पर अभी उसे समटर से मिलकर दूसरे ही दिन सुबह माक-कार्नर में पड़ी हुई अंगरेजी सेना पर धावा बोलना था; परंतु यह अंगरेजी सैनिक रात को ही चुपचाप वहाँ से चल दिए। अमरीकनों को इसका जब पता चला, जब कि गिर्जें से-जो कि अंग्रेजी सेना का भंडार बन गया था, आग की चिनगारियाँ निकलती हुई दिखलाई दीं। अंगरेज़ी सैनिक अपनी बहुत-सी रसद अपने साथ ले जाने में असमर्थ थे। इसलिये उन्होंने उसमें आग लगवा दी थी। अमरीकन सैनिक उसका पीछा करने के लिये दौड़ पड़े और अट्ठारह मील दूरी जाने पर सेना के पिछले भाग तक जा पहुँचे। यह सैनिक अभी आयर्लंड से नए ही आए थे और युद्ध से अनभिज्ञ थे, इसलिये उन्होंने बिना एक गोली छोड़े हीं आत्म-समर्पण कर दिया। ली इन सैनिकों को घेरे पड़ा रहा और आर्य-स्ट्रॉंग बहुत-से सैनिक लेकर अँगरेजी सेना के मुख्य भाग का पीछा करने के लिये आगे बढ़ा। अंगरेज़ कर्नल कोट्स क्वींबी क्रीव नदी के उस पार पहुँच कर अपने बाकी बचे हुए सैनिकों की राह देख रहा था, पुल के तख्तों के बोल्ट खोल दिए गए थे और पीछे रहे हुए सनिकों के आते ही पुल नष्ट

भी कर दिया जानेवाला था, ताकि पीछे से उनका कोई पीछा ही न कर सके। अँगरेज सैनिक इधर-उधर घूम रहे थे और एक भी गोली छूटने की आवाज़ न होने के कारण उन्हें यह विचार भी नहीं आया कि दुश्मन कहीं पास ही हो सकते हैं।

एकाएक आर्यस्ट्रॉग के सैनिकों को सामने ही देखकर अंगरेज सैनिक घबड़ा गए। कर्नल कोट्स ने सनिकों को लाईन में आने और आगे बढ़कर पुल नष्ट करने का हुक्म दे दिया, पर आर्यस्ट्रॉग के सैनिक पुल पार करने में समर्थ हो गए। उन्होंने तोप पर कब्ज़ा कर लिया। इसपर अँगरेज सैनिकों ने गोलियों की एक बाढ़ छोड़ी और फिर पुल पर से होकर भाग खड़े हुए। अमरीकन सैनिक जब पुल पर से आए थे, तभी पुल के बहुत-से तरंते टूट गए थे। कुछ अंगरेज-सैनिकों के घोड़े तो पुल के बीच के टूटे हुए हिस्से को फलाँग गए, पर इससे यह और भी बड़ा हो गया और बाकी बचे हुए अंगरेज घुड़सवारों के घोड़े इसे पार करने में असमर्थ रहे। इधर जब अमरीकन और बची हुई अंगरेजी सेना में घमासान मची हुई थी, तभी ली अपने सैनिकों सहित पुल तक आ पहुँचा और पुल के तरंते ठीक करने की चेष्टा करने लगा। अब ली का उस पार जाना नामुमकिन था। कर्नल कोट्स के सैनिकों ने ली के सैनिकों पर गोलियों की बाढ़ दागना शुरू किया, जिससे ली को पीछे हटना पड़ा। इधर कर्नल कोट्स ने एक ऊँचे टीले पर मोर्चेबंदी कर ली

और ली तथा अमरीकनों के आक्रमण से अपनी रक्षा करने के लिये तैयारी करने लगा। पुल के नष्ट हो जाने के कारण उस पार से समटर के आधीन अमरीकन सैनिकों को ली तक आने में शाम हो गई, क्योंकि उन्हें बहुत घूमकर आना पड़ रहा था। शाम को चार बजे अंगरेज और अमरीकन सैनिकों का मुकाबिला हुआ। टीले पर कब्ज़ा करने में कितने ही अमरीकन सैनिक मारे गए। अंगरेजों को गोला-बारूद की कमी होने के कारण मोर्चे से हटना पड़ा और उन्होंने पुल से तीन मील दूर जाकर डेरा डाला। समटर के पास अँगरेजी सेना के चारों ओर घेरा डालने के लिये पर्याप्त शक्ति थी। अतः बहुत-सी अमरीकन सेना हेडक्वार्टर्स को चल दी थी। इधर पीछे से राउडन के भी आक्रमण की उसे संभावना थी। इसलिये समटर यह विचार छोड़कर ग्रीन से जा मिला।

इन सब झगड़ों का परिणाम यह हुआ कि लार्ड राउडन उकताकर योरोप लौट गया और ऑरेंज-बर्ग के बचे हुए अँगरेजी सैनिक वहाँ से हटकर कोंगरी नदी के दक्षिणीय तट पर डेरा डालने को विवश हुए। समटर के अमरीकन सैनिक और इन अँगरेज़ सैनिकों के बीच में केवल दो ही नदियाँ थी, जो वहाँ आकर मिलती थी और एक-दूसरे पर गोला-बारी की जा सकती थी। परंतु पारस्परिक समझौते से कुछ समय के लिये लड़ाई स्थगित कर दीगई थी।

जॉर्जिया और दोनों करोलीना का बहुत-सा भाग

अमरीकनों के अधिकार में पुनः आ गया था और ग्रीन के मतानुसार यदि उसे उत्तरीय प्रदेशों से थोड़ी और सहायता मिल जाती, तो उनकी विजय इस तरफ़ पूरी हो जाती।

× × ×

इधर वाशिंगटन न्यूयार्क पर चढ़ाई करने का प्रबंध कर रहा था कि फ्रेंच जनरल लेफ़ायटे ने पोर्ट्स माउथ बंदरगाह में कार्नवालिस की सेना के एक बड़े भाग के उतरने की सूचना दी। उसने वाशिंगटन को लिखा कि तीस जहाज़ सैनिकों से भरे हुए, जिनमें अधिकांश लाल कोट वाले है, हेंपटन रोड्स में हैं, उसके मत से यह न्यूयार्क को भेजे जानेवाले हैं; साथ ही उसने यह भी लिखा कि यदि फ्राँसीसी जंगी बेड़ा इस समय कहीं आ पहुँचे, तो उसकी राय में अंगरेजी सेना उनकी मुट्ठी में आ जाय। इस सूचना के मिलते ही वाशिंगटन ने न्यूयार्क पर आक्रमण करने के विचार को छोड़ दिया। इसी समय प्रायः तीस जहाजों में भर कर फ्रेंच सेना कौंट-डी-ग्रेसे के कमाँड में आ-पहुँची। वाशिंगटन ने आज्ञा दी की जितने भी अमरीकन सैनिक भेजना संभव हो, वर्जीनिया भेज दिए जाँय, जो कौंट-डी-ग्रेसे से मिलकर दक्षिणीय रियासतों में अमरीकन सेनाओं की सहायता को जा पहुँचे।

कार्यक्रम के इस परवर्तन को अत्यंत गुप्त रक्खा गया और ऊपर-से दिखाने के लिये न्ययार्क पर ही धावा करने की

जानने की इच्छा रहती थी कि देखें अब क्या होता है ? एक लेखक-जो उस सेना के साथ ही था, उस समय के भावों को वर्णन करता हुआ लिखता है—

Our Situetion reminds me of some theartrical exhibition where the interest and expectations of the spectators are continually increasing, and where curiosity is braught to the highest point. Our destination has been for some time matter of perplesing daubt and uncertainty; bets have run high on one side that we are to occupy the Ground marked out on the Jersey shore, to aid in the seize of the Newyork; and on the other, that we are stealing a march on the enemy and are actually destined to verginia in persuct of the army under Cornvallis ? "

जब वाशिंगटन डीलवारे पहुँच गया, तब सर हेनरी क्लिटन को वाशिंगटन के इरादे का पूरा पता लगा। उसने अर्नाल्ड को-जो अब दुश्मनों से जा मिला था, कनेक्टीकट पर धावा करने और इस तरह वाशिंगटन का ध्यान दूसरी ओर आकर्षित करने के लिये भेजा। इस देशद्रोही ने अपनी ही जन्मभूमि में रक्त बहाने के लिये तलवार उठाई और न्यू-लंदन में रक्तपात मचा दिया। कर्नल लेडयार्ड ने अपने आदमियों को हथियार डाल देने के लिये हुक्म दे दिया। पर तब भी उन निहत्थे सैनिकों का कत्ले-आम जारी ही रहा।

स्वयं अर्नाल्ड की तलवार ने लेडमार्ड के पेट में घुस कर उसका काम तमाम कर दिया। सत्तर निहत्थे अमरीकन सैनिक मारे गए और पैंतीस घायल हुए। कुछ अमरीकन जहाज़ बच निकले और बाकी जला दिए गए, सार्वजनिक दूकानों और मकानों में आग लगा दी गई और सारा नगर अग्नि की चिनगारियों में ढँक गया। अर्नाल्ड ने पीछे नगर को धाँय-धाँय कर जलते हुए छोड़ा, परंतु गोलों की आवाज़ से अब बहुत-से अमरीकन लड़ाके आस-पास से इकट्ठा हो गए थे। उन्होंने अर्नाल्ड का पीछा किया। उसके कितने ही आदमी मारे गए। पर वह किसी तरह निकल भागा।

वाशिंगटन अब भी अपने ध्येय की ओर बढ़ता ही चला जा रहा था। वह ३० अगस्त, १७८१ को फ़िलाडेलफ़िया में पहुँच गया। यहाँ लोगों को उसके इस आकस्मिक आगमन से अत्यंत आश्चर्य हुआ और उन्होंने बड़े उत्साह से उसका स्वागत किया। जब वाशिंगटन फ़िलाडेलफ़िया से चला, तब उसके साथ के सैनिक, नौकर और सामान की लेनडोरी दो मील लंबी लग गई थी। सैनिक उत्साह से इस ज़ोर के नारे लगाते थे कि आसमान गूंज उठता था। महिलाएँ खिड़कियों से सैनिकों के प्रदर्शन को देख रही थीं और इस प्रकार मृदुल हास्य और फूलों की वर्षा से सैनिकों में उत्साह और भी बढ़ रहा था।

* Thacker's military journal, p. 323.

२१ और २४ अगस्त को लिखी हुई लेफ़ायटे की चिट्ठियाँ उसे यहाँ मिलीं, जिसमें उसने लिखा था कि कार्नवालिस की सेना-जिनके लिये उसने पहले न्यूयार्क जाने की संभावना लिखी थी, वास्तव में यॉर्क-टाउन को जाने को हैं, जहाँ कार्नवालिस स्थायी मोर्चा लगाना चाहता है। यॉर्कटाउन यार्क नदी के दक्षिण तट पर बसा था। और यद्यपि नदी एक मील से अधिक चौड़ी नहीं थी, तब भी गहरी होने के कारण बड़े-बड़े जंगी जहाज वहाँ तक आ सकते थे।

कार्न-वालिस अब तक इस विचार में बैठा था कि उसे केवल लेफ़ायटे के सैनिकों का सामना करना है, जिसे वह तुच्छ और नवयुवक समझता था। उसे डी-ग्रे से और वाशिंगटन के आने का तो पता भी नहीं था। लेफ़ायटे तेज़ी से प्रबंध में लगा हुआ था कि डी-ग्रे से के आने पर लार्ड कार्न-वालिस पीछे न हट सके। उसने तीनों तरफ़ अपने सैनिकों का जाल बना दिया था और डी-ग्रे से के आते ही घेरा पूरा हो जाने को था। इधर कार्नवालिस अब तक बिलकुल ही बेख़बर था औरउलटा न्यूयार्क में होनेवाले आक्रमण में अंगरेजों की सहायता करने के लिये अपनी कुछ टुकड़ियाँ भेजने का विचार कर रहा था।

इधर कार्नवालिस और डी-ग्रे से तेज़ी से बढ़े आ रहे थे, वाशिंगटन ने डी-ग्रे से को भी सूचित कर दिया था कि दोनों सेनाओं को-लेफ़ायटे और साइमन के सैनिकों, को इस तरह

मिल जाता है कि कार्नवालिस के सैनिक यॉर्क-नदी में ही घिर जाँय और उन्हें रसद मिलने का कोई मार्ग भी बाकी न रहे ।

२८ अगस्त को जब डी-ग्रेसे के जंगी बेड़े ने डीलवारे की अंतरीप में प्रवेश किया, तब कार्नवालिस की आँखें खुलीं । यार्क नदी के मुहाने पर फ्राँसीसी जहाज़ों ने बेड़ा डाल दिया था । मार्क्विस डी सेंट साइमन के तीन हजार तीन सौ सैनिक लेफ़ायटे के सैनिकों के साथ मिलकर पूर्व निश्चयानुसार व्यूह बनाने के लिये चल पड़े । जैसा कि वाशिंगटन ने सोचा था, इस स्थिति को देखकर कार्नवालिस करोलीना प्रदेश की ओर बढ़ा, परंतु मौका निकल गया था । फ्राँसीसी जहाज़ों ने यॉर्क नदी को घेर लिया था । उसने सोचा कि विलियम-बर्ग पर धावा बोलकर निकल जाय; परंतु उस ओर लेफ़ायटे अपने सैनिकों के साथ बड़ी ही मुस्तैदी से जमा हुआ था । जब कार्नवालिस को मालूम हुआ कि अब वह चारों ओर से पूरी तरह घिर चुका है, तो उसने मोर्चाबंदी करना शुरू कर दिया और साथ ही सर हेनरी क्लिंटन को सहायता के लिये आवश्यक संवाद-पर-संवाद भेजने लगा ।

कौंट-डी-ग्रेसे को अभी यॉर्क नदी में लंगर डाले हुए कुछ ही दिन हुए थे कि उसे सूचना मिली कि ब्रिटिश जलयानाध्यक्ष ग्रेव्स कार्नवालिस की सहायता के लिये २० जंगी जहाज़ लेकर आ रहा है, वह रोहड द्वीप से आनेवाले कौंट-

डी-बेरस के बेड़े को डी-ग्रसे तक पहुँचने से पहले ही नष्ट कर देना चाहता था। बेरस की रक्षा के लिये २५ जंगी जहाज़ लेकर डी-ग्रसे अँगरेजी बेड़े पर टूट पड़ा। दोनों तरफ़ के कई जहाज़ नष्ट-भ्रष्ट हो गए। यहाँ डी-बेरस का बेड़ा भी फ्राँसीसी बेड़े से आ मिला और दोनों फ्राँसीसी बेड़े फिर अँगरेज़ी जहाज़-जो उनके हाथ आ गए थे, लेकर यॉर्क नदी के मुहाने पर जा डटे। ग्रेव्ज ने जब देखा कि फ्राँसीसियों की शक्ति बहुत अधिक है, तो वह न्यूयार्क को लौट गया।

अब कार्नवालिस अपनी रक्षा के लिये तेज़ी से मोर्चेबंदी कर रहा था और वाशिंगटन इस मोर्चेबंदी को पूरा होने से पहले ही उसपर आक्रमण कर देना चाहता था। उसने फ्राँसीसी सेना-जो पीछे आ रही थी, जल्दी लाने के लिये दूत भेजते हुए लिखा—

'Every day we loose, is Comparatively an age; as soon as it is in our power with safety, we ought to take our position war the enemy. Hurry on then, my dear, sir, with your troops on the wings of speed. The want of our men and stores is now all that retards our immidiate operations, Lord Cornwallis is improving every moment to take best advantage; and every day that is given him to make his preparation may cost us many lives to encounter them.'

२२ सितंबर, १७८१ को एकाएक सूचना मिली कि ब्रिटिश जलयानाध्यक्ष डिग्बी छः जंगी जहाज़ों और बहुत-से सैनिकों-सहित न्यूयार्क में आ-पहुँचा है और अब फ्राँसीसी बेड़े पर आक्रमण की तैयारी की जायगी। इस ख़बर के मिलते ही स्थिति बिलकुल ही बदलती हुई दिखलाई दी। इस नई सहायता के आ जाने पर अंगरेज़ों की भी शक्ति फ्राँसीसियों के बराबर हो जायगी और संभव है फ्राँसीसी-बेड़ा दोनों के बीच में पड़कर भयावह स्थिति में आ जाय। डी-ग्रेसे ने पहले तो यॉर्क नदी के मुहाने पर दो-तीन जहाज़ों को छोड़कर सब जहाज़ वहाँ से हटा लेने का निश्चय कर लिया। पर इससे सारा किया-कराया मिट्टी में मिल जाता था और कार्नवालिस सुरक्षित स्थिति में जा पहुँचता था। अतः वाशिंगटन और लेफ़ायटे के बहुत ज़ोर देने पर डी-ग्रेसे ने निश्चय किया कि अधिकांश जंगी बेड़ा यॉर्क नदी में ही रहे, चार-पाँच जहाज़ जेम्स नदी में इधर-उधर घूमते रहें और पॉइंट कंफ़र्ट पर मोर्चेबंदी की जाय।

२५ सितंबर तक सब फ्राँसीसी और अमरीकन फ़ौजें आ पहुँची और कार्नवालिस पर एक साथ हल्ला बोल देने की तैयारियाँ होने लगीं। कार्नवालिस ने यॉर्कटाउन में ख़ूब मोर्चेबंदी कर ली थी और नदी की तरफ़ तोपें भी लगा दी गई थीं। ग्लासेस्टर के नाके पर भी दीवारें खड़ी कर दी गई थी और उनपर भी तोपें लगा दी गई थी। इस तरह

फ्रांसीसी बेड़े से आक्रमण होते ही ये तोपें दुश्मनों पर आग उगलने लगतीं। उधर बीवर-डम-क्रीम के दोनों ओर राष्ट्रवादी डटे हुए थे, दक्षिण की ओर अमरीकनों ने नाका बाँध रक्खा था और उत्तरीय भाग में फ्रांसीसी थे।

इस समय कार्नवालिस को सर हेनरी क्लिंटन ने लिखा कि वह उसकी सहायता के लिये जलयानाध्यक्ष डिग्बी के आधीन तेईस जहाज़ों का बेड़ा और पाँच हजार सैनिक भेज रहा है और वे ५ अक्टोबर तक उसके पास जा पहुँचेंगे। कार्नवालिस ने क्लिंटन को लिखा कि वह चाहता है कि दुश्मन आगे बढ़ें, जिससे वह अपने गोलों से उन्हें भून दे और यदि यह सहायता शीघ्र ही उसके पास आ गई, तो यार्क और ग्लासेस्टर शीघ्र ही पूरी तरह अँगरेजों के हाथ में आ जायँगे।

इस समय फ्रांसीसियों और अमरीकनों की सम्मिलित सेना में बारह हजार सैनिक थे। २८ सितंबर को यह फ़ौजें विलियम्सबर्ग से-जो यॉर्कटाउन से बारह मील पर था, चल दीं और यॉर्कटाउन से दो मील पर आकर डेरा डाल दिया और १ अक्टूबर को अर्ध चंद्राकार में फैल गईं। उधर डी-ग्र से जंगी बेड़े के मुख्य भाग को लेकर लीन हेविन की खाड़ी में आ डटा-ताकि जल-मार्ग से कार्नवालिस को कोई सहायता ही न पहुँच सके। रात को अमरीकनों ने दो दीवारें आड़ के लिये बना लीं। सुबह होते ही अंगरेजों

को पता चला, तो उन्होंने उसपर भयंकर गोला-बारी की।

घिरी हुई अंगरेजी सेना में शीघ्र ही घास और चारे की कमी पड़ने लगी और इसलिये बहुत-से घोड़े मार कर नदी में बहा दिए गए। दो अक्टूबर को टर्लटन और डूंडा कुछ अगरेज सैनिकों के लिये पास के प्रदेशों में अन्न और घास इकट्ठा करने के लिये गए और जब वे अन्न की लदी हुई गाड़ियाँ लेकर लौट रहे थे कि फ्रांसीसी घुड़सवार उनपर टूटे पड़े।

× × ×

इधर जब ये घटनाएँ हो रही थीं, तब उधर दक्षिण में जनरल ग्रोन एक नई विजय की ओर बढ़ रहा था। जुलाई और अगस्त के कुछ सप्ताहों से ग्रीन सांती की पहाड़ियों पर डेरा डाले पड़ा था और सहायता आने की राह देख रहा था, परंतु अब जो सहायता मिली भी, वह अत्यंत निराशा-जनक थी। इसमें केवल सात सौ नए सैनिक मिले, जिनमें अधिकांश नए आदमी थे। इसपर भी वह निराश नहीं हुआ, अंगरेजों को बची हुई जगहों से निकालने का प्रयत्न करने लगा।

उसने ब्रिटिश कर्नल स्टुअर्ट पर, जो सोलह मील पर डेरा डाले पड़ा था, आक्रमण करने का निश्चय किया। परंतु बीच में वर्षा के कारण बहुत-सी ज़मीन पानी से भर गई थी और उसे पार करना असंभव था। इसलिये ब्रिटिश सेनाओं तक पहुँचने के लिये ग्रोन को ७० मील की यात्रा करनी पड़ी।

अंत में ईंटो के झरने के समीप अंगरेजों और अमरीकन की मुठभेड़ हो गई, जिस में अंगरेज़ घुड़-सवारों में भगदड़ मच गई, पृथ्वी घायल और मरे हुए मनुष्यों से पट गई, बहुत-से घोड़े घायल होकर मृत्यु के पंजे से अंतिम बार झगड़ रहे थे और बहुत-से बिना सवारों के इधर-से-उधर हिन-हिनाते फिरते थे। जब कि हैंपटन अपनी अंगरेज़ घुड़सवार टुकड़ी को पुनः इकट्ठा करने की चेष्टा कर रहा था, तब किर्क वुड ने फिर अपने कुछ राष्ट्रीय सैनिकों को लेकर उस पर धावा बोल दिया।

अंगरेज भाग निकले। अमरीकनों को अब अपनी विजय में संदेह न रहा। अमरीकन सैनिक अंगरेजों के छोड़े हुए तंबुओं में से सामान को लूटने, वहाँ रक्खे हुए भोजन से अपने पेट की ज्वाला शांत करने और शराब के प्याले ढालने में लग गए। बहुत-से सैनिकों ने इतनी शराब पी ली कि उन्हें होश तक न रहा और सैनिकों में व्यवस्था और आज्ञापालन सब काफूर हो गया। इधर अंरेज़ सैनिक फिर एक मकान में इकट्ठा होने लगे और उन्होंने मकान पर की प्रत्येक खिड़की में-से अमरीकनों पर आग उगलना प्रारंभ कर दिया। अमरीकनों ने चार तोपों से मकान कब्ज़ा करने की चेष्टा की। पर वे सफल न हुए और स्टुअर्ट की सेना के बाएँ भाग के फिर आ जाने के कारण ग्रीन को पीछे हटना पड़ा।

स्टुअर्ट और उसकी सेना हिम्मत हार चुकी थी। इसलिये रात में वे चुपचाप तंबु खाली करके पीछे चल दिए और २५ मील दूरी पर जाकर अड्डा लगाया। लड़ाई में करीब ७०० अँगरेज और पाँच सौ अमरीकन सैनिक काम आए अमरीकन कर्नल कैंपबेल भी मारा गया। मरते समय उसने कहा–मैं संतोष के साथ मर रहा हूँ।

ग्रीन ने चौदह मील तक स्टुअर्ट का पीछा किया। स्टुअर्ट बराबर पीछे ही हटता गया, यहाँ तक कि मौंकस-कार्नर पर जाकर उसने अड्डा जमा लिया। ग्रीन यहाँ से उसे निकालने में अपने को पर्यात शक्तिशाली नहीं समझता था। इसलिये फिर साँती की पहाड़ियों में लौट आया। इस तरह अमरीकनों की विजय ही रही।

× × ×

इधर यॉर्कटाउन के मोर्चे पर जनरल लिंकन की अध्यक्षता में अमरीकन रात–हो–रात में अंगरेजों के मोर्चे के सामने ही आड़ के लिये दीवारें खड़ी करने में लग गए। रोशनी होते ही अंगरेजों को इसका पता चला। यह पता चलते ही उन्होंने बड़े ज़ोर से गोला-बारी की। परंतु दीवार की आड़ में काम होता रहा। ६ अक्टूबर की रात तक अँगरेजों के मुक़ाबिले में ही अमरीकनों की मोर्चे–बंदी भी पूरी हो गई।

अब फ्ऱांसीसो और अमरीकन तोपों से गोला-बारी

Thacker's military alJourn

करना शुरु किया गया। उधर अँगरेज भी तैयार थे बात-की-बात में उनकी तोपें भी धाँय-धाँय कर आग उगलने लगीं। एक लेखक-जो खाइयों में था-लिखता है रात और दिन बारी-बारी से खाइयों में रहने के कारण :मुझे इन महान और रौद्र दृश्यों के देखने का पूरा अवसर मिला है। घिरे हुए और घेरा डालनेवाले-दोनों के गोले एक-दूसरे के समीप से लगातार गुज़रते हैं। दिन में वे एक काली गेंद की तरह मालूम होते हैं, पर रात में एक पूंछ दार अग्निमय और अति सुंदर चमकदार चीज़ के समान जान पड़ते थे। यह बड़ी शान से पहले आकाश की ओर चढ़ते और धीरे-धीरे जहाँ उसे अपना नाशकारी कार्य करना था, उतरते हुए दिखाई देते थे। जब एक गोला गिरता तब वह 'चारों तरफ़ घूमने लगता है। ज़मीन की मिट्टी एक अच्छे ख़ासे टुकड़े में उखाड़ देता है और फिर कर चारों तरफ़ भयंकर त्राहि-त्राहि पैदा कर देता है। हमारे कुछ गोले शहर में पहुँच कर नदी में गिरते हुए दिखाई देते हैं और फटने पर समुद्र के किसी भयंकर जानवर की तरह बहुत-सा पानी ऊपर उछाल देते हैं।

गोला-बारी से अँगरेज़ी सेना को बहुत हानि पहुँची। उत्तर पश्चिमीय फ़्राँसीसी तोपों से छूटे हुए गोले ब्रिटिश जहाज़ों पर गिरने लगे, जिससे चार जहाज़ों में आग लग गई। यह मस्तूल तक पहुँच गई, भयंकर अग्निकांड क

प्रकाश, तोपों की गड़गड़ाहट, गोलों का फटना, जहाज़ों की बारूद का धड़ाका आदि रात के अंधकार में महानता और बीभत्स्यपूर्ण मिश्रित दृश्य मालूम होते थे।

११ अक्टूबर को एक और मोर्चा अंगरेजों से तीन सौ क़दम की दूरी पर ही बनाया गया। अब तो ब्रिटिश सैनिकों ने बिजली की तरह तड़पकर अपनी तोपों से काम लेना शुरू किया और तीन दिन तक वे अपनी शक्तिभर अमरीकनों पर गोला-बारी करते रहे, अमरीकन इससे और भी चिढ़ गए और उन्होंने ग्लासेस्टर और यार्कटाउन के बीच के नाकों को अपने कब्ज़े में कर लिया। अमरीकन और अंगरेज़ सैनिकों में जब यह मार-काट हो रही थी, वाशिंगटन भी अपने अफ़सरों सहित खुली जगह में खड़ा था। उसके एक एड-डी-कैंप ने स्थान की अरक्षित स्थिति को बतलाते हुए भय प्रगट किया। इसपर वाशिंगटन ने कहा 'यदि तुम्हारा यह विचार है, तो तुम किसी सुरक्षित स्थान में जा सकते हो।' इसके कुछ ही देर बाद एक गोला उसके पास ही गिरा और लुढ़क कर ही रह गया। जनरल नोक्स ने वाशिंगटन की बाहुओं को पकड़कर कहा-मेरे प्यारे जनरल हम तुम्हें अभी इस तरह पृथक नहीं कर सकते। वाशिंगटन ने जवाब दिया-यह बुझा हुआ गोला है, मुझे इससे कुछ भी हानि नहीं पहुँची। वाशिंगटन वहाँ से जब ही हटा, जब खाइयाँ कब्ज़े में आ गईं।

इस तरह नए नाके, जो दुश्मनों से छीने गए, उनपर भी तोपें चढ़ा दी गई। ग्लासेस्टर और यॉर्क-टाउन के बीच के मोर्चे अमरीकनों के हाथ में चले जाने से कार्नवालिस की तो जान ही निकल गई। उसने सर क्लिटन को लिखा-'मेरी स्थिति अब बहुत ही नाज़ुक हो गई है। अब उनके पुराने बारूद खाने पर हम एक भी गोला छोड़ने का साहस नहीं कर सकते और मेरा विश्वास है कि उनके नए मोर्चों से कल गोला-बारी शुरू हो जायगी—इस स्थान की स्थिति इतनी भय-प्रद हो गई है कि मैं इस बात की सम्मति नहीं दे सकता कि जंगी-बेड़ा और सेना हमारी रक्षा के लिये इतना बड़ा ख़तरा उठावे।' अगर ब्रिटिश जंगी-बेड़ा ५ तारीख़ तक आ गया होता, तो संभव है कि लार्ड कार्नवालिस की रक्षा की जा सकती थी, परंतु अब तक वह न्यूयार्क के बंदरगाह में ही पड़ा था। अँगरेज़ों की इस सुस्ती से तो लड़ाई का रुख़ ही बदल गया।

इस समय कार्नवालिस की व्यवस्था में बड़ी गड़बड़ी पैदा हो गई थी और किसी भी ओर से आशा की एक भी किरण दृष्टिगोचर नहीं होती थी। इधर अमरीकनों के नए मोर्चे गोला-बारी शुरू कराना ही चाहते थे। अंत में साहस कर राष्ट्रवदियों के सबसे आगे के दो मोर्चों पर धावा मारकर तोपों को बेकाम कर देने की आज्ञा दे दी गई, पर इसमें वे सफल नहीं हुए, कई अंगरेज सैनिक मारे गए और उन्हें पीछे हटना पड़ा।

कार्नवालिस में अब अमरीकनों पर आक्रमण करने की शक्ति नहीं थी। उसकी लड़ाई की सभी सामग्री निबट चुकी थी। अतः अधिक दिन तक वह अब ठहर नहीं सकता था। परंतु अंगरेज़ों को अपनी प्रजा के हाथों आत्म-समर्पण करना उनकी शान के खिलाफ़ था। इसलिये उसने एक बार पुनः भाग निकलने की योजना की परीक्षा करने का निश्चय किया। उसका विचार था कि वह घायलों और रसद को वहीं छोड़ दे, और रात में ही नदी पार करके ग्लासेस्टर पॉईंट पर पहुँचकर अमरीकन सैनिकों पर टूट पड़े। वहाँ जो घोड़े हाथ लगें, उनपर अपने सैनिकों को चढ़ाकर अपने देशों में तेज़ी से आगे बढ़ और दोनों माहन नदियों के मुहाने के समीप आने पर यकायक उत्तर की ओर घूम जांय और फिर मेरीलैंड, पेनसिलवेनियाँ और जर्सी प्रदेशों में होकर धावे पर धावा मारते हुए न्यूयार्क में सर हेनरी क्लिंटन से जा मिले।

क्या यह सब संभव था ? अंगरेज़ भली प्रकार जानते थे कि ऐसी योजना केवल विचारों तक ही परिमित रह सकती है और उस समय जो वास्तविक स्थिति थी, उसको देखते हुए इसका कार्यरूप में सफल होना असंभव था। परंतु कार्नवालिस को अमरीकनों के सामने आत्म-समर्पण करने के विचार से ही घृणा होती थी। इसलिये वह असंभव को भी संभव करने की चेष्टा में लग गया था। रात-ही-रात को सोलह बड़ी नावें तैयार की गईं और सेना का एक भाग

आधी रात तक ग्लासेस्टर की ओर वाले नदी के भाग में पहुँच गया, परंतु अंगरेजों के दुर्भाग्य से राष्ट्रवादियों को अनजाने ही एक ईश्वरीय सहायता मिल गई। अभी सेना का दूसरा भाग नावों में जा ही रहा था कि अकस्मात् तूफ़ान उठा और इंद्रदेव अपनी पूरी शक्ति से नावों को डुबा देने के लिये वर्षा करने लगे। नावें इधर-उधर तितर-बितर हो गईं और नदी के नीचे के भाग की ओर बहुत दूर निकल गईं। बड़ी कठिनाई और परिश्रम के बाद फिर नावें इकट्ठी की गईं। परंतु अब प्रभात हो चुका था। इसलिये अब सेना के दूसरे भाग को ले जाना संभव नहीं था। सेना का वह भाग–जो ग्लासेस्टर के पास उतर चुका था, उसे फिर वापिस लाने की चेष्टा की गई। परंतु जब यह नावें बीच में ही थीं, तभी अमरीकन तोपों के मुँह खुल गए और उनपर गोले बरसने लगे।

इस तरह कार्नवालिस की अंतिम आशा भी निराशा में बदल गई। अमरीकन तोपों के गोलों से उसकी मोर्चेबंदी छिन्न-भिन्न हो गई। दूसरे मरने और बीमार होने से सैनिकों की संख्या बहुत कम रह गई थी और बचे हुए भी दिन-रात काम करने से बिलकुल अधमरे हो गए थे। इस स्थिति में उसके पास एक ही मार्ग था कि वह वाशिंगटन के हाथ में आत्म-समर्पण कर दे। अंत में उसने वाशिंगटन को सूचना दी कि दोनों तरफ़ से दो-दो अफ़सर मिलकर यार्क और ग्लासेस्टर के समर्पण की शर्तें निश्चय कर लें और इसे तय करने के लिये

चौबीस घंटे युद्ध स्थगित कर दिया जाय। परंतु वाशिंगटन कार्नवालिस को ज़रा भी समय नहीं देना चाहता था। क्योंकि उसे भय था कि न्यूयार्क से कहीं उसकी सहायता न आ पहुँचे। अंत में दो घंटे का समय दिया गया। वाशिंगटन को कार्नवालिस की शर्तें स्वीकार न थीं, इसलिये उसने अपनी नई शर्तें लिख भेजीं, जो कार्नवालिस को स्वीकार करनी पड़ीं। उसी दिन ग्लासेस्टर और यार्क नगर अमरीकनों को सौंप दिया गया और सब अँगरेज़ी जहाज फ्राँसीसी जंगी बेड़े के कब्ज़े में आ गए। यार्कटाउन और ग्लासेस्टर की सेनाएँ युद्ध क़ैदी की तरह अमरीकन सेनाओं के हाथ में आ गईं और जहाज़ों के सभी कर्मचारियों ने फ्राँसीसी ऐडमिरल डी० ग्रेसे के हाथ में आत्म-समर्पण कर दिया।

अंगरेज सैनिकों के साथ बड़ी सभ्यता और सहानुभूति का व्यवहार किया गया। स्वयं कार्नवालिस फ्राँसीसी और राष्ट्रवादी अफ़सरों की नम्रता और उदारता पर मुग्ध हो गया। उसके एक पत्र में लिखाः—

"The treatment, in general, that we have received from the enemy since our surrendor has been perfectly good and proper; but the kindness and attention that has been shown to us by the French officers in particular, their delicate sensibility of our situation, their generous and pressing offer of money, both public and private, to any amount, has really

gone beyond what I can possibly describe, and will, I hope, make an impression in the breast of every officer, whenever the fortune of war should put any of them into our power."

इधर जिस दिन कार्नवालिस आत्म-समर्पण करने के लिये विवश हुआ था, उसी दिन सर हेनरी क्लिंटन पच्चीस तोपें, २५ बड़े जंगी छोटे जहाज़ और सात हज़ार सैनिक लेकर चला। २२ अक्टूबर १७८१ को वह वर्जीनियाँ की अंतरीप में पहुँचा, जहाँ उसे सब समाचार मिले। कई दिन वहाँ पड़े रहने के बाद वह न्यूयार्क लौट गया।

वाशिंगटन की आज्ञा से इस विजय के लिये बड़ी गंभीरता के साथ हर तंबू में ईश्वर को धन्यवाद दिया गया। चारों तरफ़ ख़ुशी छा रही थी और वाशिंगटन, कौंट-डी रोचैंबो और डी-ग्रेसे की जय के नारे वायु में गूंज रहे थे। इधर जब इस पराजय के समाचार लंदन में पहुँचे, तब तहलका मच गया। लार्ड जार्ज ने यह समाचार महामंत्री लार्ड नार्थ को सुनाया। लार्ड जार्ज ने लिखा है-"यह समाचार उसने इसी तरह सुना, जैसे वह अपनी छाती पर गोले का स्वागत करता हो, उसने अपनी दोनों भुजाएँ फैलाकर उन्मत्तता से कहा-हे ईश्वर ! अब सब कुछ नष्ट हो गया।"

(१३)

संहार का अंत

अमरीका में अब अंगरेजों की शक्ति टूट गई थी और राष्ट्रवादी बहुत शक्तिशाली हो गए थे। चारों ओर विश्वास किया जाता था कि अब देश से युद्ध के बादल विदा हुए और शीघ्र ही अब पार्लियामेंट को शांति का संदेश भेजने को विवश होना पड़ेगा। यद्यपि वाशिंगटन को भी यही विश्वास था, फिर भी उसे भय था कि कहीं कांग्रेस विजय की आशा में अपना काम ढीला न कर दे। उसने रियासतों और कांग्रेस को बार-बार फौजों की शक्ति बढ़ाने और उसे अधिक संगठित करने के लिये लिखा। उसे अंगरेजों की बातों में अधिक विश्वास नहीं था और अमरीकन के संबंध में पार्लियामेंट में जो भाषण हो रहे थे, उनमें उसे उन भावों की कमी दिखाई पड़ती थी, जो शांति के लिये आवश्यक हैं। उसने कहा अंगरेज़ जाति और पार्लियामेंट वास्तव में अमरीका से शांति स्थापित करना चाहते भी हो, तो भी निस्संदेह यह हमारी बुद्धिमानी हो कि हम उनसे बड़ी सावधानी तथा परीक्षा के बाद मिलें और निस्संदेह ही उस समय भी हमें अपने अस्त्रों को अपने हाथ में पूरी शक्ति से पकड़े रखना चाहिए। अपनी चेष्टाओं में तनिक भी सुस्ती करने

के स्थान में हमें दूनी शक्ति से आगे बढ़ना चाहिए, ताकि हम जब तक की हमारी सब आकांक्षाओं की पूर्ति न हो जाय तब तक प्रत्येक अवसर को प्राप्त करने के लिये उन्हें पूर्ण उपभोग कर सकें। समझौते की बातचीत होने के समय में भी युद्ध के लिये तैयारी करते रहने से कभी किसी राष्ट्र को संधि में कोई हानि नहीं होती।

मई १७८२ में सर हेनरी क्लिंटन इंगलैंड लौट गया और उसकी जगह सरगुई कार्लटन न्यूयार्क में आ गया। सरगुई ने वाशिंगटन को लिखा कि उसे जलायानाध्यक्ष डिग्बी सहित समझौते की बातचीत करने का अधिकार दिया गया है। उसने ४ मार्चवाले सम्राट् के भाषण तथा पार्लियामेंट का एक मसविदा—जिसमें सम्राट् को अमरीकन रियासतों से समझौता करने का एक अधिकार दिया जाने वाला था, भेजा। परंतु अभी तक वह मसविदा पार्लियामेंट में पास नहीं हुआ था, इसलिये इसके आधार पर कोई समझौता नहीं हो सकता था।

संधि अवश्यंभावी समझकर रियासतों ने अपने-अपने हिस्से का रुपया भेजने में ढील कर दी थी। इससे सेनाओं की आवश्यकताओं को पूरी करने में कठिनाई पैदा हो रही थी। कभी-कभी तो उनके लिये खाद्य पदार्थों के भी लाले पड़ जाते थे। इससे सैनिकों और अफ़सरों—सभी में असंतोष की आग धधक उठी थी। उन्हें यह भी आशा नहीं रही थी

कि उन्हें आधा भी वेतन मिल सकेगा । उन्हें यह विश्वास भी होता जाता था कि लड़ाई के समाप्त होते ही बिना उनकी माँग पर ध्यान दिए ही उनमें—से बहुतों को सेना में-से पृथक कर दिया जायगा और वे इस तरह अपनी अधिकाँश शक्ति देश के लिये सेना में व्यय करने के बाद पैसे-पैसे को मोहताज़ हो जायँगे, क्योंकि कितने ही वर्षों तक सैनिक जीवन व्यतीत करने के कारण शांति के दिनों में अन्य व्यवसाय करने की इनमें योग्यता हीन रह गई थी।

वे जब सेना में प्रवेश हुए थे, तब प्रजा-तंत्र के स्थापित होते ही स्वर्ग-राज्य होने के स्वप्न देखते थे। क्रांति के इन वर्षों में नवीन स्थापित प्रजा-तंत्र केवल विनष्टात्मक (Distruction) कार्य में व्यस्त था, संगठनात्मक (Construction) कार्य करने का तो उसे मौक़ा ही नहीं मिला था। इसलिये कुछ मनुष्य-जो देश की अशांति से ऊब गए थे, विश्वास करने लगे थे कि प्रजा-तंत्र से देश का लाभ नहीं होगा। एक अमरीकन अफ़सर कर्नल ल्यूस निकोला ने वाशिंगटन को एक पत्र भी लिखा-जिसमें सेना और सर्वसाधारण की वर्तमान दुर्दशा का कारण उनकी प्रजा-तंत्रवादी सरकार की प्रजांतत्र-वादी प्रणाली थी। उसने यह भी लिखा कि प्रजा-तंत्रवादी सरकार से उनका देश समृद्धिशाली नहीं हो सकता। इसलिये उन्हें इंगलैंड की तरह मिश्रित सरकार स्थापित करनी चाहिए। वाशिंगटन निकोला के पत्र से

समझ गया कि वह सेना को शासन का आधार बना कर उसके माथे पर मुकुट पहिनाना चाहता है। यह लोभ ऐसा था, जिसे बहुत ही कम लोग संवरण कर सकेंगे, परंतु वाशिंगटन ने इसका उत्तर देते हुए निकोला को लिखा—"महाशय! विश्वास रखिए कि लड़ाई में मुझे किसी बात से इतना दुःख नहीं हुआ, जितना कि आपके इस पत्र के समाचार से-जो आपने भाव प्रदर्शित किए हैं कि सेना में फैले हुए हैं। मैं इन भावों को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखता हूँ और इनको बड़ी कठोरता से शमन करूंगा......मुझे यह समझ में नहीं आता कि मेरे किस आचरण से आपको ऐसा पत्र लिखने का साहस हुआ, जिससे मेरे देश पर भयंकर आपत्ति आ सकती है। इन शब्दों से प्रगट होता है कि वाशिंगटन को प्रजातंत्रवाद-जिसके आधार पर उसके देश को आगे संसार की सबसे महान् शक्ति होना था-प्रेम था।

इंगलैंड में शांति का हाथ बढ़ाने की चर्चा हो रही थी। परंतु उसकी पहली चालबाज़ी और धोखेबाज़ी की नीति के कारण वाशिंगटन-जैसा आदमी भी, उनकी हर बात को संदेहात्मक दृष्टि से देखता था। उसने इस बात को भी स्वीकार किया कि अंगरेज़ों की किसी भी बात में उसे विश्वास नहीं रहा है। उसने लिखा है-" from the former infatuation, duplicaly, and preverse system of British policy, I confess I am induced to daubt everything—to Supeet every

thing." अंगरेज़ अब भी फ्राँसीसी और अमरीकनों में मतभेद पैदा करना चाहते थे। इसलिये अंगरेज़-सेनाध्यक्षों को आज्ञा मिली कि अमरीकन सेनाओं पर वे आक्रमण करना बंद कर दें। पर वे वेस्ट-इंडीज़ में फ्राँसीसियों के विरुद्ध जंगी बेड़ा भेज सकते हैं। अंगरेज़ों की इस नीति का सामना करने के लिये वाशिंगटन ने कौंट डी० रोचाँबो को लिखा कि 'वह अपने सैनिक लेकर हडसन आ जावे और वहाँ दोनों सेनाएँ संयुक्त कर दी जाँय।'

वाशिंगटन सेना के असंतोष को दूर करने की भी चेष्टा कर रहा था। वह इस बात के विरुद्ध था कि अभी सेना में कमी की जाय; क्योंकि वह समझता था कि जिन मनुष्यों ने अपने जीवन का सबसे अधिक अमूल्य भाग देश की स्वतंत्रता की वेदी पर चढ़ा दिया है, वे यदि विना किसी उचित व्यवस्था के—विना इतने पैसे के कि वे अपने घर भी पहुँच सकें--अलग कर दिए जायँगे, तो सेना के बहुत-से भाग में विद्रोह पैदा हो जायगा। राष्ट्रीय ख़ज़ाना खाली था, विदेशों में कर्ज़ मिलना कठिन हो गया था और रियासतें अधिक टैक्स देने में ढीलढाल कर रही थीं। बहुत-से अफ़सरों को जो लड़ाई के अंत तक लड़ते रहे हैं, वे आधे वेतन पर शांति के समय में संतुष्ट रह सकते थे, परंतु यह आधा वेतन भी कहाँ से आवे?

सैनिकों ने मिलकर एक प्रार्थना-पत्र कांग्रेस में भेजा,

उसपर वहाँ काफ़ी बहस भी हुई। पर कोई भी संतोषप्रद निश्चय न हो सका। इसपर एक गुम नाम का पर्चा सैनिकों में किसी 'एक सैनिक के हितू' के हस्ताक्षर से बाँटा गया, जिसमें लिखा था कि सात वर्ष के लंबे युद्ध के बाद हम जिस ध्येय के लिये निकले थे, अंत में उस ध्येय हम तो प्रायः पहुँच गए हैं। मित्रो! निस्संदेह तुम्हारा बलिदान और सहन शक्ति बड़ी प्रबल थी, उसने संयुक्त-राज्य अमरीका को एक भयंकर रक्तपातमय और संदेहात्मक युद्ध में-से ले जाकर स्वतंत्रता की गद्दी पर बैठा दिया है, पर अब शांति का फल किसके लिये है? क्या एक देश के लिये, जो तकलीफ़ों को हटावे, तुम्हारी योग्यता को सराहना करे और तुम्हारी सेवा के लिये प्रतिफल देने को तैयार है? या ऐसे एक देश के लिये, जो कृतज्ञता के अश्रुओं और प्रशंसा की हँसी के साथ तुम्हें तुम्हारे व्यक्तिगत-जीवन व्यतीत करने के लिये बिदा करता हो और यह आकांक्षा रखता हो कि उसने जो स्वतंत्रता तुम्हारी बहादुरी से प्राप्त की है और उस वैभव को, जिसकी रक्षा तुम्हारे घावों द्वारा हुई है, तुम्हारे साथ बाँटकर उपभोग करने की आकांक्षा करता है? क्या यह सही है या यह सही है कि वह यह देश है, जो तुम्हारे अधिकारों को कुचलता है, तुम्हारे चीखों को अनसुनो करता है और तुम्हारी आपत्तियों में तुम्हारा अपमान करता है?.........यह अमरीकन सैनिकों के हितू कोई भी रहे हों, परंतु इस प्रकार के प्रचार का असर सेना में, जिसमें असंतोष

पहले ही जन्म ले चुका था, बहुत ही बुरा पड़ा और कितने ही सैनिक उद्दंड होते हुए दिखलाई दिए। यहाँ तक कि वाशिंगटन को भी बुरा-भला कहा जाने लगा।

वाशिंगटन ने इस अव्यवस्था को दूर करने की पूरी चेष्टा की। वह जानता था कि सैनिकों की बहुत-सी शिकायतें सच्ची हैं। इसलिये वह सहानुभूति से काम लेना चाहता था। उसने सब सैनिकों और अफ़सरों की एक महती सभा की और उसमें उनके साथ सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए कहा-'अब तक के मेरे आचरण से यदि आपको यह विश्वास नहीं हुआ है कि मैं सेना का एक अत्यंत शुभचिंतक मित्र हूँ, तो अब इस समय मेरे कहने-मात्र से कोई लाभ न होगा।' मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप अपने देश के भाग्य में भरोसा रखिए और कांग्रेस के किसी कार्य में संदेह मत करिए। आपको सेना से पृथक करने से पहले आपकी माँगों पर पूरा ध्यान दिया जायगा......साथ ही मैं देश के नाम पर आपसे अपील भी करता हूँ कि यदि आप अपनी प्रतिष्ठा और मान का मूल्य करते हैं, यदि आप मनुष्यत्व के अधिकारों को इज़्ज़त की दृष्टि से देखते हैं, यदि आपको अमरीका के सैनिक और राष्ट्रीय आचरण का ध्यान है, तो अपको उस मनुष्य के प्रति घृणा और भय प्रगट करना चाहिए, जो किसी भी बहाने की आड़ में हमारे देश की स्वाधीनता को उलटना और जो असंतोष और अविश्वास उत्पन्न करके हमारे उठते हुए

राष्ट्र को रक्तपात में विलीन कर देना चाहता है। इस तरह के विचार और आचरण से आप उस मार्ग को ग्रहण करेंगे, जिधर आपकी आकांक्षाएँ शीघ्र ही पूरी हो जायँगी। आप इस तरह हमारे दुश्मनों की, जिन्होंने अब खुले मैदान में अस्त्रों की लेन-देन से भागकर इस गुप्त मार्ग की शरण ली है, इस कमीनी हरकतों को भी पराजित कर देंगे। इस तरह आप कष्टों के दबाव से ऊँचे उठकर अपनी अपूर्व देश-भक्ति और सहन-शक्ति का परिचय देंगे और आपकी आनेवाली संतान मानव जाति के लिये उच्च उदाहरण का गुण गाते हुए कहेगी-'यदि यह दिन न हुआ होता, तो संसार पूर्णता की उस अंतिम श्रेणी को न पहुँच सकता, प्रकृति ने जिसे प्राप्त करने के लिये उसे योग्य बनाया है।' वाशिंगटन के इस भाषण से सैनिकों पर बड़ा प्रभाव पड़ा और सभा से उसके जाते ही, उन्होंने एक प्रस्ताव पास करके निश्चय किया कि उन्हें देश और कांग्रेस में पूरा विश्वास है और वे चाहें जितनी मुसीबत आने पर भी कोई ऐसा काम न करेंगे, जिससे उनके आठ वर्ष के महान त्याग पर बट्टा लगे। फिर वाशिंगटन ने भी इन सैनिकों की तकलीफ़ दूर कराने में कोई कोशिश बाकी नहीं छोड़ी।

अंत में इंगलैंड और अमरीका में २७ जनवरी, १७८३ को संधि हो गई। संयुक्तराज्य को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो गई और सर गुई कार्कटन न्यूयार्क खाली करने की तैयारी करने लगा। योरप से जहाज़ मँगाकर उसने अपने सैनिकों

को उसमें लादना शुरू किया और उनमें सात हज़ार सैनिक भर कर नोवा स्कॉटिया भेज दिए गए। इसमें बहुत-से देश-द्रोही ब्रिटिश-भक्त भगोड़े भी थे, जिनकी आँखें ज़मीन से बातें कर रही थीं। इनमें-से एक ने कहा-'उस देश को जाना है, जहाँ एक वर्ष में नौ मास भयंकर जाड़े के दिन होते हैं और तीन मास मामूली सर्दी।'

ब्रिटिश सेनाओं के साथ ही हमारे देश-द्रोहियों ने भी अमरीका को छोड़ दिया। बहुत-से कनाडा में चले गए और बहुत-से दक्षिण अफ्रीका में जा बसे। जहाँ वे अपने प्यारे यूनीयन जैक के नीचे ग़रीबी और दुर्भाग्य का जीवन व्यतीत करने लगे। जिन लोगों ने ब्रिटिश सरकार को सहायता देने के लिये अपने ही देश को नष्ट करने में कोई कसर न रक्खी थी, उनकी इस समय में अंगरेज सरकार ने कुछ भी सहायता न की। इन साठ हजार लोगों को ब्रिटिश सरकार ने कठिनाई से चार करोड़ रुपया दिया, जिससे वे दक्षिण अफ्रीका, कनाडा, नोवास्कॉटिया आदि में रहने को घर बना सके। डॉक्टर फ्रेंकलिन ने लिखाहै-हमें नतो उनके जाने का शोक ही है और न हम उनके वापस आने के इच्छुक है और न वे जिस स्थिति में हैं,उनसे ईर्षा ही''लेकिन करते हैं पीछे अमरीका ने स्वतंत्रता के सच्चे भावों से प्रेरित होकर, उनके लिये अपने देश का दरवाज़ा खोल दिया और बहुतों को तो उनकी जायदाद तक वापिस कर दी गई।

नवंबर को ब्रिटिश सेनाओं ने न्यूयार्क खाली कर दिया। यह ख़बर उड़ाई गई थी कि अंगरेज सेना के जाते ही न्यूयार्क लुट जायगा। इसलिये बहुत-सी अफ़रीकन सेना उस समय वहाँ मौजूद थी और कोई ऐसी घटना भी नहीं हुई। इधर बहुत-सी अमरीकन सेना भी तोड़देने की तैयारियाँ होने लगीं। वाशिंगटन का उद्देश्य भी पूरा हो गया था। वह भी अब अपने सर से सेना का भार उतार कर बाकी जीवन एकांतवास में व्यतीत करना चाहता था। उसने कांग्रेस को लिखाः—

"The great object for which I had the honour to hold oppointment in the service of my Country being accomplished, I am now preparing to return to that domestic retirement, which, it is well known, I left with the greatest reluctance; a retirement for which I have never ceased to Sigh, through a long and painful absence, and in which (remote from the noise and trouble of the world) I meditate to pass the remainder of life in a state of undisturbed repose,

दिसंबर १७८३ में वाशिंगटन ने अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया। उसके इस्तीफ़े पर विचार करने के लिये कांग्रेस का एक ख़ासअधिवेशन हुआ। गैलरियाँ और हाल स्त्रियों, अफ़सरों और दर्शकों से भर गया। वाशिंगटन ने अपना इस्तीफ़ा पेश करते हुए कहाः—

"I consider it an indispensable duty to close this last solemn act of my official life by commending the interests of our dearest country to the protection of Almighly God; and those who have the Suprintendence of them, to his truly keeping." *

यह दृश्य बड़ा ही करुणाजनक था। एक लेखक-जो उस समय प्रस्तुत था, लिखता है-बहुत ही कम घटनाएँ इतनी अधिक सुंदर आँखों से इतनी अश्रु की लड़ाइयाँ बहाने में समर्थ हुई होंगी।" सभापति ने देश की ओर से वाशिंगटन के लिये कृतज्ञता प्रगट करते हुए कहा—"आप युद्ध की नाट्यशाला से देश के नागरिकों की शुभ कामनाओं के साथ पृथक हो रहे हैं। परंतु आपके गुणों का प्रकाश आपके सैनिक अधिकार के साथ ही समाप्त नहीं हो जायगा, बल्कि युगों तक चमकता रहेगा।"

जार्ज वाशिंगटन ने इस तरह कांग्रेस से छुट्टी ली और अपने प्रदेश माउँट वेरनोन को यह लेकर गए कि-वे पोटमक नदी के तट पर अपने ही अंगूर और अंजीरों के पेड़ के नीचे छावनी की झंझटों और सार्वजनिक जीवन की दौड़-धूप से परे रह सकें।

---

* Life of George Weshington page 1393.

(१४)

प्रजातंत्र की ओर

अमरीका के राष्ट्रवादी एक महान शक्ति को पराजित करके अपने जन्म-सिद्ध अधिकारों की रक्षा करने और अपने देश में प्रजातंत्र-राज्य स्थापित करने में सफल तो हो गए, परंतु अभी उन्हें और अनेक कठिनाइयों का सामना करना था। संयुक्त-राज्य तेरह छोटी-छोटी रियासतों के सम्मिलन से बना था। इन रियासतों में पारस्परिक द्वेष, ईर्षा और स्वार्थ के भाव इतने भरे हुए थे कि इन सबको एक शासन-प्रणाली और एक हित में संगठन करना साधारण कार्य नहीं था। इंगलैंड की नीति से उत्पन्न घृणा और भय ने सब रियासतों को क्रांति के समय में एक तार में अवश्य पिरो दिया था, परंतु इस कारण के हटते ही रियासतों की घनिष्टता में कमजोरी दिखलाई पड़ने लगी। प्रत्येक रियासत को समस्त संयुक्त राज्य के स्थान में अपने हितों और भावों का अधिक ध्यान था।

जान के एक पत्र से-जो उस समय वैदेशिक मंत्री था, हमें ज्ञात होता है कि राष्ट्रीय नेताओं को यह समस्या कितन? परेशान कर रही थी। वह लिखता है-"हमारी स्थिति

हमें एक ऐसी भयंकर समस्या की ओर ले जाती हुई दिखलाई देती हैं, जो मेरे विचारों से परे है। मैं युद्ध से भी अधिक विचलित और बेचैन हूँ। उस समय हमारे सामने एक निश्चित ध्येय था और यद्यपि उसे प्राप्ति के साधन और समय पूर्ण रहस्यमय था, तब भी मैं पूरी तरह विश्वास रखता था कि अंत में हमारी ही विजय होगी, क्योंकि मैं जनता था कि न्याय हमारे साथ है। अब स्थिति बिलकुल ही बदल गई है। हम ग़लतियाँ कर रहे हैं और ग़लत मार्ग की ओर जा रहे हैं। इसलिये मैं आपत्तियों और बुराइयों के आगमन से सशंकित रहता हूँ। मुझे सबसे अधिक भय यह है कि अच्छे लोग यानी वे मनुष्य जो व्यवस्था को माननेवाले और परिश्रमी हैं, जो कि अपनी जगह पर संतुष्ट रहनेवाले हैं, वे संपति की अरक्षित स्थिति, सार्वजनिक विश्वास का अधःपतन और कुछ लोगों को स्वार्थ-साधन की आकाँक्षा से यह विश्वास न कर बैठें कि स्वतंत्रता का आकर्षण केवल भ्रमात्मक और निराधार है।"

युद्ध बंद होने के बाद भी रियासतों में व्यवस्था के कोई चिन्ह नहीं दिखलाई दिए। इसके विपरीत स्थिति बिगड़ती ही दिखलाई देती थी। दक्षिणी रियासतों में झगड़े-फ़िसाद के रोज़ समाचर आते थे। कांग्रेस केंद्रीय सरकार की शक्ति और संगठन के लिये रुपया माँगती थी, परंतु रियासतें उस ओर बहुत कम ध्यान देती थीं। वास्तव में पूछा जाय, तो कांग्रेस

में वह अधिकार और शक्ति ही नहीं थी, जो शांति और व्यवस्था के लिये एक सरकार में होनी चाहिए।

जेम्स मेडीसन नामक एक देशभक्त अमरीकन ने उस समय लिखा है-'यह कितना खेद-जनक है कि हम कितने थोड़े समय में अपने एटलॉटिक महासागर के उस पार वाले दुश्मनों की भविष्यवाणी-'इन्हें उनके उपर छोड़ दो और इनकी सरकार तुरंत ही विलीन हो जायगी-को पूरा करने के लिये क़दम बढ़ाए हुए आगे बढ़े चले जा रहे हैं। क्या बुद्धिमान और भले आदमी इस बुराई के प्रमाद को रोकने की चेष्टा न करेंगे? या वे इस देश को स्वार्थी षड़यंत्रकारी और अंधे लोगों को दुर्भाग्य और घृणा की ओर खींच ले जाते देखकर भी अनजान बने बैठे रहेंगे? इन झगड़े-फ़िसादों के अतिरिक्त हमारी सरकार की निर्बलता का और क्या प्रमाण हो सकता है? यदि उनमें इन सबको रोकने की शक्ति नहीं है, तो मनुष्य के पास उसके प्राण-स्वतंत्रता और संपत्ति की रक्षा का क्या भरोसा है?'"

"तेरहों राज्य आपसी खींचतान और विरोध के कारण नाशकारी मार्ग की ओर चले जा रहे हैं। जब कि एक उदार और शक्ति-शाली संगठन-जिसमें उनके-से प्रत्येक के अधिकार स्वरक्षित हों, उन्हें उस समृद्धि और मान की ओर अग्रसर कर सकता है, जिसकी आशा हम बहुत दिनों से लगाए बैठे थे।"

अमरीकन राष्ट्रवादियों का कार्य बड़ा जटिल था, परंतु वे घबड़ाए नहीं और निश्चय किया कि फ़िलाडेफ़िया में एक बड़ी महासभा हो-जिसमें सभी राज्यों के प्रतिनिधि आमंत्रित किए जाँय, जहाँ भावी शासन व्यवस्था के मूल सिद्धांतों पर विचार हो। यह बृहद् महासभा २५ मई, १७८१ को प्रारंभ हुई और चार मास तक चार से लगा कर सात घंटे प्रति दिन विचार करती रही। इस परिषद् का परिणाम यह हुआ कि संयुक्त-राज्य अमरीका के लिये एक शासन-प्रणाली निश्चित हो गई-जो आज तक समय-समय पर हुए सूक्ष्म सुधारों के अतिरिक्त वैसी ही चली जाती है। अंतिम दिन जिस दिन प्रतिनिधि नवीन निश्चित संगठन के मसविदे पर दस्तख़त कर रहे थे,तब डाक्टर फ्रेंकलिन ने पास बैठे हुए अपनेमित्रों से सभापति के पीछे अंकित सूर्य की ओर संकेत करते हुए कहा- "अधिवेशन के बीच में जब कि परिणाम के संबंध में मेरे हृदय में आशाओं और निराशाओं का चढ़ाव-उतराव होता था, तब मैं सभापति के पीछेवाले सूर्य की तरफ़ देखता था और यह कहने में असमर्थ था कि वह चढ़ाव पर है या उतराव पर; परंतु अंत में मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि वह ऊगता हुआ सूर्य है, अस्त होता हुआ नहीं।"

इस तरह संसार की भावी सर्वोपरि शक्ति का जन्म हुआ। जो बात उन्हें कुछ समय पहले अत्यंत कठिन मालूम होती थीं' वही सहज में ही अमरीकनों ने प्राप्त कर ली।

अनेक बार अँगरेज राजनीतिज्ञों ने कहा था कि-यह भिन्न हित, भिन्न विचार, भिन्न देश और भिन्न आकांक्षावाले मनुष्य-जो भिन्न-भिन्न रियासतों में बटे हुए हैं-वे भला किस तरह एक तार में पिरोए जा सकते हैं ? इनके पारस्परिक मत-भेद से इनकी रक्षा के लिये एक तीसरी शक्ति की सदैव आवश्यकता रहेगी और यदि वह तीसरी शक्ति इनके बीच में-से उठा ली जायगी, तो वे एक-दूसरों की गर्दनों पर टूट पड़ेंगे। अँगरेज़ ही नहीं बहुत-से अमरीकन भी बाह्य स्थिति को इसी विचार-कोण से देखते थे और संधि के बाद इन तीन-चार वर्षों में तो अनेक प्रजातंत्रवादी भी सोचने लगे थे कि क्या अंगरेजों की यह भविष्यवाणी सत्य होगी ? क्या वास्तव में प्रजा-तंत्र-वाद आदर्श स्वप्न-मात्र है ? क्या एक देश में शांति और व्यवस्था स्थापित करने के लिये एक-तंत्र-वाद और स्वेच्छा-चार की ही आवश्यकता है, जो सदैव नागरिकों की गर्दन पर सवार रहे ? क्या वास्तव में ईश्वर ने मनुष्य की प्रकृति ही ऐसी बनाई है कि मौका पाते ही एक-दूसरे को नोचने-खसोटने लगे ? परंतु शीघ्र ही आपत्ति के बादल हट गए और प्रजा-तंत्र-वाद का चंद्रमा अपनी सुंदर शीतल किरणों से पीड़ितों के हृदय को शांत बनाने लगा।

महासभा के इस अधिवेशन में जो भाव पैदा हो गए थे, उन्होंने इस बात को पूरी तरह दिखला दिया कि वास्तव में

The Madisan Paprs, iii 1624